* तृतीय भाग *

लेखक—

पं० बिहारीलाल काव्यरत्न, वाणीभूषण

प्रकाशक—

श्यामलाल सत्यदेव वर्मा,

अध्यक्ष—वैदिक आर्य्य पुस्तकालय बरेली।

पं० द्वारकाप्रसाद तिवारी प्रिंटर व प्रोप्राइटर के प्रबन्ध से
भारत भूषण प्रेस लखनऊ में छपा।

तृतीयबार २००० | सन् १९२५ ई० | मूल्य ।।) प्रति

भूमिका

वक्तव्य विशेष को पुष्ट करने के लिये दृष्टान्त और कथायें बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती हैं। मनोरथ शिक्षाप्रद दृष्टान्त, कहानियों से यदि व्याख्यान को युक्त कर दिया जाय तो सूखा विषय भी हरा भरा हो जाता है। इसी उद्देश्य से हमने दृष्टान्त-सागर का यह तीसरा भाग सम्पादित कर श्यामलालजी वर्मा को दिया है इसमें अनेक दृष्टान्त तो वे हैं जो हम अपने व्याख्यानों में वर्षों से कहते आ रहे हैं और जिनको श्रोताओं ने अत्यन्त पसन्द किया है तथा अनेक उपदेशक भी उनको अपने व्याख्यानों में कहने लगे हैं। और बहुतेरे नूतन दृष्टान्त भी लिख दिये हैं। यद्यपि इस पुस्तक में सब कहानियाँ दृष्टान्त की तारीफ़ में नहीं आतीं परन्तु क्रम के कारण नाम दृष्टान्त-सागर ही रक्खा गया है, यह पुस्तक कैसी है; इसके विषय में हम कुछ नहीं लिख सकते और इस समालोचना का भार पाठकों पर ही छोड़ देते हैं। इसकी भाषा के गुण दोष का विवेचन विज्ञ समालोचक करेंगे।

लेखक

विषय-सूची

॥ ओ३म्

दृष्टान्त-सागर

तीसरा भाग

ईश्वरीय लीला का चमत्कार

पुराने समय में एक राजा बड़ा प्रभावशाली था उसे अपने सेना, बल, धन, शक्ति, और प्रभुत्व का ऐसा घमंड बढ़ा कि परमात्मा को भूल बैठा। उसने मद में चूर होकर यहाँ तक नास्तिकपन धारण किया कि ईश्वर के अस्तित्व तक से ईश्वर कहकर भ्रमाने लगा। निर्बल मूर्ख खुशामदी उसकी पूजा भी करने लगे चापलूस लोग उसकी गर्वाग्नि में "हाँ हुजूर" "बजा हुजूर" के मन्त्र पढ़ कर चापलूसी का घृत छिड़कने लगे। कवियों ने अपनी कविता के कौतुक दिखाकर राजा को सकल भुवनों का शासक, सूर्य्य, चन्द्र, वायु आदियों को राजा का वशवर्ती सेवक ठहरा दिया। प्रजा में नास्तिकता का अँधेरा फैलने लगा। राजा मद-मोह में अन्धा होगया यदि कोई ईश्वर भक्ति उसके राज्य मे करता भी तो उसे लोग चिढ़ाते और मूर्ख ढोंगी कहकर हँसी उड़ाते। राजा और उसके राज्य की यह दुर्दशा देखकर एक ईश्वरभक्त से न रुका गया और वह राजदरबार में पहुँचा, उसने राजा से कहा कि राजन्; आप भूल में हो जगत् के पालक परमेश्वर के अस्तित्व से

विमुख होकर आप क्यों मिथ्या जाल में स्वयं फँस दूसरों को फँसाना चाहते हो। यदि आप या आपके सभासदों में कुछ विद्या है तो मेरे साथ ईश्वर के होने न होने पर शास्त्रार्थ कराइये। इस पर राजा तैयार होगया दोनों ओर से युक्ति प्रयुक्ति का प्रवाह वहने लगा ; राजा के नास्तिक दल ने जितने भी प्रश्न किये। ईश्वर भक्त विद्वान ने सबके उत्तर देकर प्रश्न कर्त्ताओं को मौन कर दिया। तब राजा ने कहा कि अच्छा महाराज यह तो बताइये कि आप कहते हैं "ईश्वर सबको भोजन देता है" यदि यह बात है तो लीजिये, हम एक चिउँटी को एक डिब्बी में बन्द करते हैं। आप अपने ईश्वर से प्रार्थना करिये कि इसे भोजन दे। यदि इस डिबिया में ईश्वर ने भोजन दे दिया तो हम हारे। वरना आप हारे। मौखिक वाद विवाद छोड़िये कोई चमत्कार दिखाइये। इस पर ईश्वर का दृढ़ विश्वासी भक्त तैयार होगया। राजा ने एक चिउँटी डिबिया में बन्द कर दी। इधर विद्वान् ने अपने प्रभु से ध्यान लगाया। प्रार्थना में ऐसा लीन हुआ कि अपनी सुध बुध भूल गया। जब परीक्षा का दिन आया राज-सभा लगी परिणाम देखने के लिये सहस्रों नर नारी एकत्रित हुए। राजा ने अपने मुहर लगे सन्दूक में से डिबिया निकाली। डिबिया को खोलकर राजा देखता है तो चिउँटी आनन्द से चावल खा रही है। राजा का मुँह फीका पड़ गया। नास्तिक, चापलूस, खुशामदी राज-सभासद चकित रह गये। ईश्वर-भक्त विद्वान् हर्ष से फूला न समाया। चारों ओर से परमपिता परमात्मा की जय जयकार बोली जाने लगी सब कहने लगे कि यह देखो "ईश्वर की लीला का चमत्कार" ईश्वर भक्त विद्वान् ने कहा भाइयो हमारे प्रभु ने वेद में कहा है कि:—

"अहं दाशुषे विभजामि भोजनम्"

अर्थात्—"मैं ही भोजन देता हूँ" सो भाइयो ईश्वर ने भक्त की लाज रखली। पाठको! वास्तव में यह कोई बुद्धि से विरुद्ध मोजजा नहीं था। किन्तु यह थी कि राजा जब चिउँटी को बन्द कर रहा था तब डिबिया में राजा के मस्तक के तिलक पर लगे हुए चावल छूट कर गिर पड़े थे! यह प्रसंग ईश्वर कृपा से ही भक्त की लाज रखने को हुआ था। हमें ऐसे चमत्कारों की शर्त करनी या कुतर्क कर नास्तिकता को दृढ़ करने की आदत न डालना चाहिये। न अभिमान में मस्त हो ईश्वर को भूलना चाहिये। ईश्वर परमात्मा श्रद्धा और सादगी से प्राप्त होते हैं।

वीरों के लिये पुरुषार्थ ही परम भक्ति है

एक राजा एक दिन वन में शिकार की खोज में घूम रहा था, कि इतने में ही उसकी निगाह एक गढ़े में पड़ी। देखता क्या है—एक लोमड़ी अपने बच्चों समेत किलोल कर रही है। राजा यह देख कर विचारने लगा कि इस गढ़े में से ऊपर निकलना तो कठिन है इसलिये अवश्य है कि यह लोमड़ी गर्भवती ही इस गढ़े में गिरी होगी। नहीं तो भला बिना नर इसके बच्चे कहाँ से आते। फिर राजा इस सोच में पड़ा कि इसको भोजन कैसे मिलता होगा। क्योंकि कई दिन के बच्चे मालूम होते हैं! और आज ही लोमड़ी इन नन्हें बच्चों को लेकर गिरती तो बच्चों के चोट लगती। कई दिन से भूखी होती तो ऐसी मग्न न होती। इसे भोजन कैसे मिलता है? इसी चिन्ता के हिंडोले में राजा झूल रहा था कि केहरी की

गरज से सारा जङ्गल गूँज उठा। राजा चौंक कर सामने देखता है तो एक सिंह उछलता कूदता एक हिरन की लोथ को उछालता चला आ रहा है। राजा केहरी की क्रीड़ा को देखने के लिये घोड़ा समेत वृक्ष की आड़ में खड़ा होगया। केहरी ने गढ़े के समीप आकर जो हिरन को उछाला, कि झट हिरन गढ़े में आ गिरा ! मगर सिंह विना परवाह किये उछलता, कूदता चला गया। राजा ने वृक्षों की आड़ से निकल कर देखा तो गढ़े में लोमड़ी आनन्द से हिरन की लोथ को लिपट रही है। कई दिन का भोजन पाकर मग्न होरही है। राजा के मन में विचार पैदा हुआ कि अहा ईश्वर की लीला क्या ही निराली है। कीरो कुंजर लाचार बीमार सबका निर्वाह किसी न किसी विधि से करता है। मैं भी क्यों राज काज के झंझट सिर पर उठाऊँ? बस यहाँ पेड़ के नीचे आसन जमाऊँ जो इस लोमड़ी को पाल रहा है क्या मेरी सुध न लेगा। बस ऐसा विचार कर घोड़े को छोड़ दिया और घास पर आसन जमा ईश भजन में लौलीन होगया। "परन्तु भूखे भजन न होयं गुपाला। यह लेउ अपनी कण्ठी माला।" सायंकाल शरीर ने अपने में रहने का किराया माँगना प्रारम्भ किया। राजा ने बहुत देर तक भोजन के लिये इधर उधर आँखें फाड़ २ कर देखा कि अब कोई सोने के थाल में छत्तीस प्रकार के व्यंजन लिये हुए आता होगा। परन्तु रात बढ़ने लगी राजा का धैर्य्य घटने लगा। भूख से बेचैन निराश हो पड़े रहे। प्रातःकाल हुआ सूर्य भगवान ने लोक को प्रकाशित कर दिया। जङ्गल के जीव जन्तु अपने २ अहार को खोजने खाने लगे। राजा ने नहा धोकर फिर आसन जमाया। और हाथ से और मन से दिन के घड़ी पल गिनने प्रारंम्भ करे।

सारा दिन बीत गया राजा जंगल में चारों ओर आँखें फैला २ कर देखते रहे कि अब कहीं से एक लोटा दूध और कन्द मूल फल लिये महात्मा आते होंगे। परन्तु सायंकाल होगया सूर्य नारायण अस्ताचल को चल दिये वन में रात्रि का और राजा के हृदय में निराशा का अन्धकार छा गया। इसी भाँति ३ दिन बीते भूख के मारे राजा का चेहरा उतर गया और आखिर धैर्य का बाँध टूट गया। और लगा परमात्मा को उलाहना देने "हे मालिक क्या मैं लोमड़ी से भी गया बीता हूँ जो मेरी सुध बिसार दी यह कैसा अन्धेर है कि मैं राज पाट छोड़ कर तेरी लगन में बैठा सो मेरे संग ऐसी कठोरता।" राजा इस प्रकार मन ही मन ईश्वर को उपासना [उलाहना] दे ही रहा था कि एक साधु महात्मा सामने आ खड़े हुए। और कहा कि हे राजा भगवान् ने तेरे लिये यह संदेश दिया है कि—

दो०—अरे नृपति कहा बावरो कीन्हों विधि सब जोग।
कहा लोमड़ी बनत है सिंह बनन के योग॥

यह सुन राजा की आँख से अकर्मण्यता का पर्दा दूर हो गया। कर्म ज्योति की रेखा चमकने लगी राजा खड़ा हो गया और अपने नगर को चल दिया।

फल—मनुष्य को अपनी सामर्थ्यानुसार पुरुषार्थ करना चाहिये। अपने कर्त्तव्य को छोड़ केवल माला सटकाना, और दूसरों पर अपना भोजन भार डाल कोरी गप्पें मारना, ईश्वर को पसन्द नहीं। आज कल जो थोड़ी २ आयु के विद्या रहित मनुष्य गेरुआ कपड़े रंग ब्रह्म बने फिरते हैं और आप कर्त्तव्य से रहित होकर औरों को भी वर्णाश्रम के कर्त्तव्य से विमुख कर कोरा ज्ञान सिखाते फिरते हैं। यह ईश्वर को अच्छा नहीं

लगता ईश्वर ने ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ दोनों दी हैं। इस लिये ज्ञान पूर्वक कर्म करो। वेद भगवान कहते हैं—

"कुर्वन्नेवेहि कर्माणि जीजिविषेच्छतं समाः"

कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।

मृत्यु से मिलने को तय्यार रहो

किसी वन में एक योगी अपने शिष्यों समेत रहते थे। शिष्यों को पढ़ा देना और योगाभ्यास करना यही महात्मा का नित्य कार्य था। उदर पोषण के लिये कन्द मूल फल और नदियों का स्वच्छ जल पीकर ही सन्तुष्ट रहते थे। वलकल वस्त्र, तृण शैया, फूँस की झोपड़ी में विश्राम, इस प्रकार सन्तोष धैर्य और शान्ति की साक्षात् मूर्त्ति महराज योगिराज थे। परन्तु महाराज का एक शिष्य बड़ा चपल था। उसके हृदय में बार २ विविध विचारों की तरङ्गें उठती थीं। कभी उसका मन राजमहलों की सैर करता और कभी सुन्दर २ उद्यानों में चक्कर लगाता। कभी नृत्य गान में पहुँचता तो कभी सजे हुए बाजार और मेलों की गश्त करता। कभी ऊँची अट्टालिकाओं पर शरद ऋतु की चाँदनी में चन्द्रवदनी के साथ चैन उड़ाता। तो कभी स्वच्छ सरोवरों में कमलनयनी के संग जल विहार कर ग्रीष्म ऋतु का आनन्द लूटता, इन सांसारिक भोग विलासों की कल्पना में उसका मन रात्रि दिवस उलझा रहता और योग में न लगता था। आखिर मन की कल्पना को कार्य रूप में करने की ठानी, और गुरुजी से कहने लगा कि "महाराज आप तो सदा वन में पड़े रहते हैं कभी २ नगर की भी सैर करा कीजिये।" दसियों राजा

महाराजा आपके शिष्य बनेंगे सब में नाम होगा। राजमहलों की नगर की शोभा को हम शिष्य भी देख लेंगे। योगीराज यह सुन कर कहने लगे कि "भाई मुझे तो अवकाश नहीं है हाँ तू चाहे तो नगर में जा सकता है" चेला कहने लगा कि "महाराज आप को अवकाश क्यों नहीं यहाँ बैठे आप रात दिन योगाभ्यास ही तो करते रहते हैं दो चार दिन को चलिये घूम आवें हर वक्त का भजन किस काम का" यह सुन महात्मा हँस दिये और चेले से कहा कि "भाई मैं तो जाता नहीं तू जैसा चाहे वैसा कर" यह सुन चेला अकेला ही नगर की सैर को चला। बाजार की शोभा देखता २ गली कूचों को चला। इधर उधर महलों की शोभा देखता फिर रहा था कि अटारी पर निगाह पड़ी देखता क्या है एक युवती खड़ी बाल सुखा रही है। बस उसे देखते ही लोट पोट हो गया कामदेव के बाणों से विद्ध हो छटपटाने लगा परन्तु करता क्या बेवश था। सायंकाल समीप जान आश्रम को लौटा गुरु महाराज ने चेहरा देखते ही जान लिया कि बच्चा माया का शिकार बन गया है। बोले कहो क्या दशा है चेला गिर पड़ा और कराहता हुआ कहने लगा कि महाराज छाती में दर्द होता है गुरु ने हँसकर कहा क्या नगर का काँटा हृदय में लग गया सच २ बता गुरु से झूँठ बोल परलोक न बिगाड़। गुरु के ये वचन सुन चेले ने लज्जा से सिर झुका लिया फिर गुरुजी के आग्रह पर सारा असली वृत्तान्त कह सुनाया तब गुरुजी ने चेले को आश्वासन देते हुए कहा कि घबराओ मत यह कितनी बड़ी बात है तुम पता बताओ और वह स्त्री यहीं उपस्थित होगी। चेले ने सब पते बताये गुरुजी ने नगर की ओर अपने चेले को एक पत्र उस स्त्री के पति

के नाम लिख कर भेज दिया उस शिष्य ने स्त्री के पति को जो कि एक सेठ था पत्र दिया पत्र में लिखा था कि हमारे ऊपर विश्वास कर अपनी स्त्री को इस रात के लिये आश्रम में भेज दो उस के पतिव्रत के हम पिता के समान रक्षक हैं महात्मा को दूर २ तक सब जानते थे उनका सबको पूरा पिश्वास था सेठ अपनी स्त्री सहित उपस्थित हो गया। महात्मा जी सेठ को अलग बैठाकर स्त्री को ले शिष्य के पास पहुँचे और कहने लगे कि ले भाई यह देवी मौजूद है तू जो चाहे सो कर। परन्तु इतना ध्यान रख कि प्रातःकाल सूर्य्य निकलते ही तेरा देहान्त हो जायगा। रात्रि के थोड़े से घण्टे ही तेरे जीवन के लिये हैं। स्त्री को महात्माजी पहले ही समझा चुके थे कि पुत्री घबड़ाना मत तुम्हारे धर्म पर आँच नहीं आयेगी थोड़ी देर का मायाजाल है। स्त्री बैठी रही। इधर मृत्यु के भय से चेला चिन्ता में डूब गया; और उसके हृदय से सारी काम वासना काफ़ूर होगई। रह रहकर यही सोच सता रहा था कि प्रातःकाल काल का कलेवा बन जाऊँगा। बस सारी रात बीत गई प्रातःकाल होते ही गुरुजी आ पहुँचे। चेले ने चरण छुए। गुरु ने कहा कहो भोग तृष्णा को बुझा चुके ? चेला कहने लगा महाराज कैसे भोग, और कैसे विलास, मैं तो रात भर चिन्ता में रहा हूँ। गुरु ने कहा कि मूर्ख तुझे तो रात्रि भर का समय दिया था फिर क्यों न कुछ कर सका। मुझे तो यही पता नहीं मृत्यु कब आजाये। फिर किस प्रकार योगाभ्यास छोड़कर सैर सपाटे को निकलूँ मृत्यु के स्वागत के लिये ही मैं हर समय तैयार बैठा रहता हूँ। याद रख भोग विलास में फँसे रहना और परलोक की तैयारी न करना भूल है। यह नर तन इसीलिये मिला है कि मुक्ति प्राप्त की जाये

और भोग-विलास में फँसकर मनुष्य सोचता रहता है कि अन्त में भजन कर लूँगा। इसी प्रकार टालते २ मृत्यु आजाती है और हम तैयार नहीं हो पाते। मनुष्य यदि यह विचार सदा रक्खे कि मौत आनेवाली है तो फिर भोगों में लिप्त नहीं हो सकता चेला यह सुनकर चरणों पर गिरा। गुरु ने कहा उठ अब तू अमर हुआ। यदि तू भोग में फँसता तो तू ब्रह्मचर्य से गिर जाता यही तेरी धार्मिक मृत्यु होती। अब तूने मृत्यु की चिंता के कारण भोगों से उदासीनता दिखाई है इसलिये स्थिर हो कर योगाभ्यास कर और मृत्यु के मुक़ाबिले को तैयार रह।

शिक्षा—यह बाह्य पदार्थ भुलावे में डालनेवाले हैं इस उपदेश को यदि मनुष्य हृदय में रक्खे तो कभी पाप में न फँसेगा। वेद कहते हैं कि:—"भस्मान्त ँ शरीरम्" बस मृत्यु को सदा याद रक्खे। "गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्" अर्थ—मानों मृत्यु बाल [चुटिया] पकड़े हुए है ऐसा समझ कर [शीघ्र] धर्म को करे।

ईश्वरीय न्याय

एक दिन मार्ग में एक महात्मा अपने शिष्य समेत जा रहे थे। गुरु को तो इधर उधर की कोई बात पसन्द न थी थोड़ा बोलना, साधारण, नैतिक, आवश्यकीय कार्य करके योगाभ्यास करना परन्तु चेला चपल था। उसे इधर उधर की बातों में भी बड़ा आनन्द आता था। चलते २ मार्ग में देखते क्या हैं कि एक धीमर नदी में जाल डाले हुए है। चेला यह देखकर खड़ा हो गया और धीमर को "अहिंसा

परमोधर्मः" का उपदेश देने लगा। धीवर कब मानने लगा, पहिले टाल मटोल करी फिर बिगड़ने लगा। यदि बुरे से बुरे काम से मनुष्य आजीविका करने लगता है। तो फिर छोड़ना नहीं चाहता। इधर धीवर बिगड़ा, उधर साधु ने सोंटा सँभाला। यह झगड़ा देख गुरू जी कुछ अगाड़ी बढ़ गये थे लौटे और चेले को पकड़कर ले चले। बोले बेटा साधु का काम समझाना है दण्ड देना नहीं। यह क्षत्रिय का कार्य है। चेला कहने लगा कि महाराजा को न तो बहुत से दण्डों का पता है और न राजा बहुतों को दण्ड देता है। फिर इस को दण्ड कौन देगा। इस पर महात्मा ने कहा कि भाई इसे भी दण्ड देनेवाली शक्ति है। जिसकी पहुँच सर्वत्र है। वेद में कहा है कि—"विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतस्पाद्" ईश्वर चारों ओर देखता और सब जगह पहुँचता है। इसलिये तुम चलो इस झगड़े से दूर होओ। चेला यह सुन सन्तुष्ट होकर गुरु महराज के संग चल दिया।

इस बात को एक वर्ष बीत गया। चेला मच्छी मारने वाले की बात को भूल भी गया। एक दिन गुरुजी महाराज उसी चेले के साथ फिर उस तालाब की ओर होकर निकले देखते क्या हैं कि एक चुटिहल साँप बड़े कष्ट से सरक रहा है और सहस्रों चींटियाँ उसे नोच २ कर खा रही हैं। चेले न सर्प की यह दुर्दशा देखी तो दया से पिघल गया और चाहता था कि सर्प को चींटियों से बचा ले कि गुरु महाराज ने हाथ पकड़ लिया। चेला बोला महाराज मुझे क्यों रोकते हो? दीन सर्प की सहायता मुझे करने दीजिये। गुरु महाराज ने कहा कि भाई इसे अपने कर्मों का फल भोगने दे यदि तू इस समय इसे छुटायेगा तो इस विचारे को फिर दूसरे जन्म में

यही दुःख भोगने होंगे। क्योंकि कर्म का फल अवश्य भोगना ही होता है। शिष्य ने कहा कि महाराज इसने क्या कर्म किये हैं जो इस दुर्दशा की दलदल में फँसा है। गुरु महाराज बोले यह वही धीवर है जिसे तुम पिछले वर्ष इसी स्थान पर मत्स्य न मारने का उपदेश दे रहे थे और लड़ने को उद्यत था और वे मछलियां ही चीटी हैं जो इसे नोच २ कर खा रही हैं। यह सुन चेला बड़े आश्चर्य में होकर कहने लगा कि गुरु महाराज यह तो बड़ा विचित्र न्याय देखने में आया। गुरु बोले कि भाई इसी लोक में स्वर्ग नरक के सारे दृश्य हैं प्रतिक्षण ईश्वरी न्याय के नमूने तुम देख सकते हो तभी तो शास्त्र ने कहा है कि "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" किया हुआ शुभ हो वा अशुभ भोगना पड़ता है इसलिये ही वेद भगवान् उपदेश करते हैं—"कृत ँ स्मर" अपने किये को याद करो। यह विचारते रहो कि तुम ने क्या किया है क्योंकि तुमको वहाँ भोगना पड़ेगा।

चन्दन बगिया

एक उदार राजा के चन्दन का विशाल बाग था। जिस से वर्ष में सहस्रों रुपये का चन्दन देशावरों को जाता और तेल इत्र तैयार होता था। एक दिन राजा साहब घोड़े पर चढ़कर प्रजा की दशा जानने के लिये, लौटते समय अंधेरा होगया मार्ग भूल जाने के कारण वियावान जंगल में जा पहुँचे। देखते क्या हैं कि एक भील अपनी स्त्री समेत झोपड़ी में बैठा है। राजा को देखकर भील ने खड़े होकर स्वागत किया

राजा का—जल आसन कन्द मूल फल से—सत्कार किया। राजा ने बहुत सुखपूर्वक रात्रि वहाँ बिताई। प्रातःकाल जब चलने लगे तब भील से बूझा कि तुम अपनी जीविका यहाँ किस प्रकार चलाते हो। भील ने कहा महाराज वन से लकड़ी काटकर कोयला करता हूँ। उसी को बेचकर अपना निर्वाह करता हूँ। राजा ने कहा कि हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। यदि तुम चाहो तो हमारे नगर में चलकर रहो। भील ने कहा महाराज। मुझे नगर में रहना अच्छा नहीं लगता वन-जीवन ही आनन्द-दायी प्रतीत होता है। राजा ने कहा कि अच्छा हम तुम्हें अपनी बहुत बड़ी चन्दन बगिया देते हैं। उसी से अपना निर्वाह करो और वहाँ रहो यदि तुम ढंग से चले तो तुम्हारा वंश वंशान्तर उस बगिया से सुखपूर्वक जीवन निबाहता रहेगा। भील बड़ा प्रसन्न हुआ, राजा की इस उदारता की सराहना कर चन्दन बगिया को चल दिया वहीं कुटी बना रहने लगा।

अब एक वर्ष हो चुका राजा के मनमें विचार आया कि चलो आज चन्दन बगिया की सैर कर आवें और अपने कृपा पात्र भील को भी वहाँ देखें अब तो वह बड़ा अमीर हो गया होगा। हजारों रुपये साल की आमदनी को पाकर अब बड़े ठाट बाट से रहता होगा। चलते २ राजा चन्दन बगिया की भूमि में पहुँचकर देखते हैं तो बगिया के स्थान पर उजाड़ पड़ा है। जगह २ कालोंच पड़ी है; भूमि जल गई है स्मशान (मरघट) का दृश्य हो रहा है। भील एक वर्ष पहले की भाँति ही दरिद्र वेष में झोंपड़ी के द्वार पर बैठा है। राजा को यह बीभत्स दृश्य देखकर बड़ा दुःख हुआ थोड़ा बढ़ा भील के

पास पहुँचा। भील देखते ही चरण छूकर धन्यवाद देने लगा। राजा ने कहा कि यहाँ यह क्या हुआ, बगिया क्या हुई, और तुम्हारी दशा क्या है। भील बोला महाराज को धन्यवाद दे रहा हूँ। बड़े सुख चैन से हूँ। पहले तो बन से लकड़ी काट, कोयले बनाकर, कोसों चलकर आता था। अब यही यहाँ पास ही लकड़ी काट, नगर में कोयले बनाकर वेंच आता हूँ। परन्तु अब एक पेड़ ही शेष है इसलिये कोई दूसरी बाटिका बताइये। जिससे उसमें डेरा लगाऊँ। यह सुन कर राजा क्रोध से काँपने लगा और भील की मूर्खता पर बड़ा खेदित हुआ। फिर भील से बोला। रे मूर्ख! तूने इस लक्षों की सम्पत्ति का तो नाश कर दिया। अब और बाटिका चाहता है। तू जा, अपने उसी जंगल में रह भील बोला क्यों महाराज मैंने क्या अपराध करा है? लकड़ियों को कोयले के सिवाय और किस कार्य्य में लाता? राजा ने कहा अच्छा जा; इस बचे हुए वृक्ष में से एक छोटी सी लकड़ी काट ला। भील ने तुरन्त आज्ञा का पालन किया। राजा ने कहा, अच्छा जा अब इसे बाज़ार में पनसारी के पास वेच आ। भील बाज़ार में पहुँचा पनसारी ने चन्दन की लकड़ी के उचित दाम दे दिये। अब तो भील अपने पिछले काम पर पछताता था एक शाखा काट दिन भर कोयले करता और सिर पर लाद बाज़ार में आता तब इतने दाम पाता था। आज ज़रा सी लकड़ी ने इतने दाम दिलवा दिये और समय भी बचा। भील रोता झींकता राजा पर गया। चरणों में गिर कहने लगा। हे महाराज! मेरे अपराध क्षमा करो। मैं बड़ा अनाड़ी हूँ। मैंने अपना नाश आपही कर डाला। अब क्या करूँ? उसके विलाप पर राजा को दया आई। उसने कहा कि अच्छा तुमने जो कुछ मूढ़ता करी सो करी अब आगे सँभल कर चलो। उसी वृक्ष

से और वृक्ष बढ़ाओ। खर्च लायक काट लिया करो और पेड़ लगाते रहो। थोड़े दिन में फिर चन्दन वगिया बन जायगी।

परिणाम--पाठको! हम यदि अपनी दशा पर विचारें तो हम भी उस भील के समान ही मूर्ख हैं। ईश्वर ने यह मनुष्य जीवन रूप चन्दन वगिया हमें दी है इसका एक २ श्वास चन्दन का अमूल्य वृक्ष है। परन्तु खेद है कि हम विषय भोग और दुराचार तथा व्यर्थ वासनों की अग्नि में इन श्वासों के कोयले कर रहे हैं। और चन्दन वगिया को उजाड़ रहे हैं। ऐसी दशा में वह न्यायकारी परमेश्वर हमें फिर मनुष्य जीवन रूपी चन्दन वगिया नहीं देगा और पशु पक्षी आदि तिर्यग-योनि रूप वन में भेज देगा। इसलिये हमें उचित है कि जो श्वास बचे हैं उन्हें सफल करें। दुष्कर्म और दुर्व्यसन छोड़ परोपकार और भगवद्भक्ति में लगें। जिससे फिर दूसरे जन्म में चन्दन वगिया अर्थात् मनुष्य जीवन के स्वामी बन सकें।

गजेन्द्र मोक्ष

किसी वनमें एक गजपति रहता था। एक दिन प्यास से व्याकुल हो वह नदी तट पर जलपान करने को गया। जल पीते २ हथिनियों से किलोल करने लगा और मस्त हो गया। इतने में ही अचानक नाके ने पाँव पकड़ लिया। अब तो गज को होश आया। इधर से गज अपना बल लगाकर स्थल की ओर खींचता है। उधर से ग्राह जल में को घसीटता है। घर पर तो चींटी भी शेर होती है। जल ग्राह का घर था आखिर गजेन्द्र को हार खानी पड़ी। नाके ने घसीटना प्रारम्भ करदिया

गजराज थकित हो गया। ग्राह खींचे लिये जा रहा है। गज-राज ने जल से ऊपर सूँड़ उठा ली है परंतु बाँसों पानी में इस के कहीं प्राण बचते हैं। जौ भर सूँड़ ऊपर रह गई अब कोई प्रयत्न काम नहीं करता हथिनियाँ और साथी हाथी चल दिये। अब हताश हो हाथी ने हरि को टेरना प्रारम्भ किया। नदी में बहते हुए एक फूल को उठाकर भगवान् की ओर ध्यान लगाया। दीनबन्धु दीनानाथ ने तत्काल कृपा करी और गज के प्राण बचा लिये।

यह पौराणिक कथा बहुत ही प्रसिद्ध है, परन्तु इसको सब यह समझते हैं कि सचमुच ऐसा ही हुआ था और निरा-कार भगवान् नंगे पाँवों ग्राह को मारने आये थे। भला विचारो तो सही सर्वव्यापी ईश्वर का आना जाना कहाँ बनता है सर्व शक्तिमान् क्या बिना ग्राह को मारे हुए नहीं छुड़ा सकता, क्या ग्राह के मुख में ईश्वर व्यापक नहीं था। यदि था तो फिर क्यों कहते हो कि अन्यत्र से आया। वास्तव में यह अलंकार है इसका तात्पर्य्य यह है कि जीवात्मा रूप हाथी वासना से प्यासा होकर इस भवसागर में जल पीने आया है। यहाँ आकर विषय भोगों में मस्त होकर भूल जाता है। इतने में मृत्युरूपी ग्राह उसे आ दबाता है। यदि वह इस समय जगदीश का स्मरण करे और संसार में बहते हुए मन-रूपी पुष्प को प्रभु की ओर कर पुकार करे तो अवश्य उसका उद्धार होगा; और वह मृत्यु के क्लेश रूपी ग्राह से बचकर आनन्द हो जायेगा यथा—

"तमेव विदित्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यतेऽनाय"

ईश्वर को जानकर मृत्यु के दुःख से बच सकता है और कोई मार्ग छुटकारे का नहीं है।

परलोक की पूँजी

एक विरक्त महात्मा ईश्वर भक्ति में लीन रहते और संसार के व्यवहारों से पृथक रहने और निश्छलता पूर्ण भोलेपन के कारण चालाक दुनियादारों से "बुद्धू" कहकर पुकारे जाते थे। इनको निस्पृहता के कारण किसी से न मिलने की आवश्यकता थी और न किसी की सेवा टहल या खुशामद की। भक्ति में मग्न केवल कोपीन धारी कन्द मूल फलाहारी हो कर आत्मानोपार्जन में समय बिताते थे एक दिवस राजा ने अपने सभासदों से कहा कि तुमने कोई"बुद्धू"भी देखा है। या यह शब्द कथनमात्र है सभासदों ने कहा हाँ महाराज ! आप के नगर में ही एक महा बुद्धू विराजमान है। आज्ञा हो तो उपस्थित किया जाये राजा ने कहा अच्छा ले आओ। तब सिपाही गये और इस परमात्मा के सरल पुत्र को पकड़ लाये। राजा के समीप आकर भी यह शान्ति और धीरता के साथ बैठे रहे। राजाने इनसे बूझा कि आपने कोई सम्पत्ति क्यों नहीं कमाई ? क्यों इस तरह जंगल में नंग-धड़ंग दिन काटते हो ? क्यों कोई रोजगार नहीं करते ? महात्मा ने उत्तर दिया कि जब हमारी इन्द्रियाँ साँसारिक भोग हमसे माँगती ही नहीं तो फिर किसलिये संग्रह करें। संसार की निःस्वार्थ सेवा करते हैं और भगवद्भजन। इससे अधिक और क्या करें। राजा ने उन महात्मा की ऐसी ज्ञान भरी और भोली भाली बातें सुनीं तो बड़े प्रसन्न हुए। नाना विधि भोजन और राजकीय उपकरणों से महात्मा का सत्कार किया और राजमहल के ठाट बाट दिखाये परन्तु महात्मा के मन नहीं भाये। तब तो राजा ने भी

कहा कि यह बेशक बुद्धू हैं। आखिर उन्हें विदा किया परन्तु एक अँगूठी पारितोषिक रूप से उनकी उँगली में पहना दी। महात्मा ने बूझा "इसको क्या करें" तब राजा ने कहा कि जो तुमसे अधिक मूर्ख हो उसे दे देना। कुछ दिन बाद राजा रोग से ऐसा पीड़ित हुआ कि आसन्न मृत्यु हो गया। अन्तिम समय जान, सभी गण्य मान्य पुरुष राजा से मिलने को आने लगे। महात्मा भी कुछ विचार राजा से मिलने को पधारे। और राजा के समीप बैठ हाल बूझने लगे। राजा ने कहा कि भाई क्या बूझते हो अब परलोक जाने की तैयारी कर रहा हूँ यह सुन महात्मा बोले कि कहो क्या क्या तैयारी करी है ? क्या तम्बू डेरे अरदली आदि वहाँ भेज दिये ? राजा बोले भाई वहाँ यह सामान नहीं भेजा है। महात्मा बोले कि अच्छा क्या संग ही सब सामान जायेगा ? राजा बोला नहीं। संग में कुछ नहीं जायेगा। महात्मा बोले क्या रानी जी या मन्त्री व सभासद् भी संग नहीं जायेंगे ? राजा बोले नहीं। महात्मा ने बूझा तो क्या आप अकेले ही घोड़े पर सवार होकर जायेंगे। राजा ने कहा कि घोड़े पर भी नहीं जा सकता। महात्मा ने कहा तो क्या पैदल ही जाओगे ? राजा बोले "बड़े मूर्ख हो क्या परलोक में शरीर साथ जाता है ? जो पैदल चलने को बूझ रहे हो।" महात्मा ने कहा कि अच्छा फिर वहाँ से लौटोगे कब ? राजा ने कहा अब लौटना कैसा दूसरे ही शरीर में जाना होगा महात्मा जी बोले कि अच्छा तो यह अपनी अँगूठी तो पहनो। क्योंकि मुझसे अधिक बुद्धू तुम हो। अरे ! जब यह राज के साज सामान और ठाट परलोक में तेरे साथ नहीं जायँगे तो तूने प्रजा पर अन्याय करके यह सब क्यों इकट्ठे किये और परलोक के

साथी को क्यों न इकट्ठा किया। रे महाबुद्धू राजा! थोड़े से जीवन के लिये कितने दीन हीनों को दलन कर यह द्रव्य तूने इकट्ठा की है! आज तेरे साथ नहीं जा रही है, मुझे देख कि मैं किसी को सताता नहीं और परलोक की सम्पत्ति को जमा-कर रहा हूँ। राजा बोला कहाँ है वह सम्पत्ति महात्मा ने कहा वह सम्पत्ति धर्म है; और आत्मा के साथ है राजा बोला महाराज आपने ठीक कहा है मैं ही नहीं किन्तु वे सब भी बुद्धू हैं जो आपको बुद्धू कहते हैं। कृपा कर मुझे भी धर्म की सम्पत्ति से युक्त करिये। जिससे परलोक को कुछ ले जाऊँ। तब महात्मा ने दान, ब्रह्मज्ञान आदि का राजा को उपदेश दिया जिससे उसे शान्ति मिली।

शिक्षा

वास्तव में आज ऐसे महाबुद्धू ही अधिक हैं, जो इस जन्म को सुखी करने की ध्वनि में नाना अत्याचार कर परलोक को बिगाड़ते हैं। भगवद्भक्तों की अनेक प्रकार से हँसी उड़ाते हैं। आज कल धनी और जागीरदार राजे महाराजे बड़े बड़े व्यापारियों को देखिये। ग़रीब मजदूर और कृषक प्रजा तथा भोले भाले लोगों की मिहनत का पैसा भोग विलास में फूँकते; और अभिमान में अकड़े रहते हैं। थोड़े से जीवन के लिये दीन जनता के अधिकारों को कुचलते, देश के प्रति द्रोह करते और ईश्वर से विमुख हो परमार्थ को विगाड़ रहे हैं। आज कृषकों के शरीर पर अस्थि और चर्म ही शेष रह गया है, मजदूर फ़टे वस्त्र और रूखे सूखे भोजन पर ही दिन काटते हैं; परन्तु इन मदान्धों का हृदय दया से द्रवित नहीं होता। ये समझते हैं हम बुद्धिमान हैं; परन्तु सचमुच ये बुद्धू हैं। मृत्यु के समय

जब इनके अत्याचार और दीनों की गर्म २ आहें इनके सन्मुख भयानक रूप धर इनके मन को बेचैन कर रही होंगी। मृत्यु इन्हें प्रभु के न्याय की ओर घसीट रही होगी। तब कौन इनका साथ देगा। क्योंकि उस समय—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे नारी गृहद्वारि सखा श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे धर्मानुगो गच्छति जीवएप: ॥

धन भूमि में और पशु पशुशाला में, नारी घर के द्वार तक और मित्र श्मशान में रह जायेंगे। यह शरीर भी जिसकी सजावट और ममता में रात दिन लगे रहते हो, चिता में रह जायगा। परलोक मार्ग में केवल धर्म ही पीछे चलेगा। इस लिये सदा "सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये।"

———

आर्य्य समाज का पाँचवाँ नियम।

मोह ही शोक का कारण है।

किसी दूकानदार ने एक सफ़ेद चूहा पाल रक्खा था। खिलाने पिलाने से खूब मोटा ताज़ा कर रक्खा था। साथ २ अपनी दूकान के और चूहों को दण्ड देने के लिये एक बिल्ली भी पाल रक्खी थी। बिल्ली नित्य प्रति एक दो चूहों को मार खाती थी। यह देखकर दूकानदार बहुत प्रसन्न होता था। बिल्ली को अपने बिराने का तो ज्ञान था ही नहीं एक दिन भूखी बहुत थी। सामने लाला के पालतू सफ़ेद चूहे को देख मुँह में पानी भर आया। उसे पकड़कर चट कर गई झट छलाँग मारकर एक ही वार में खा गई। लाला अब करते क्या देखते ही रह गये। बिल्ली को मारने दौड़े वह भाग गई।

अब तो बड़े दुःखी हुए। शोक में निमग्न बैठे सोच रहे थे कि इतने में उधर ही गुरु महाराज आ निकले। लाला को चिंतित देखकर बोले कि क्यों क्या हुआ कुशल तो है। लाला बोले कि महाराज वैसे तो आपके चरण कमलों की कृपा से सब कुशल मंगल है। हम ने एक सफ़ेद चूहा पाला था सो उसे बिल्ली मारकर खागई इसलिये शोक हो रहा है। महात्मा ने कहा कि तुमने चूहा पाला था तो बिल्ली क्यों पाल ली! लाला ने कहा कि और चूहों के मारने के लिये बिल्ली पाली थी। महात्मा ने कहा कि और चूहों में क्या जान नहीं थी? लाला ने कहा कि जान हुआ करे। मुझे क्या मुझे तो इसी चूहे से प्रेम था। मैंने बड़ी मुहब्बत से इसे पाला था। महात्मा ने कहा भाई तेरे शोक का कारण चूहा नहीं है; किन्तु ममता (यह मेरा है ऐसा भाव) है लाला ने कहा हाँ महाराज! तब महात्मा ने कहा कि भाई यह संसार की वस्तुएँ नाशवान् है और प्रत्येक प्राणी को मृत्यु रूप बिल्ली अवश्य खायेगी। यदि तुम इन सांसारिक पदार्थों में ममता करोगे मोह करोगे तो शोक से सताये जाओगे इन पदार्थों और स्त्री पुत्र धनादि की ममता और मोह छोड़ कर्तव्य का धैर्य के साथ पालन करो, और सबमें आत्मवत् वर्त्तो! न कोई बैरी है न मित्र। सबमें न्याय से वर्त्तो। तभी शोक से तरोगे। यही वेद भगवान् का उपदेश है—

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवभूत् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः॥

जिस ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि में सब प्राणी अपनी आत्मा तुल्य हो जाते हैं उनको शोक मोह नहीं होता।

ब्रह्मज्ञान का समझाना

एक राजा ने यह घोषणा कराई कि जो कोई हमें गीता समझा देगा उसे आधा राज्य बाँट देंगे। यह सुन अनेक पण्डित राजा के पास आते और गीता सुनाने लगे परन्तु राजा के एक दो प्रश्नों से चकरा कर लौट जाते थे। तब एक बड़े योग्य विद्वान आये और राजा को कथा सुनाने को तैयार हुए। कथा सुनकर राजा ने पण्डित जी की विद्वता की बहुत प्रशंसा की; और उनके परिश्रम की दक्षिणा भी दी। परन्तु आधा राज्य नहीं दिया तब पण्डित जी झगड़ा करने लगे कि आपको हमने गीता समझा दी आधा राज्य दिलवाइये और राजा कहता था कि आधा राज्य किस बात का जब कि हम गीता समझे ही नहीं। आखिर यह झगड़ा बहुत फैलने लगा तब यह ठहरी कि विन्ध्याचल के समीप तपोवन में जो मुनि महाराज रहते हैं उनके पास चला जाय। वह जैसा कहें उसे दोनों स्वीकार कर लें। इस पर दोनों ने महात्मा जी से जाकर कहा कि महाराज हमारा झगड़ा निबटाइये। महात्मा जी ने पूछा कि क्या झगड़ा ? तब पण्डित बोले—महाराज ! राजा ने कहा था यदि मुझे कोई गीता समझा दे तो आधा राज्य दे दूँगा। महात्मा ने राजा से कहा कि कहो क्या पण्डित का कहना ठीक है ? राजा ने कहा हाँ महाराज ! ठीक है। महात्मा ने फिर पूछा कि पण्डितजी आपने गीता समझा दी ? पंडित बोले हाँ महाराज। पद पदान्त प्रकृति प्रत्यय सारी बातों का भिन्न २ अर्थ कर दिया। महात्मा ने कहा कि यह तो सब ठीक है परंतु गीता आप न समझा सके; और न आपही समझते हैं। पंडितजी यह सुनकर बहुत चौंके। महात्मा बोले महाराज

व्याकुल मत होओ। यदि आप गीता समझे होते तो इतना राज्य का लोभ क्यों करते। यदि राजा समझ जाता तो वह क्यों राज्य के लिये झगड़ता। लोभी गुरू लालची चेला' न तुम समझते हो न समझा सकते हो। यह कैसा वेदान्त कि वैराग्य नहीं उत्पन्न कराता। यह कैसा वेदान्त कि जिसका मूल्य राज्य हो सकता है। वेदान्त का मूल्य तो चक्रवर्ती राज्य भी नहीं देखो उपनिषद् में, रहा व्याकरण का अर्थ सो उससे कुछ नहीं होता पुस्तकें पढ़ लेने में क्या लाभ है। जब तक हृदय शुद्ध नहीं।

"ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः यस्तन्नवेद किमृचा करिष्यति"

"जो ईश्वर को नहीं जानता उसको वेद पाठ से क्या लाभ"

ईश्वर किसका भजन करता है

एक राजा जो बड़ा प्रजापालक था; प्रजा को सुख पहुँचाने में रात्रि दिवस दत्तचित्त रहता था। अपना सुख, ऐश, आराम सब त्याग यहाँ तक कि मोक्ष के साधन भगवत् भजन को भी समय न रखता था। सारे समय परोपकार में ही संलग्न रहता था। एक दिन वन में जा रहा था कि नारद मुनि के दर्शन होगये। प्रणाम कर राजा ने उनका स्वागत किया और मुनि महाराज की बग़ल में एक लम्बी चौड़ी बही दबी देखकर राजा ने बूझा कि महाराज यह कौन सी पुस्तक है? मुनि जी बोले यह बहीखाता है, जिसमें भजन करने वालों के नाम हैं। राजा ने निराशा सहित हो कहा कि जरा देखिये तो सही कहीं मेरा नाम भी है या नहीं? नारद जी बही का एक२

पृष्ठ उलटने लगे। परन्तु राजा का नाम कहीं हाथ नहीं आया। राजा ने नारद जी को चिन्तित देखकर कहा महाराज! आपके ढूँढने में कोई कमी नहीं है। वास्तव में मैं ऐसा अभागा हूँ कि मेरा नाम भजन करनेवालों में नहीं होगा। उस दिन राजा के मन में कुछ ग्लानि सी उत्पन्न हुई। अगले दिन राजा फिर कार्य वशात् वन में जा रहा था कि नारद जी मिल गये आज भी एक लम्बी चौड़ी वही बगल में दबाये हुए थे; किन्तु रङ्ग और आकार में भेद था। राजा ने फिर प्रणाम कर बूझा कि भगवन्! आज कौन सी वही लिये हुए हो! नारद जी ने कहा कि आज की वही में उन लोगों के नाम लिखे हैं जिनका भजन ईश्वर करता है। राजा बोला महाराज ज़रा देखिये तो सही इसमें कहीं मेरा नाम है क्या? नारद जी ने ज्योंही पन्ना उलटा तो देखते क्या हैं कि प्रथम राजा का ही नाम लिखा हुआ है। राजा ने आश्चर्य चकित होकर कहा कि महाराज मुझ जैसे तुच्छ जीव का नाम इस में कैसे लिखा गया? नारद जी बोले राजन्! जो लोग निष्काम होकर संसार की सेवा करते हैं जो लोग संसार के उपकार में अपना जीवन अर्पण करते हैं, जो लोग मुक्ति का लोभ भी त्याग कर प्रभु के निर्बल पुत्रों की सेवा सहायता में चित्त देते हैं, उन त्यागी महापुरुषों का भजन ईश्वर करता है। परमात्मा प्रति समय उनके कल्याण का यत्न करता है। और उस महापुरुष को माया और कर्म बन्धन नहीं फांसते। वह धन्य है। उसका जीवन पुण्य है। ये राजन् तू मत पछता कि तू बहुत सी पूजा पाठ नहीं करता तू असल में भगवान् की ही पूजा करता है। परो-पकार और निःस्वार्थ लोक सेवा भी उपासना से कम नहीं। वेद भगवान् कहते हैं कि—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छन्ँ समाः एवंत्वयि नान्यतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।

"कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करो तो कर्म-बन्धन में लिप्त नहीं होओगे। राजा को यह सुनकर बड़ा संतोष हुआ वह भगवान् का धन्यवाद करने लगा। नारद जी ने कहा राजन्! भगवान् दीनदयालु हैं उन्हें खुशामद नहीं भाती। आचरण भाते हैं जो लोग लम्बी २ नमाज़ें पढ़ते हैं आँखें मीच कान बन्द कर बैठे रहते हैं और दूसरों का कमाया खाते हैं। वे भक्त नहीं अपाहिजहैं। आजकल ऐसे अपाहिज बहुत हैं कोई ब्रह्म बना फिरता है कोई धारा और कोई शब्द सुनता है। ये लोग गुरुडम फैला कर परोपकार से लोगों को हटाकर आलस्य में फँसाते हैं। वैरागी खाकी उदासी नाना भाँति के पन्थाई भूभार भूत फिरते हैं। सच्ची भक्ति यही है कि परोपकार करो। दीन दुखियों का हित साधन करो अनाथ विधवा किसान और दलित (अछूत) आज अत्याचारियों से सताये जते हैं, इनकी यथाशक्ति सहायता और सेवा करो। यही परम भक्ति है।

त्याग से प्रतिष्ठा

किसी नगर में एक लाला जी बहुत बड़े धनी थे किन्तु कंजूसों के सरताज रहा करते थे। न अच्छा खाते न पहनते न दान धर्म में खर्च करते थे। कौड़ी २ जोड़ धन इकट्ठा करना ही उनका काम था। प्रातःकाल उनका मुख देखना तो कैसा लोग नाम भी न लेते थे। क्योंकि धर्मशास्त्र कहता है कि: "नामातिकृपणस्य च" कृपण का नाम न ले। जहां जाते वहां

धक्के खाते। क्योंकि ऐसे की प्रतिष्ठा कौन करे आजकल बहुत से धनी ऐसे हैं जो दान धर्म में कौड़ी न देकर सरकारी चन्दों में काफी रकम दे देकर तथा यज्ञ और ब्राह्मण भोजन न करा कर गौराङ्ग देव अँग्रेज बहादुरों को गार्डन पार्टी यज्ञ में जिमा कर ही प्रतिष्ठा पा लेते हैं मगर लालाजी थे पूरे अर्थ पिशाच। सरकारी चन्दा तो एक तरफ चपरासी को तामील के =) दो आने खुराक तक न देते थे। यदि कोई पुलिस वाला दरवाजे पर आ ठहरता तो किवाड़े बन्द कर बीमारी का बहाना बना लेते थे। मगर भोजन न कराते थे इसलिए राजा प्रजा किसी के भी वे आदर पात्र न थे। परन्तु एक गुण उनमें था कि भजन में बड़े दत्तचित्त थे माला फेरते रामायण का पाठ करते कितनी ही दूर हो अंधेरे और वर्षा में भी कथा सुनने अवश्य पहुँच जाते थे परन्तु कथावाचक पंडितजी जैसे अन्य श्रोताओं को आइये बैठिये, "बाबूजी" "सेठजी" आदि शब्दों से सत्कार करते थे, इनका न करते थे। सबसे पीछे एक कोने के टाट पर जगह मिलती थी। क्योंकि सब जानते थे कि यह धेला भी चढ़ानेवाले नहीं हैं। परन्तु लाला का न मालूम कौन संस्कार उदय हो आया, न जानें किस पुण्य वृत्ति का पुष्प खिल गया, वर्षा के भजन से अन्तःकरण की कार्पण्य कालिमा धुल गई कथा की समाप्ति पर सब के चढ़ाने के उपरान्त लाला ने बगल में से मैली पोटली निकाल चाँदी के चमकते हुए चन्द्रमा खनाखन्न लौट दिये। सारे श्रोता और पण्डितजी भी चकित हो गये। चारों ओर से आवाज आने लगी कि धनवान् का क्या कंजूस न जाने किस समय दिल खोल दे। लालाजी नीची गर्दन किये निरभिमानता के साथ अपनी जगह पर बैठने को जाने लगे, पण्डितजी ने आदर

सहित हाथ पकड़ कर ऊँची जगह कालीन पर विठलाया। लालाजी बैठकर बोले कि महाराज धन की बड़ी प्रतिष्ठा है। कल तो मुझे दूर बैठाते और बात न बूझते थे किन्तु आज यह आदर सत्कार! लाला की यह धनाराधन भरी बात सुनकर पण्डितजी ने कहा सेठजी यह आपकी भूल है धन तो आप के पास कल भी था परन्तु प्रतिष्ठा आपके पास न थी। यह प्रतिष्ठा धन की नहीं किन्तु "धन के त्याग" की है। "धनं त्यागेन शोभते" धन त्याग से शोभित होता है।

शिक्षा

मधु-मक्षिका सम जोड़ २ के धन को रखना और किसी शुभ कार्य में न खर्च करना इससे प्रतिष्ठा नहीं होती। चोर लुटेरों से सदा भय रहता है। जिस धन का उपयोग नहीं वह धन और मिट्टी बराबर हैं। धन का पुण्य दान और खाने पीने में उपयोग करो धन के जोड़ने से भय और शुभ कर्म-में त्यागने से प्रतिष्ठा और मोक्ष हैं।

आज कल के पाधा पण्डित

एक गाँव में शीघ्रबोधी पंडित गाँव की पाधाई कर काल-यापन करते थे। १०-५ श्लोक १००-५० दोहे चौपाई होड़ाचक्र की थोड़ी बातें कहानी मात्र सत्यनारायण यही पंडितजी की विद्या थी। परन्तु गाँव में बड़े भारी पंडित समझे जाते थे। भविष्य उनकी जिह्वा पर था। और खगोल की बातें आँख के सामने। अपनी बातों के बल वे गाँव के तर्क शिरोमणि थे। दैवयोग से उनके दो यजमानों की कन्याओं के विवाह एक रात्रि में ही आन पड़े। जिन गाँवों में विवाह थे। उनके मध्य

में ४—५ कोस का अन्तर था। अब पंडितजी को बड़ी कठिनता पड़ी। सोच विचार कर पंडितजी ने समय दोनों जगह का इतने अन्तर से रक्खा कि वे एक विवाह करा के दूसरे स्थान पर आ सकें। अस्तु वे प्रथम समय रक्खे हुए विवाह में गये, और विवाह कराया, रुपये भी मन चाहे वसूल करे। परन्तु टका २ कर रुपये वसूल करने में देर बहुत लगी, इधर इस यजमान के यहाँ लड़के वाले पंडित ने दुन्द मचाया; और लग्न टलने का अड़ङ्गा लगाकर दोनों ओर का विवाह स्वयं ही करा दिया। विवाह पूर्ण होने पर शीघ्र २ मार्ग तै कर हाँपते घबराये हुए यह पंडितजी भी आन पहुँचे। आकर देखा तो मैदान को हाथ से निकला हुआ पाया। यजमान बोला महाराज क्षमा करिये, आपका इन्तज़ार करते २ आँखें थक गईं, आखिर दूसरे पंडित से विवाह करा लिया। तब पंडित बहुत शोकित हो खाट पर बैठ गये। माथा पकड़ लिया। तब यजमान बोला महाराज शोक क्यों करते हो? रुपया दो रुपया आप को भी दूँगा, चिन्ता न करिये। यह सुन पंडितजी बोले, "अरे मूर्ख! क्या मैं लोभी हूँ? मैंने चारों वेद चारों वेदना उनके बाल और बच्चे सबको देखा है। क्या मैं धन का लोभ कर शोक करूँगा अरे मूढ़! मुझे कन्या का शोक है, मैंने इसका नामकरण आदि सब संस्कार कराये और खुशी २ विवाह की लगन लिखी है मगर हाय "अब" यजमान चौंक पड़ा और बोला। महाराज क्या बात है साफ़ २ कहिये? पंडित जी बोले क्या कहूँ जिह्वा काँपती है, हृदय फटा जाता है, सत्यानश हो उस पंडित का जिसने अनर्थ किया। हाय अब इस नन्हीं सी बच्ची को वैधव्य का दुःख देखना पड़ेगा। यजमान काँप उठा बोला महाराज यह क्या कहते हो। ऐसा अनर्थ

क्यों होगा। पंडितजी बोले भाई कहता क्या हूँ तुम्हारी जल्दबाजी को रोता हूँ "मर" लग्न में फेरे पड़े हैं इसका तो फल यही है कि "जो लगन होय मर, तौ निश्चय मरै वर" क्या यह श्लोक झूँठ हो जायगा। क्या वेद शास्त्र की बात पलट जायेगी। इतना सुनते ही यजमान के होश उड़ गये। हाथ जोड़ बोला पंडितजी आपको सब सामर्थ्य है कृपा कर कोई उपाय करिये। जिससे इस कन्या का कल्याण हो। तब बहुत देर आँखें बन्द कर विचार करने के बाद पंडित जी ने अँगुलियों पर मेष, वृष, मिथुन आदि गिन गिनाकर अपना मुख खोला। उपाय क्या उपाय तो शास्त्रों में सब बातों के मौजूद हैं; और कौन ऐसी बात है जो हम नहीं सँभाल सकते। मगर भाई ख़र्च भी बढ़ता है और मिहनत भी पड़ती है। यजमान बोला महाराज फिर भला इससे भी बढ़कर कौनसा कष्ट होगा, आप ख़र्च की चिन्ता न करें। न मिहनत की ख़र्च के पीछे मैं क्या अपनी कन्या को राँड़ कर विठाऊँगा? इधर शीघ्र बेटेवाले को भी यह ख़बर पहुँच गई। वह भी व्याकुल घबराया हुआ दौड़ता आया। पंडितजी के चरणों पर गिर कहने लगा, "पंडितजी आप आज्ञा दीजिये मैं हर तरह धन से तन से तैयार हूँ।" किसी प्रकार मेरे लड़के के प्राण बचाइये तब पंडित जी बोले अच्छा भाई उपाय आज ही किया जायेगा पहले तो इन फेरों को उधेरना पड़ेगा फिर इसके बाद आज आधी रात में "अमर" लग्न आयेगी। तो उसमें फेरे फेरूंगा। तब ठीक होगा। इस पर सबकी चिन्ता दूर हुई सायंकाल को पंडित जी ने वर कन्या को उलटा घुमाकर फेरे उधेरने का नाटक किया फिर बाद को नये सिरे से विवाह कर फेरे उधेरने और डालने की दुहरी दक्षिणा ली, इनाम लिया और अहसान

उनके सिरों पर रक्खा और अपने गाँव की राह पकड़ी।

ऐसे पण्डित अब भी मौजूद हैं और आँख के अन्धे गाँठ के पूरे चेले भी सब कहीं काफी तादाद में भरे हुए हैं। इस स्वार्थपरता, मिथ्या गपोड़े और मूर्खता पूर्ण विश्वास से हिंदू जाति तबाह हो रही है। जब तक सच्चे शास्त्र-ज्ञानी पण्डित और सब झूठ को परखने वाले यजमान न होंगे तब तक देश का कल्याण होना कठिन है।

उचित उत्तर

एक घमंडी राजा था उसे खुशामदी और लोभी मुसाहिबों ने ऐसा बिगाड़ा कि वह अपने को धर्म में युधिष्ठिर, और बल में भीम, तथा बाणविद्या में अर्जुन समझने लगा। और उसके सिर में यह सनक सवार हुई कि मेरे यशोवर्णन में भी महाभारत जैसा बड़ा ग्रन्थ बने; और उस ग्रन्थ को महाभारत का पद भी मिले बस अब वह प्रत्येक पण्डित से जो उसके यहाँ आते कहता कि हमारा महाभारत लिखो क्या हम पाण्डवों से कम हैं? इस पर विद्वान् पंडित हैरान रह जाते और महाभारत लिखने में अपने को असमर्थ कहकर लिखना अस्वीकार कर देते थे। तब राजा पंडितों का तिरस्कार कर देता और निकलवा देता यह सब समाचार किन्हीं चौबेजी को भी मिले। बस चौबे जी अपने पुत्र सहित आन पहुँचे। राजाको सूचित किया कि महाभारत लिखने की योग्यता रखने वाले पंडित आये हैं। राजा यह समाचार सुन बड़ा प्रसन्न हुआ। चौबे जी को बुलाया राजा के पूछने पर चौबेजी ने खम ठोंककर कह दिया कि हम कुल छे मास में ही महाभारत तैयार कर देंगे।

आप हमारे घर के खर्च को कुछ तो धन दीजिये, जिससे कि ६ मास तक घर से वेफ़िक्र हो जायँ और हमारे रहन सहन और खाने-पीने का पूरा प्रवंध कर दीजिये। राजा ने एकान्त बाग़ में चौवेजी के रहने को कोठी खुलवा दी। घर के लिये एक सहस्र रुपये भेज दिये। चौवेजी और चौवेजी का पुत्र रोज़ दूध, मलाई, लड्डू, पेड़े उड़ायें, कसरत करें और दिन भर वड़े पत्रों पर "राधेश्याम" "सीताराम" लिखते रहा करें जब ६ मास होने में थोड़े ही दिन शेष रहे तब राजा ने अपने मंत्री से कहा कि देखो तो चौवेजी ने कितना ग्रन्थ तैयार किया है। मन्त्री जी ने आकर देखा तो कागज़ों के ढेर लगे पड़े थे राजा से कहा कि महाराज लिखा तो है, परन्तु यह नहीं मालूम क्या लिखा है। क्योंकि चौवेजी कहते हैं कि विना पूरा किये नहीं सुनायेंगे आखिर छे मास वीते महाभारत सुनाने का दिन आ पहुंचा! चौवेजी राजासाहव के पास पहुंचकर वोले। महाराज की आज्ञानुसार महाभारत वनकर तैयार हो गया है, एक ही दो वातें और रही हैं, उनके विषय हमें महाराणी जी से कुछ पूछकर लिखना है, आप ऐसा प्रवंध कर दीजिये कि हम पूछ सकें, राजा ने झट पर्दा करा दिया और दासी के साथ चौवेजी महल में जा पहुंचे। रानी चिक के भीतर थीं चौवेजी ने दासी द्वारा रानी से प्रश्न किया। महारानीजी राजासाहव ने अपना महाभारत रचवाया है, सो वह आज अव सव पूरा होगया, केवल आपका ज़िक्र इसलिये रहगया है कि द्रौपदी के समान आपका वर्णन करना है सो आपके एकपति राजासाहव को तो हमजानते हैं दूसरे ४ पतियों के नाम भी आप हमें वता दें, तो पञ्चभत्रिक; या पञ्चालीके समान मानकर आपका वर्णन हो, चौवेजी की यह वात सुनकर रानी वड़ी अप्रसन्न हुई, और चौवेजी को महल से

वाहर करा दिया और राजा से शिकायत करी। चौवेजी ने राजा से कहा कि महाराज रानी साहिवा व्यर्थ रुष्ट होती हैं। हम तो केवल उचित वात पूछते हैं। यदि वह नहीं वतातीं तो फिर हम भी अपूर्ण ग्रन्थ को नहीं सुनाना चाहते। राजा इस वात से वहुत लज्जित हुआ और चौवेजी को सादर विदा करा दिया और उस दिन से युधिष्ठिर बनने की लालसा छोड़ दी।

शिक्षा

मनुष्य को अपनी उतनी ही प्रतिष्ठा की इच्छा करनी चाहिये जितनी के वह योग्य है वरना वह सव का उपहास पात्र बनता है।

सत्संग का लाभ

एक चोर जब मरने लगा तो अपने पुत्र को सांसारिक व्यवहार की सब शिक्षा देने के उपरान्त यह भी वसीअत की कि वेटा भूल कर भी कभी पण्डितों का उपदेश व कथा न सुनना यदि कथा के मार्ग से ही जाना पड़े तो कानों में अँगुली देकर चले जाना। वाप के मरने के वाद इस नये चोर ने भी अपने काम में खूव सफ़ाई के हाथ दिखाने शुरू किये रोज़ कहीं न कहीं हाथ मारता। एक दिन चोरी करके उसे एक ऐसे मार्ग से जाना पड़ा कि जहाँ कथा हो रही थी। इस चोर ने अपने उस्ताद की वात याद करके कानों में अँगुली लगा दौड़ना शुरू किया। परन्तु ठोकर जो लगी तो मुँह के बल भूमि में गिरा। उँगलियाँ कानों में से निकल गईं और पण्डित के यह शब्द कि "देवता की परछाईं नहीं होती" उसके कान में पड़ गये कुछ दिन के उपरान्त एक वड़ी चोरी उस चोर ने करी इसका भेद

निकालने को एक पुलिस वाले ने काली जी का रूप धर करके चोर के मकान पर आधी रातमें आवाज़ दी। चोर निकल कर आया। देवी को प्रणाम कर बोला, क्या आज्ञा है। देवी-रूपधारी पुलिस वाला बोला कि तूने अभी एक इतनी बड़ी चोरी करी है। किन्तु फिर भी अभी तक मेरे लिये पूरी भेंट क्यों नहीं दी! चोर अपनी चोरी की बाबत कुछ कहने ही वाला था कि उसकी निगाह परछाईं पर पड़ी और उसने कथा की बात का स्मरण करके कहा कि माता तू कैसी भेंट मांगती है। मैंने चोरी कब की है। इस पर नकली देवी ने डाटकर कहा कि क्यों मुझ से झूँठ बोलता है। देवता से भेद छिपाता है। चोर ने कहा कि मैं तो सच कहता हूँ। देवता ही झूँठ बोलने लगें तो फिर क्या ठीक है। मैंने कभी भी चोरी नहीं की आप मुझे झूठा दोष लगाती हो। इस पर पुलिस वाले ने चोर को सच्चा समझ छोड़ दिया और चल दिया। चोर भी घर में आ कर बड़ा प्रसन्न हुआ और मनमें कहने लगा कि यदि इसकी परछाईं न दीखती तो मैं ज़रूर २ इसे देवी समझकर सारा हाल बतादेता अच्छा हुआ कि मुझे इस नकली काली को देख कथा की बात याद आ गई। बस उस दिन से चोर नित्यप्रति कथा में जाने लगा और यहाँ तक कि सत्संग के प्रभाव से उस ने चोरी का पेशा छोड़ कर दूकान का काम कर लिया।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी हू की आध।
तुलसी संगति साधु की हरे सकल अपराध ॥

शिक्षा

सत्संगति से ज्ञान बढ़ता है आचरण सुधरते हैं सत्संगति सदा करते रहो।

वेष की लाज

किसी राजा के दरबार में एक बहुरूपिया कई बार वेष बदल २ कर पहुँचा, किन्तु पहचान लिया गया, और इसलिये राजा ने उसे कुछ भी इनाम नहीं दिया, और कहा कि जब तक तुम हमें धोखा न दे दोगे, हम इनाम नहीं देंगे। यह सुन बहुरूपिया चला गया और कुछ दिन उपरान्त साधु का रूप धारण करके आया, और जंगल में धूनी लगा दी। न खाये न पिये। चाहे जो भेंट ले जाओ उधर देखे भी नहीं। उसके इस त्याग और तप को सबमें चर्चा होने लगी, होते २ राजा के महलों तक समाचार पहुंचे, राजा भी मन्त्री समेत दर्शन को आये, और सच्चे मोतियों की थाल भर भेंट लाये। साधु के सामने प्रणाम कर भेंट रख दी और बैठ गये। साधु ने सच्चे मोतियों को उठा धूनी को आग में झोंक दिया। राजा उसकी इस त्याग वृत्ति को देखकर चकित होगये और साधु की प्रशंसा कर चलने लगे, तभी साधु ने झुककर प्रणाम किया, और पूर्ण परिचय देकर कपड़े बदल आगे बढ़ इनाम मांगा। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और यथा प्रतिज्ञा पारितोषिक (इनाम) दे बहुरूपिये को प्रसन्न किया, फिर उससे पूँछा कि तू यह तो बता कि तू ने मोतियों को जो इस इनाम से कहीं अधिक मूल्य के थे, छोड़कर इनाम की इच्छा ही क्यों करी, तू सब मोतियों को लेकर ही चल देता तो नफे में रहता, परन्तु तू अपने इतने बड़े लाभ को क्यों छोड़ बैठा? यह सुन बहुरूपिया बोला, महाराज मैं इस समय यदि आपकी भेंट स्वीकार कर लेता तो नफे से रहता, परंतु इस आचार से साधु वेष कलंकित हो जाता, वेष की लाज रखने के लिये

और उस समय में पूरी २ तरह पर नक़ल बन जाने के लिये ही यह त्याग किया था, यदि मैं लालचवश ऐसा करता तो वेष बदनाम, नक़ल अधूरी और बहुरूपिया वेष कलंकित हो जाता। हमारा पेशा धोखा देकर रुपया कमाना नहीं है, किन्तु धोखा देकर मनोविनोद करना, और फिर अपने असली रूप में रुपया लेना है। यह सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

शिक्षा

हमें भी विचारना चाहिये कि हम कुल की लाज वेष की लाज निबाहते हैं वा नहीं आज कल बहुत से मनुष्य जो अपने को उच्च कुल का कहते हैं, परन्तु नीचे काम करते हुए नहीं लजाते, साधु ब्राह्मण के वेष में होकर भी पाप कर्म करते और ठगते हैं, हम रोज २ यज्ञोपवीत गेरुआ वस्त्र आदि धारण कर, वर्णाश्रम की नक़ल करते हैं, परन्तु क्या कभी वेष की लाज रखनेवाला और नक़ल को निबाहने का भी हमें खयाल आता है। हर एक मजहब में बहुत से लोग एक दूसरे से लड़ने को इस बातपर तैयार रहते हैं कि हमारा मज्ञहब तेरे से अच्छा है। परन्तु नहीं विचारते कि हम भी इस वेष की लाज रखते हैं वा नहीं। पाठको! हमें चाहिये कि अपने देश, वर्णधर्म की लाज के लाभ को छोड़ें और कुल को बदनामी से बचा कर नेकनाम बनावें।

शुद्ध हृदय का प्रभाव

एक दिन अकबर बादशाह ने तानसेन से पूछा कि तुमने इतना मीठा और स्वरपूर्ण गाना किससे सीखा है क्या तुम्हारे गुरू इस लोक में अभी हैं और यदि हैं तो तुम्हारे

पास कभी क्यों नहीं आते ? तानसेन ने कहा कि महाराज मेरे गुरु स्वामी हरिदासजी हैं, जो वृन्दावन में भगवद्भजन में लगे रहते हैं इसीलिये उनका दर्शन यहाँ होना कठिन है । यह सुन अकबर ने कहा कि अच्छा तानसेन एक बार किसी प्रकार अपने गुरु का भी गाना सुनवाओ । तानसेन ने कहा कि हुजूर वे तो निर्द्वन्द्व त्यागी महात्मा हैं, इतनी किसमें सामर्थ्य है जो उन से गाना गाने की आज्ञा करे और फिर वे यहां आने क्यों लगे । उनकी ही कभी मौज हो हो तो गाना सुनने को मिल सकता है, इसके लिये आपको समय नहीं होसकता, क्योंकि उनके गाने सुनने के लिये आप वन में हो बैठे रहें । हाँ यदि होसका तो एक तदवीर करूँगा, यदि मेरे साथ वृन्दावन चलने को तैयार हो तो चलिये शायद गाना सुनने को मिल जाय अकबर को तो गुणी और सन्तजनों की सदा चाह रहती थी तानसेन के साथ फ़ौरन वृन्दावन को कूच कर दिया ।

प्रातःकाल के समय शीतल मन्द सुगन्ध पवन चल रहीं है, चिड़ियाँ चहचहा रही हैं, सूर्य्य भगवान ऊपा की चादर ओढ़े आकाश में प्रकट हुए हैं कि तानसेन के साथ अकबर बाबा हरिनामदास के आश्रम में जा पहुंचे, देखा तो महाराज समाधि लगाये इष्टदेव के ध्यान में मग्न हैं बराबर में तंबूरा धरा हुआ है तानसेन ने मनही मन महाराज को प्रणाम कर तंबूरा उठा ग़लत रागिनी अलापनी प्रारम्भ करदी तानसेन भी कुछ ऐसा वैसा थोड़े ही था, तान से दिगदिगन्त को गुंजा दिया । गुरु महाराज की मनोवृत्ति को भो समाधि से हटा अपनी ओर खींच लिया । गुरु महाराज ने आँख खोल कर देखा तो तानसेन गा रहा है और गा रहा है ग़लत स्वरों में । गायनाचार्य्य गुरु महाराजके कान कब इस अशुद्ध गान

को सहन कर सकते थे। फ़ौरन डाट कर बोले अरे मूर्ख तानसेन तू इतना सीख कर भी अशुद्ध गाये जाता है। तानसेन चरणों पर सिर रख कर बोले, महाराज क्षमा करिये, मेरे गले में यह राग नहीं बैठता। कृपया आप एक बार बता दीजिये। तब हरिनामदासजी ने हाथ में वीणा ले अलाप किया इधर अकबर तो बेसुध हो ही गया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता था, कि सारा जंगल स्तम्भित हो रागवृत्ति हो गया हो, राग समाप्त हुआ, हरिनामदास जी के चरणों को छूकर तानसेन और अकबर विदा हुए। अकबर तानसेन से बोला कि तानसेन तू यह तो बता कि तेरे गाने में कभी भी इतना आनन्द क्यों नहीं आया जितना कि आज आया है। तानसेन बोला महाराज इसका कारण यह है कि मैं दिल्लीपति का गवैया हूँ और यह जगत्पति के गवैये हैं। अकबर यह उत्तर सुन कर मुग्ध हो गया।

शिक्षा

ईश्वर-भक्तों की वाणी में इसलिये असर होता है कि उनका मन शुद्ध होता है "यन्मनसाध्यायति तद्वाचावदति" जैसा मन से ध्यान करता है, वैसा वाणी से बोलता है, यदि शुद्ध भावना से व्याख्यानदाता उपदेशक नेता भजनीक आदि अपने विचार जनता के सामने रक्खें तो जादू का असर हो।

——:॥:——

सच्चा श्रोता

किसी मन्दिर में एक सन्यासी नित्यप्रति कथा किया करते थे। १०-२० श्रोता लोग भी ऐसे थे जिनका नित्य नियम था कि कथा आनकर सुनते थे। एक दिन एक सवार भी उस

मार्ग से निकला। कथा होती हुई देखकर सुनने को बैठ गया। कथा थी त्याग और वैराग्य पर, सवार कथा से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसी समय वानप्रस्थ धारण कर कुछ दिन के बाद तप और योगाभ्यास से वह सवार कामिल साधु बन गया। कुछ वर्षों के बाद वह उसी स्थान पर लौटकर आया तो देखता क्या है कि वेही श्रोता विराजमान हैं। सन्यासी जी कथा सुना रहे हैं। सवार ने कथा के उपरांत श्रोताओं को टटोलना उन के हाथ पाँवों को दबा २ कर देखना शुरू किया। साधु की यह हरकत देख कर सब लोग चकित हो गये। तब कथा बाँचने वाले संन्यासी ने कहा कि आप यह क्या करते हैं। साधु बोला कि महाराज मैं यह देखता हूँ कि यह लोग मनुष्य हैं व मिट्टी की मूर्त्तियाँ, क्योंकि मैंने एक बार ही कथा सुनी और उस पर अमल करके इस योग्य बन गया परन्तु यह लोग हैं कि इतने दिन से कथा सुनते हैं और बुड्ढे होने आये परन्तु घरबार में ही फँसे पड़े हैं।

शिक्षा

वे लोग जिन्हें लेक्चर सुनने का व्यसन है अपने समय को तो बरबाद करते ही हैं किन्तु उपदेशक के कथन का भी तिरस्कार करते हैं ऐसे लोग मिट्टी की सी मूर्त्तियाँ हैं।

शठ से सावधान

एक दिन एक गीदड़ नदी में पानी पी रहा था कि झट से मगर ने टाँग आन पकड़ी गीदड़ हँस पड़ा और बोला भाई मगर यह क्या करते हो ? मगर बोला अब तुमको पकड़ कर ज़ल के भीतर ले चलूँगा। यह सुनकर गीदड़ बोला कि यह

मेरी टाँग थोड़े ही है यह तो लाठी है। भोला मगर गीदड़ की बात में आ गया और टाँग को लाठी समझ छोड़ कर टाँग पकड़ने का इच्छुक हुआ परन्तु अब गीदड़ कहाँ टाँग के छूटते ही वह तो रवाना हो गया।

शिक्षा

इस समय हिन्दू जाति ने अपना सङ्गठन आरम्भ कर दिया है और यह संगठन ही फ़सादी और गुण्डे मुसल्मानों की टाँग है संगठन हो जाने पर फिर गुण्डों की हिम्मत नहीं रहेगी कि वे हिन्दुओं के माल को लूट सकें या उनके स्त्री बच्चों को सता सकें परन्तु चालाक मुसलमान हिन्दुओं को बहकाते हैं ये टाँग नहीं है लाठी है संगठन के सबब से ही फ़साद होते हैं आदि २। परन्तु असल में टाँग यही है हिन्दू लोग संगठन की टाँग को पकड़े रहेंगे, तो ये गुण्डेपन के गीदड़ शरारत न कर सकेंगे। और ठीक २ रहेंगे। हिन्दुओं को चाहिये कि टाँग को छोड़ें न और अपना संगठन करें। वरना यह गीदड़ भाग जायेगा।

संगठन का मूल्य

एक मूर्ख को कहीं से रेशम का थान मिल गया, उसे पाकर आप बड़े खुश हुए सोच विचार कर यह तै किया कि लाओ इसे वेंच दें जिससे कि खर्च चले। और यह भी निश्चय कर डाला कि इकट्ठा सब मत वेंचो इकट्ठे दाम जल्दी खर्च हो जायेंगे। बस थान फाड़ चीर कर कत्तरें कर डालीं। और बाज़ार में एक कत्तर को लेकर पहुंचे। जिस दूकान पर जाते लोग हँसते, और कत्तरें फेंक देते और कहते कि मूर्ख हुआ है।

अरे कत्तरें तो चाहे रेशम के थान की हों, चाहे ढाके की मलमल की हों, इनका कौन खरीदार, यह तो कूड़ा है इसके बजाय तो तू एक खजूर की चटाई ले आता तो अच्छा था। आख़िर वह आदमी पछता कर लौट आया; और रेशम के थान की बरबादी पर रोने पछताने लगा।

शिक्षा

यह हिन्दू जाति एक सुन्दर रङ्ग बिरङ्गा रेशम का थान है जिसे छुआ छूत द्वेष और फूट की कैंची ने काट २ कर जाति भेद की कत्तरें बना डाला अब इसका कोई ग्राहक नहीं सब इसे कूड़ा समझ घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

चिड़ीमार की चतुराई

एक चिड़ीमार बाज़ार में एक उल्लू को और उल्लू के बच्चों को बेच रहा था। शेखचिल्ली ने जाकर पूछा कि भाई इस उल्लू की क़ीमत क्या है? चिड़ीमार बोला १ रुपया। शेख़चिल्ली बोले और बच्चे की? चिड़ीमार बोला २ रुपया। शेख़चिल्ली बोले यह क्यों? चिड़ीमार ने कहा जनाब यह तो उल्लू ही है, मगर यह उल्लू भी है और उल्लू का बच्चा भी, इसमें दो सिफत हैं, इसलिये इसका मूल्य दूना मांगता हूँ।

शिक्षा

ईसाई लोगों का मत ठीक चिड़ीमार का सा है खुदा से ज़्यादा ईसा का मान करते हैं और कहते हैं कि ईसामसी में दोनों सिफ़तें थीं। खुदा भी था और खुदा का बेटा भी। जिस प्रकार चिड़ीमार की बात मूर्खतापूर्ण थी उसी प्रकार

ईसाइयों का मत भी मूर्खतापूर्ण है। असल में ईसा न खुदा था न खुदा का बेटा, किन्तु एक होशियार मनुष्य था।

ईश्वर पर भरोसा

प्रजा की दशा देखने के लिये एक दिन अकबर बादशाह एक गाँव में जा निकले, और वहाँ एक सरलहृदय जाट के महमान हुये। जाट ने अपनी समझ में अच्छी खातिर करी, ताजा दूध, मकाई की रोटी, चौलाई का साग बादशाह के सम्मुख रक्खा। निरभिमान अकबर ने भी इस सादे सत्कार को सहर्ष स्वीकार किया। इसके उपरान्त बात चीत होती रही। जाट की सीधी सादी छल रहित बातों का अकबर पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने यहाँ जाट को आने का निमन्त्रण दिया; और यह भी कहा कि जब कभी कोई आवश्यकता हो तो मुझे याद करना, और देहली में शाह अकबर के नाम से पूछ लेना। बादशाह बिदा हुए कुछ दिन के उपरान्त जाट को कुछ रुपयों की आवश्यकता हुई तब वह अपने मित्र को मिलने के उद्देश्य से देहली को चला। जाट को शाह तो याद नहीं रहा केवल अकबर याद रहा। जिसे वह अपनी बोली में अकबरा कहता था। बस यही बूझता २ वह देहली में घूम रहा था। लोग मुहल्ला बूझते थे और पता बूझते थे तो जाट कुछ बतला न सकता था। इस पर लोग हँसी उड़ाते थे। "कैसा मूर्ख है इतनी बड़ी दिल्ली में केवल नाम से पता लगाना चाहता है" जाट बहुत परेशान था। अपने अकबरा को ढूँढते २ उसे शाम हो गई थी इतने में ही उसने बाजार में सिपाहियों को भीड़ हटाते २ कहते सुना कि "हटो बादशाह सलामत की सवारी आरही

है" लोग यह सुन कर इधर उधर संभल कर खड़े हो गये। जाट ने बादशाही सवारी कभी न देखी थी, देखने के लिये सड़क के किनारे खड़ा होगया। इतने ही में शाही सवारी आई, जाट ने शाह का हाथी जो देखा तो उछल पड़ा; और ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा "अकबरा २" अकबर ने जो निगाह घुमा कर देखा तो जाटराम को पुकारते पाया। बस हाथी बैठा दिया और जाट को हाथी पर सवार करा लिया। दर्शक बादशाह के व्यवहार को देखकर चकित होगये। बादशाह जाट को देहली के दृश्य दिखाता और उनके हाल बताता जाता था। और जाटराम खुश हो हो कर कहते थे कि "वाह रे अकबरा थारे तो बड़े ठाठ हैं" बाजार में घूम फिर कर बादशाह क़िले में पहुँचे। जाट ने जो क़िला देखा तो बोले "भैया अकबरा थारी बक्खल तो बहुत चङ्गी है" अब शाही महल में जाटराम पहुँचे देख कर भौचक्के रह गये शाही खाने सामने आये बोले "अकबरा थारे तो चंगे २ ठाट हैं" अकबर भोले भाले देहाती की बात पर मुस्करा देता था। अब रात हुई अकबर के महल में ही जाट भी सोया। प्रातःकाल मुल्लों ने अजान दी। अकबर नमाज़ के लिये उठा। जाटराम भी खाट पर बैठे ही बैठे "सीताराम" का जप करने लगे। अकबर ने नमाज़ पढ़ दोनों हाथ फैला ईश्वर से बरकत माँगी। जाट ने इस कृत्य को बड़े ग़ौर से देखा। बादशाह नमाज से उठे तो जाट ने बूझा कि भैया तूने हाथ फैलाकर क्या करा था। बादशाह बोले ख़ुदा से बरक़त मांगी थी। जाट बोला "थारे पास तो सब कुछ है और क्या माँगा;" अकबर ने "कहा भाई यह सब सम्पदा भी उसीसे माँगी है और उससे ही और माँगता हूं।"। जाट ने कहा कि अच्छा तो क्या यह सब सामान तुझे माँगे का ही मिला है।

अकबर ने कहा कि हाँ ! तब जाट अपना लट्ठ और कम्बल उठा घर चलने को तैयार हुआ । अकबर ने कहा कि क्यों भाई यह क्या, जाते कहाँ हो ? और कैसे आये थे यह तो बताओ ? जाट बोला कि तुझ से कुछ रुपये लेने आया था, सो अब मुझे मालूम हुआ कि तू ने ईश्वर से माँग कर सब राज पाट लिया है मैं भी ईश्वर से माँगूगा, जो तुझे राज पाट दे सकता है क्या वह थोड़े से रुपये न देगा । अकबर ने यह सुन जाट को बहुत रोकना चाहा और रुपया भी देना चाहा परन्तु जाट ने न तो रुपया ही लिया और न फिर रुका अकबर को प्रणाम कर सीधी घर की राह पकड़ी ।

शिक्षा

ईश्वर से ही मांगो वही सब की बिगड़ी बना सकता है। उसका ही आश्रय लो । धन्य है उस ग्रामीण जाट को कि जिस ने सम्राट् के सहारे को छोड़ ईश्वर में विश्वास किया । एक आज कल के लोग हैं कि जरा २ सी नौकरियों के लिये ईश्वर से विमुख हो देश धर्म और जाति का विरोध करने लगते हैं ।

ढोंग भरी ईश्वर प्रार्थना का फल

किसी गाँव में एक मुसलमान तेली रहता था । वह नमाज़ आदि मुसलमानी बातों को निबाहने के कारण "मुल्ला जी" कहकर पुकारा जाता था । अपने मत के ढोंग कर कर के सब पर बड़ा रोब गाँठे रहता था, उसके पड़ोस में ही एक कुम्हार का घर था । कुम्हार था सीधा सादा नेक । तेली जब अज़ान लगाता तो कुम्हार का गधा भी इसके स्वर में स्वर

मिलाता। इस पर तेली बड़ा झुँझलाता, कुम्हार से कहता कि तुम अपने गधे को रोको, वह मेरी नमाज में बोल कर खलल डालता है। कुम्हार बोला भाई! गधा तो पशु है मैं उसे कैसे समझाऊँ सम्भव है कि यह भी पूर्वजन्म का मुल्ला हो; और तुम्हारी अजान के शब्द कान में पड़ते ही पूर्व स्मृति के कारण बोला करता हो। यह सुन कर तेली बड़ा कुढ़ा; और उस दिन से रोज गधे की मृत्यु के लिये अल्लाह ताला से दुआ माँगने लगा। दैववशात् थोड़े ही दिन उपरान्त तेली का बैल मर गया। अब तो तेली बड़ा पछताने लगा और ईश्वर को दोष देने लगा, नमाज भी पढ़ना छोड़ बैठा और कहने लगा कि अल्लामियां की अक्ल जाती रही। तभी तो उसे बैल और गधे की पहचान नहीं रही, कहा गधा मारने को और मार डाला बैल को।

शिक्षा

पाखंडी प्रार्थना वाले ईश्वर से ऐसी ही अंट संट प्रार्थनायें करते हैं। यदि ईश्वर इनकी ऐसी द्वेष भरी प्रार्थनायें सुने तो संसार में सारे नियम नष्ट हो जायें। मतवादियों के यहाँ ऐसी ही स्वार्थयुक्त प्रार्थना भरी पड़ी हैं। प्रार्थना का प्रयोजन हृदय को नम्रता से भरना और इच्छा-शक्ति को बढ़ाना है। किसी के अकल्याण की प्रार्थना करना या स्वार्थ-साधन करना प्रार्थना नहीं। हमें ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये। यथा वेद में—"विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रन्तन्न आसुव" हे प्रभो हम में से बुराइयों को दूर करो, हमें भलाइयों से युक्त करो वा "याँ मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते तयामामद्यमेधयाग्ने मेधाविनंकुरु" हे भगवन्

जिस धारणावती बुद्धि की देव और पितृ गण उपासना करते हैं उससे मुझे युक्त करो ।

संसार का मोह

किसी नगर में एक लाला जी रहते थे रात दिन माया मोह में मस्त न धर्म का ध्यान न परलोक का ज्ञान था । दुकान के धन्धे में लिप्त रहना और जिस तिस प्रकार धन कमाना उनका काम था । एक दिन नारद जी उधर आ निकले और बोले लाला कुछ भगवत-चर्चा भी सुन लो । लाला बोले महाराज मुझे इतनी फ़ुर्सत कहाँ कि तुम्हारे भजन सुनूं । नारद जी बोले । तुम भजन सुनो स्वर्ग की प्राप्ति होगी । लाला जी बोले महाराज ! मुझे अभी स्वर्ग जाना नहीं है । नारद जी बोले क्यों । लाला बोले, महाराज ! लड़के का विवाह करलूं और उसे दुकान का कार बार सौंप दूं, फिर आप के भजन भी सुनूंगा और स्वर्ग भी चलूंगा । नारद जी चले गये । थोड़े दिन उपरान्त जो आये तो देखते क्या हैं कि लाला जी कुत्ते की योनि धारण करे द्वारे पर बैठे हैं । नारद जी बोले, क्यों भाई अब तो कुछ भगवान् की चर्चा सुन लो । कुत्ता-रूपधारी लाला बोले, महाराज सुनता तो सही, परन्तु इतना अवकाश नहीं, लड़का दुकान को गया है बहू अकेली है सो घर की रखवाली कर रहा हूँ, एक दो पोता पोती के मुख देख लूं तब आपका उपदेश भी सुनूंगा और स्वर्ग भी चलूंगा । नारद जी चले गये और थोड़े दिन उपरान्त लौट कर आये तो क्या देखते हैं कि कुत्ते का शरीर त्याग लाला का कका कलरव (शरीर) धारण किये घर के द्वार पर स्थित नींव पर बैठे हैं । नारद

बोले कहो लाला अब स्वर्ग को चलते हो। वायस-वेषधारी लाला बोले महाराज चलता तो सही किन्तु पोता पोती छोटे छोटे हैं। अभी कुछ दिन और ठहरिये। नारद जी चले गये कुछ दिन उपरान्त लौटे तो क्या देखते हैं लाला घर के पन्नाले (नाबदान) में पड़े रेंग रहे हैं। नारद जी बोले भाई नाली के कीड़े बने पड़े हो अब तो स्वर्ग को चलो। मोरी के कीड़ा-रूप में पड़े लाला बोले महाराज आप क्यों मेरे लिये बार बार कष्ट उठाते हो मेरा चित्त घर छोड़ने को नहीं चाहता।

शिक्षा

संसार की माया में फँसकर मनुष्य असली सुख की परवाह नहीं करता, घोर से घोर कष्ट उठाता है परन्तु उसी माया में फिर घुसता है और वासना के वशीभूत होकर नाना प्रकार की कुयोनियों में जन्म पाता है।

करनी का फल

किसी नगर में एक गृहस्थ अहीर रहता था उसकी स्त्री के बाल बच्चा नहीं हुआ इसलिये मूर्ख धूर्त न्योते स्यानों से उपाय बूझती और गण्डे तावीज़ बाँधती फिरती थी। एक दिन किसी पाखण्डी ने उस मूर्ख नारी से कह दिया कि तू अमुक दिन रात किसी के घर में आग लगा दे बस फिर तो सन्तान अवश्य हो जायेगी क्योंकि हमारे गुरू का वचन है "जले मोख खुल कोख" उस मूढ़ स्त्री ने उस पाखण्डी की बातों में आकर एक भले गृहस्थ के घर में आग लगा दी अग्नि के प्रचण्ड होते ही मनुष्य तो भाग कर बच गये परन्तु पशु वहीं भुनकर रह गये। इस घटना के कुछ दिन उपरान्त अहीरनी के सन्तान होने लगी। और यहाँ तक कि वह सात आठ

बच्चों की माता बन गई। परन्तु एक बात यह हुई कि उसका बुड्ढा ससुर अपने पोते पोतियों को देख-देखकर कहा करता "हे ईश्वर तेरे यह अन्धेर". बुड्ढे की इस बात से बहू बहुत नाराज़ होती, और इसी बात पर बुड्ढे को खरी खोटी सुनाया करती, और सबसे कहा करती कि यह अभागा बुड्ढा पोते पोतियों को देखकर जलता है। यों ही कुछ दिन बीत गये और बुड्ढे के पोते पोती बड़े बड़े हो गये, उनके विवाह शादी की चर्चा चलने लगी। अहीरनी बड़ी प्रसन्न फिरती थी कि अचानक उसकी बड़ी सन्तान को काल ने गाल में रख लिया, अहीरनी उसके शोक में ही थी कि दूसरी तीसरी गरज़ यह कि थोड़े ही समय में सारी सन्तानें स्वर्ग सिधार गईं। अब अहीरनी के शोक का क्या ठिकाना था। भरी गोद खाली हो गई। हरा भरा बाग़ उजड़ गया। कलेजे के टुकड़े आँखों की पुतलियाँ जाती रहीं। शोक से बेचैन हो दिन रात कलपती थी। किन्तु बुड्ढा उसके रोने पीटने को सुनकर कहा करता कि 'हे ईश्वर तेरे देर है अन्धेर नहीं है" बुड्ढे के यह शब्द बहू के घायल हृदय पर नमक का काम देते थे। एक दिन बहू ने बुड्ढे को बहुत कुछ बुरा भला कहा। दुंद सुन मुहल्लेवाले अड़ोसी पड़ोसी इकट्ठे हो गये। बहू ने सब के सामने बुड्ढे के शब्द सुनाये। जिन्हें सुनकर सब लोग बुड्ढे को ही दोष देने लगे। तब बुड्ढे से न रहा गया और उसने सबके सामने अपने वाक्यों की व्याख्या सुनानी आरम्भ करी। बुड्ढा बोला कि भाइयो ऐसा कौन अभागा हो सकता है, जो पोते पोतियों को देखकर जले और उनके मरने पर प्रसन्न हो। वास्तव में बात यह है कि मेरी इस पतोहू ने मुहल्ले में आग लगाई जिसमें कई गायें और बछड़े बछियाँ जल मरे यह घोर पाप

करने के उपरान्त इसके सन्तान होने लगी। मुझे इसपर बड़ा आश्चर्य हुआ। तब मैं कहता था कि "हे ईश्वर तेरे यह अन्धेर" परन्तु मैं समझता हूँ कि वे आग में जलकर मरे हुए पशु इसके उदर में अपना बदला लेने के लिये जन्मे थे। जब पल कर परवरिश पा चुके तब ही इसे शोक और दुःख सागर में डुबा कर चलते बने। जैसे इसने आग लगाकर अनेक जीवों को कष्ट दिया था वैसे ही आज यह कष्ट पा रही है। इसलिये मैं अब कहा करता हूँ "हे ईश्वर तेरे देर है अन्धेर नहीं है" यह सुनकर सब लोग बुड्ढे की न्याय निष्ठा की प्रशंशा करते चले गये। और बहू भी सन्तोष को धारण कर अपने पापों पर पछता कर अपने बुड्ढे ससुर की सेवा करके उसके आशीर्वाद से परलोक सुधारने लगी।

शिक्षा

१—सदा न्याय की बात कहनी चाहिये चाहे अपने व अपने घर वालों के भी विपरीत हो। २—बुरे काम का फल बुरा और भले का भला मिलता है। ३—चाहे भी किसी वक्त मिले कर्म का फल मिलता अवश्य है। न्योते स्यानों के कहने में आकर मूर्ख स्त्रियाँ बड़े अनर्थ कर डालती हैं इसलिये इन्हें शिक्षा देनी चाहिये। जादू टोने मन्त्र मन्त्र भूत प्रेत की अविद्या भली वार्तों का खण्डन कर स्त्रियों को ठगों के जाल से बचाना चाहिये।

कन भर पुण्य मन भर मांग

एक बुढ़िया प्रति मङ्गलवार को हनुमानजी के मन्दिर में जा मूर्ति पर छदाम का तेल चढ़ाया करती थी और कहा

करती थी, कि हे हनुमानजी महाराज ! ऐसी कृपा करो कि छुन्नू, मुन्नू, सोहन और मोहन मेरे चारों बेटों पर एक २ लाख रुपया हो जायें, यदि ऐसा हो जायगा तो मैं तुम्हारे ऊपर हर मंगल को धेले का तेल चढ़ाया करूँगी। इस प्रकार तेल चढ़ाते और दुआ माँगते २ बुढ़िया को एक मास व्यतीत हो गया, तो एक दिन बोली, कि हनुमानजी महाराज! तुम्हारी सेवा तो व्यर्थ ही गई, मेरा तेल भी व्यर्थ ही जा रहा है, जल्दी एक २ लाख रुपया मेरे बेटों को दो तो तुम पर अब से दूना तेल चढ़ाया करूँ। बुढ़िया की यह बड़ सुन हनुमानजी से न रहा गया, और एक लात बुढ़िया की कमर में जमाई और बोले, राँड़ दो पैसे महीने का तेल तुझसे लेकर जो मैं ४ लाख रुपया तुझे दूँ क्या मैं मूर्ख हूँ, ४ लाख रुपये में तेल के ४ तालाब बनवा कर चाहूँ तो दिन रात न लोटा करूँ।

शिक्षा।

जरा सा काम करके अधिक फल चाहना धर्म वञ्चना है आजकल दो आने मासिक चन्दा देकर सैकड़ों का लाभ उठाने वाले इस बुढ़िया के समान ही हैं।

इस बहिश्त से दोजख भली

एक बार कोई जाट और एक मुल्ला जी साथ जा रहे थे मुल्ला जी ने सीधे सादे ग्रामीण मनुष्य को पाकर इस्लामी जाल फैलाना शुरू किया, और बोले कि चौधरी तुझे कुछ पर-लोक की भी फ़िक्र है। बाद मरने के जब अल्लामियाँ के सामने पहुँचोगे तो कैसे करोगे? जाट बोला कि "मुल्ला जी मैं तो बे पढ़ा आदमी हूँ। ज्यादा तो नेम धर्म भक्ति पूजा जानता नहीं।

हाँ इतना अवश्य है कि मैंने अब तक न तो किसी को सताया न बकरा मुर्ग़ा आदि पशु पक्षियों को मारा, न कभी मांस मछली शराब आदि अभक्ष्य पदार्थ मुख से लगाये, न झूठ बोला, न दूसरों की बहू बेटियों को बुरी दृष्टि से देखा, खेती करके पेट पालना, और ईश्वर का नाम लेके सोना, और ईश्वर का ही नाम उठकर लेना, इसी प्रकार आधी आयु बिताई है और ईश्वर से प्रार्थना है, इसी भांति शेष आयु भी काट दे" यह सुन मुल्लाजी बोले "अरे बेवक़ूफ़ इससे क्या होता है। यह तो तैंने अपने आप अपनी तारीफ करी, मगर नेक अखलाकी से बहिश्त तो नहीं मिलता, बहिश्त तो फ़कत ईमान वालों के लिये है, मगर तू तो काफ़िर है, ईमान से दूर है, फिर सिवा दोज़ख़ के तुझे और क्या मिलेगा।" जाट बोला मुल्लाजी ईमान क्या होता है? मैं तो अब तक अपने बर्ताव को ईमानदारी ही समझता हूँ। मुल्ला जी बोले "तू ग़लती करता है, ईमान कहते हैं, अल्लाह पर, मुहम्मद से पहिले इब्राहीम वग़ैरा नबियों पर, फ़रिश्तों पर, मुहम्मद साहब की रिसालत पर, क़यामत के दिन मुर्दों के क़बर में से उठने पर, यक़ीन करना" जब तक कोई आदमी इन तमाम बातों पर यक़ीन कर मुसलमान नहीं बनता कितना ही नेक हो दोज़ख़ में डाला जायेगा। बहिश्त फ़कत मुसलमानों के लिये हैं। अगर तू चाहे तो बस कलमा पढ़ले और परलोक को सुधार ले। जाट अब समझ गया कि यह मुसलमान बनाने के लिए फन्दे में डाल रहा है, तब वह बोला "अच्छा मुल्लाजी तुम्हारे बहिश्त में क्या होगा?" मुल्ला जी बोले "बाग़ बग़ीचे मेवों से लदे हुए दूध शराब की नहरें कबाब, ७० हूरें, बहत्तर ग़ुलाम, काम कुछ नहीं, मजे में खाना पीना हूरों के संग मजे उड़ाना"। जाट बोला और दोज़ख़ में

क्या होगा ? मुल्लाजी बोले "आग गन्धक बदबू यही दोजख में होगा।" जाट बोला तो मुल्लाजी तुम्हारी बहिश्त से हमारी दोजख ही अच्छी जहाँ काम करने को मिलेगा। तुम तो बहिश्त में निकम्मे बैठे २ खाओगे और ७० स्त्रियों से विषय भोग करोगे निकम्मे रहने और विषय भोगों में लिप्त होने से रोग उत्पन्न होते हैं बस इधर तो तुम लोग रोग ग्रस्त होओगे उधर हम लोग आग को बटोर २ कर एक स्थान पर करेंगे और रीती भूमि पर खोद २ कर खेती करेंगे काम करने से शरीर से निरोग रहेंगे बलवान् रहेंगे। खेती में अनेक प्रकार के अनाज बोयेंगे। पशु पालेंगे, दूध दही खायेंगे। आग से रोटी का काम कोल्हुओं में रस पकाने काम लेंगे, और तुम बीमारों को जब आग की जरूरत होगी तो हमारे यहाँ लेने आया करोगे, बस उसके दाम तुम से लिये जायेंगे, बस तुम्हारी बहिश्त से तो हमारी दोजख भली रहेगी। मुल्लाजी जाट की बातें सुन चुप रह गये।

शिक्षा

पुरुषार्थी के लिये हर जगह सुख है और आलसी विषय लम्पटों को सर्वत्र दुःख है।

तोबा ऐसी बहिश्त से

खुदाबख्श जुलाहा मुसलमानी मत में बड़ा कट्टर था। लम्बी २ नमाजें पढ़ता, मुहर्रम में सब से आगे छाती कूटता चलता, बुड्ढा हो गया था, दो दाँत सिर्फ मुँह में रह गये थे, कमर टूट गई थी, लम्बी दाढ़ी कटी मूंछे पोपला मुँह अजब हुलिया थी आँखों के पलक बमनियां (बीमारी) के खाये सिर

गञ्जा, मगर अपने पड़ोसी हिन्दुओं को सताने के लिये जवान बना रहता था जब यह मरा बहिश्त में दाखिल हुआ ७० हूरें जो कि इसकी पोती की उम्र की थीं सामने शराब के प्याले लिये आ खड़ी हुईं और खुदाबख्श के हुलिये से खुश होकर लगीं खेलने, कोई गञ्जी चाँद पर थप्पड़ जमाती, कोई दाढ़ी पकड़ कर हिलाती, कोई कमर में लात मार कर कहती बूढ़े बन्दर ज़रा नाच तो दिखा दे, बस घण्टे डेढ़ घण्टे में बूढ़े खुदाबख्श का क़ाफ़िया तङ्ग हो गया और कहने लगा "तोबा ऐसी बहिश्त से" अरे इस बहिश्त के लिये मैंने हिन्दुओं के बच्चों को बहकाया, उनकी स्त्रियों को वरग़लाया, उन से लड़ता रहा, सैकड़ों जीव जन्तुओं की हत्या करी, क़ब्र ताज़ियों पर मारा फिरा, और इस बहिश्त की यह हालत। खुदा! बचा मुझे। तब खुदा ने कहा 'मूर्ख तू तो मुसलमान है पुनर्जन्म की आयु भर हँसी उड़ाता रहा है, तुझे युवा शरीर तो मिल नहीं सकता पुनर्जन्म को मान, हिन्दू बन या योंही धक्के खा।" खुदाबख्श बोला, महाराज मैं हिन्दू होने को तैयार हूँ, यहाँ से छुड़ाइये। तब भगवान् ने कहा अच्छा जा तेरा जन्म अभी निकृष्ट सूकर योनि में होगा, क्योंकि तू इस सीधे जानवर के जो तेरी ग़न्दगी को साफ़ करता रहा, और मेरा बनाया हुआ है घृणा और बैर करता रहा है, इसलिये अभी इसी में जा, और धीरे २ उन्नति करके मनुष्य बनना, तब हिन्दू धर्म को अमल करके सबकी रक्षा करना।

शिक्षा

मुसलमानी बहिश्त में विषय-भोग सम्बन्धी गपोड़े हैं इस लालच से विषयी और लम्पट स्वभाव के लोग मुहम्मदी

मत में फँस नाना प्रकार के पाप खुदा-नाम पर करते और अपनी वासना को विगाड़ कर बुरी २ योनियों में जाते हैं बहिश्त एक धोखे की टट्टी है।

माया कूप

एक सौदागर छकड़ों और वैलों पर माल लादे आप रथ पर सवार किसी जंगल में जा रहा था दैव संयोग से आँधी आगई और उसके रथ के घोड़े मार्ग से विचल गये, रथ टूटा, घोड़े इधर उधर हुए, सौदागर एक पुराने कुएँ में जा गिरा। कुएँ के किनारे पर पुराना वड़ का वृक्ष खड़ा था, उसकी जड़ें कूप के भीतर लटक रही थीं, गिरते हुए सौदागर ने उस जड़ को पकड़ लिया। उधर मेघ घिर आया रात्रि का अन्धकार छाय गया। सौदागर जीवन से निराश कूप में लटका है। परन्तु उस स्थान पर भी सौदागर के मुख पर एक मीठी बूँद आन कर गिरी, सौदागर उसे चाट कर वड़ा प्रसन्न हुआ। इसी प्रकार लगातार बूँदें गिरती जाती हैं सौदागर चाटता जाता है। अब सौदागर का ध्यान उधर ही लग गया। परन्तु उसी घने अन्धकार में विजली चमकी तो सौदागर देखता क्या है, कि वृक्ष पर मुहाल लगी हुई है, जहाँ से शहद बूँद २ टपक रहा है, और जिस जड़ को सौदागर पकड़े लटक रहा है, उस जड़ को एक सफ़ेद और एक काला चूहा काट रहे हैं। विजली फिर चमकी सौदागर ने नीचे निगाह करी, देखता क्या है कि कुएँ में एक अजगर मुँह फैलाये फुफकार रहा है, बस सौदागर के लिये एक ही उपाय था कि वह बिजली की चमक में उस जड़ के सहारे कुएँ से निकल जीवन

लाभ कर ले। परन्तु शहद की मीठी बूँद के स्वाद में ऐसा मस्त है कि क्षण भर विचार करके फिर भूल जाता है।

शिक्षा

यह जीव विषयवासना रूप इच्छाओं की आँधियों में फँसकर अपने इन्द्रिय रूपी घोड़ों के विचलित हो जाने से "माया-कूप" में गिर पड़ता है। वहाँ इसकी आयु की रस्सी को दिन रात के काले और सफ़ेद दो चूहे काट रहे है मृत्यु रूप अजगर नीचे मुंह फाड़े बैठा है, कि जब आयु की रस्सी वृक्ष की जड़ कटे, तभी यह जीव अजगर (मृत्यु) के मुख में जाये। परन्तु इस मोह रूप बड़ के वृक्ष में से स्त्री पुत्र आदि संसारी सुख रूप शहद की बूँदों को चाखकर यह जीव भूल में पड़ गया है, और गुरु के उपदेश रूप बिजली की चमक को पाकर भी 'माया-कूप' से बाहर नहीं निकलता। यह दशा सारे संसार की है। हमें चाहिये कि भगवान के भजन से अपने जन्म को सफल बनावें।

मक्कार मित्र

किसी वन में एक ऊँट और गीदड़ साथ २ रहते थे। गीदड़ ने ऊँट से कहा, कि आओ मित्र खेती करें। ऊँट ने कहा, बहुत अच्छा। बस दोनों ने मिलकर ईख की खेती करी। जब खेत पक कर तैयार हो गया। तब ऊँट से गीदड़ बोला, अच्छा अब बटाई कर लो। ऊँट बोला, तुम ही बाँट दो, जो दे दोगे वह ले लूँगा। गीदड़ ने कहा कि हम जड़ लिये लेते हैं और तुम ऊपर का भाग लेलो क्योंकि तुम बड़े हो, बस अगोले ऊँट को देकर गन्ने गीदड़ ने ले लिये। अगले

वर्ष फिर खेती की ठहरी और गेहूँ बोये गये। जब बाँट का वक्त आया। तब गीदड़ बोले, लो भाई पहिले हमने नीचे का भाग ले लिया था, इस बार आपको दिये देते हैं। बस ऊँट को भुस देकर आप गेहूँ ले लिये। ऊँट अपने सीधे स्वभाव से दोनों बार घाटे में रहा। गीदड़ ने चाल से दोनों बार नफ़ा उठाया।

शिक्षा

मुसलमानों की नीति भी गीदड़ वाली ही है हिन्दुओं से कहते हैं कि भाई तुम खिलाफ़त में साथ दो तो हम स्वराज्य के लिये साथ रहेंगे। हिन्दू भोले स्वभाव के हैं। लाखों रुपया खिलाफ़त में भी दिया जिसे मुसलमानों ने खाया। यह नहीं समझे कि स्वराज्य हिन्दुओं का ही थोड़े ही है इसमें मुसलमान भी तो साथी हैं। इधर बङ्गाल के समझौते में मुसलमान अपने लिये जगह "रिज़र्व" कराते हैं उधर सरहद्दी इलाक़ों में नहीं कराते अपने मक्का मदीने को तो अँग्रेज़ों के हाथ से छुड़ाकर अपने हाथ में करना चाहते हैं। इधर हिन्दुओं के तोड़े हुए मन्दिरों को वापस देना तो दूर किनार बने हुए मन्दिरों की भी सन्ध्या आरती बन्द कराते हैं, असल में यह मक्कार मित्र हैं, और हिन्दू भोले भाले।

छल भरा न्याय

एक दिन एक भेड़िये और लोमड़ी ने जङ्गल के मोटे ताज़े बारहसिंगे को देखा और आपस में सलाह कर दोनों ने यह तै करा कि इसे मारकर खाना चाहिये। परन्तु मारने में ऐसी युक्ति हो कि दोष भी सब इसके सिर पर ही थोपा जाय

बस ऐसी सलाह करके यह दोनों बारहसिंगे के पास पहुंचे और बोले कि भाई यह जीवन थोड़ा है न जाने कब मृत्यु आन कर गला दबा ले इसलिये ऐसा करो कि भगवान् प्रसन्न हों और स्वर्ग मिले। हमने अपने जीवन में जो पाप करे हैं, चलो देवस्थान पर चल कर उन पापों की क्षमा माँगे। बारहसिंगा इन हिंसको के मुख से ऐसी भोली भाली और धर्मयुक्त बातों को सुन कर चकित हो गया और यह विचार कर कि अच्छा है यह दुष्ट किसी प्रकार भले बन जायँ, उनके साथ हो लिया बन में एक टूटा हुआ देव स्थान था, वहाँ जाकर इन्होंने प्रायश्चित्त का ढोंग करना प्रारम्भ किया। पहले भेड़िया रोकर बोला "हाय २ मैंने बड़े पाप किये हैं, वे कैसे छूटेंगे, मैंने एक बकरी को जो कि अपने बच्चों को भूखा छोड़ अपने मुहल्ले वालों के घरों का शाक पात खाकर उन्हें दुखी करती फिरती थी मार खाया, और उसके बच्चों को भी भूख से तड़पता देख कर मैंने मार खाया है! हे ईश्वर! मेरे अपराध को क्षमा करना"। भेड़िये को रोता बिलाप करता देख, लोमड़ी कहने लगी "हे महाभाग! आप किस कारण दुःखी होते हो, आपने इसमें क्या पाप किया? उस दुष्ट बकरी को दण्ड देकर मुहल्ले वालों का कष्ट आपने मिटाया और उसके बच्चों पर तो आपने बड़ी भारी दया करी, वरना वे भूख से तड़प २ कर बड़े कष्ट से मरते आप तो निष्पाप हैं, परोपकारी हैं, आपको स्वर्ग मिलने में सन्देह नहीं। हाँ पापिन तो मैं हूँ जिसने ऐसा घोर पाप किया है कि जिस से छुटकारा मिलना बड़ा ही कठिन है। भेड़िया बोला, वह क्या पाप है जो तुम जैसी धर्मात्मा से बन गया। लोमड़ी बोली, एक मुर्गी थी इधर उधर बीट कर गन्दगी फैलाती और मुहल्ले वालों का अनाज खाकर सब को

दुःख पहुँचाती थी, मुहल्ले वालों का कष्ट देख कर मुझ से न रहा गया, मैंने उसे मार खाया; जब उसके बच्चे बिना माता के चीख २ कर दुःखी होने लगे, तब मैंने उन्हें भी खा लिया, इतना कह लोमड़ी उच्च स्वर से रोने लगी।" भेड़िया बोला, हे भागवति ! तू क्यों दुःखी होती है, यह तो तूने पाप नहीं किन्तु पुण्य किया है, मुहल्लेवालों का दुःख दूर करने के लिये तू ने उस दुष्टिनी मुर्गी को मारा तथा दयालुता के कारण उस के बच्चे तुझे खाने पड़े। तू तो बिलकुल पाप रहित है।" इस तरह आपस में एक दूसरे को निर्दोष कह कर भेड़िया और लोमड़ी तो निर्दोष बन बैठे और बारहसिंगे से बोले कहो भाई तुम भी अपना पाप सुना कर क्षमा माँग लो बारहसिंगा बोला भाई अपना क्या पाप वर्णन करूँ, सदा ईश्वर के सामने खता-वार हूँ परन्तु मैं न तो मांस खाता हूँ जो किसी जीव को सताऊँ और न मेरा चित्त हिंसक है जो किसी की हत्या करूँ हाँ एक बार कुछ गीदड़ों ने मुझे घेरा तो अपने सींगों से मैंने गीदड़ों पर आक्रमण किया गीदड़ भाग गये मैं चला आया। एक बार एक शिकारी ने जाल लगाकर मुझे पकड़ना चाहा परन्तु मैंने उसके जाल को तोड़ डाला इन बातों के अतिरिक्त मुझे तो कोई पाप अपना विदित नहीं। यह सुन भेड़िया और लोमड़ी बोले रे शठ ! इससे बढ़कर और कौन से पाप तू करता ? दिखाने को निरा सीधा बनता है और ऐसे ऐसे घोर पाप करता है। तू ने भूखे गीदड़ों को डराया और उन पर आक्रमण किया यदि तेरे सींगों से कोई गीदड़ मारा जाता, यदि दो चार गीदड़ों के तेरे सींग लग जाते तो कितना खून खराबा होता ! उन गीदड़ों के कुटुम्बियों की क्या दशा होती ? इसी प्रकार तूने शिकारी का जाल तोड़ डाला उसकी जीविका

के सहारे को ही नष्ट कर दिया, उसके कुटुम्ब को भूखों मारने के काम तूने कर डाले अरे दुष्ट यदि तुझ से पापियों को परमेश्वर क्षमा करे तो संसार में बड़ा उपद्रव मच जाये इस लिये तुझे अवश्य दण्ड मिलेगा। हाँ तेरे प्रायश्चित का एक ही तरीक़ा है कि तू मारे जाने के क़ष्ट को उठा बारहसिंगा चुप चाप इनकी बातें सुन ही रहा था कि यह दोनों उस पर टूट पड़े और बारहसिंगे को मार कर खा गये।

शिक्षा

वास्तव में हिन्दू जाति इस बारहसिंगे के समान सीधी सादी है सींग रूप शस्त्र होते हुए भी इसने किसी को न तो मारा न सताया। हाँ जो दुष्ट म्लेच्छ गीदड़ इस जाति के विध्वंस को भी आये उन्हें भी इसने डराकर ही छोड़ दिया। समूल नष्ट नहीं किया। मुसलमानों ने इस जाति को कौनसा कष्ट है ! जो नहीं दिया। इसके धर्म-मन्दिर तोड़े, स्त्रियों को भ्रष्ट किया, बच्चों को दीवारों में जिन्दा चुनवाया, उसके भोजन के मुख्य साधन अन्न दूध घी आदि की उत्पन्न करने हारी गौ को मार २ कर खाया। रात दिन तीर्थ-स्थान बरबाद कर भजन पूजन में विघ्न डाला, परन्तु हिन्दुओं ने कभी भी बदले की कोशिश नहीं करी।। आजकल भी मुसलमान लोग शक्ति भर हिन्दुओं के सताने में कमी नहीं करते कहीं लूट-खसोट, कहीं मार-पीट, कहीं बालक स्त्रियों पर हमले कर रहे हैं, कोहाट और सहारनपुर में वह कौन सा घोर अत्याचार था जो मुसलमानों ने हिन्दुओं पर उठा रक्खा। परन्तु क्या हिन्दुओं ने कुछ कहा ! राक्षस प्रकृति मुसलमान मोपलाओं ने हिन्दुओं को बरबाद किया क़त्ल किया परन्तु

लोमड़ी के न्याय ने यही कह दिया कि यह उनका मजहबी जोश था। इसी प्रकार और सब मुसलमान गुण्डों को दीनदार कह कर हिमायत की जाती है। ईसाई लोग दिन रात हिन्दू जाति के नाश का यत्न करते रहते हैं। हिन्दू-धर्म का सत्यानाश करना ही भारत-वर्ष के तमाम मिशनों का मुख्य काम बना हुआ है। मगर यह सब भी दीनदार कह कर रहमदिल सुधारक कह कर पुकारे जाते हैं। परन्तु हिन्दू जाति अपनी रक्षा के लिये अगर किसी को डरा भी देती है वा सरकार और देश के लीडर उसे बदनाम करते हैं। यदि हिन्दू जाति हसन निजामी के फैलाये जाल को तोड़ती है, यदि वह पादरियों के जाल को तोड़ती है, तो गुनहगार ठहराई जाती है और सरकार तथा देश के नेता उसे पापी ठहराते हैं, मुसलमान ईसाई उसे जगह २ बदनाम करते हैं। मुसलमान मारपीट लूट खसोट कर विनाश करते हैं इसका कारण हिन्दू जाति का सीधापन है।

मिथ्या भय से कायरता

किसी वन में गंगा तट पर बैठे हुए कुछ ऋषि लोग धर्म-चर्चा कर रहे थे। इतने ही में सन्ध्या समीप जान एक ऋषि ने कहा कि "भाई अब सन्ध्या आने को है, इसलिये चलिये कुटियों में चलें, संध्या के समय यहाँ बैठना ठीक नहीं। सब ऋषि लोग इस बात को सुनकर अपनी २ कुटी को चल दिये। ऋषियों की उक्त बात को छिपा हुआ एक सिंह भी सुन रहा था। उसने विचारा कि संध्या के आगमन से ऋषि लोग पहले ही चल दिये, इससे ज्ञात होता है कि संध्या कोई भयंकर जंतु है कि जिससे ऋषि लोग भय मानते हैं। सिंह भी चल दिया।

इसके थोड़ी ही देर बाद आँधी आ गई और सिंह आँखों में धूल भर जाने से व्याकुल हो गया। आँधी की सनसनाहट सुन-सुनकर उसके होश उड़ने लगे और उसने इस आँधी को ही संध्या समझा। अब मेह बरसना प्रारम्भ हुआ, सिंह इससे बचने के लिये एक वृक्ष के नीचे जा खड़ा हुआ। दैवात् एक कुम्हार भी अपने लदे हुए गधों को ले मेघ से बचने के लिये उसी वृक्ष के नीचे आ निकला। रात्रि का अन्धकार छा रहा था। इसलिये न तो सिंह ने कुम्हार को देखा न कुम्हार ने सिंह को इसी बीच में एक गधा अपना बोझ का बोरा डाल इधर उधर को हो लिया। रात्रि भर वर्षा रही जब तड़के में वर्षा रुकी और कुछ उजाला होने को हुआ तब कुम्हार ने चलने की तैयारी करी। गधों को गिना, भागे हुए गधे के स्थान में उसने सिंह को गिन लिया। रात्रि भर के जागने और कुछ कुछ अन्धेरा होने के कारण सिंह को पहचान न सका। बस सिंह को कान पकड़ बोरा उसके ऊपर लाद दिया, सिंह तो सन्ध्या के वहम से डरा हुआ ही था, उसने कुम्हार को असली संध्या समझा और बिना चूँ चरा किये गधों के साथ हो लिया कुम्हार डण्डे लगाता हुआ गधों के साथ २ सिंह को भी हाँकता हुआ ले जाने लगा। चलते २ मार्ग में एक सिंह से इस सिंह की भेंट हुई। उसने जब देखा कि गधों के साथ सिंह लदा चला आ रहा है तो बड़ा हैरान हुआ और पास जाकर सिंह से बोला भाई यह क्या? तुम इस दुर्दशा में कैसे फँसे जा रहे हो। स्वतन्त्र सिंह की इस बात को सुन कर लदे हुए सिंह ने कहा कि भाई मुझे संध्या ने पकड़ लिया है। इसलिये इस बोरे को लादे जा रहा हूँ। यदि बोरा उतारूँगा तो संध्या डण्डे मारेगी तू भाग जा नहीं तो तुझे भी संध्या पकड़ लेगी। स्व-

सन्त्र सिंह हँसकर बोला कि "भाई तुमको यह कैसा भ्रम हो गया है अरे ! कैसी संध्या, कैसे डण्डे, तुम सिंह हो गधों के साथ लदकर मनुष्य के डंडों से डर रहे हो। सन्ध्या तो एक समय का नाम है तुम जिससे भयभीत हो रहे हो वह एक मनुष्य है। तुम ज़रा दहाड़ तो मारो, फिर देखो कि यह मनुष्य तुम्हें छोड़कर कैसा भागता है," लदे हुए सिंह ने कहा कि "भाई मुझसे तो इतना भी साहस नहीं होगा, हाँ तुम ही दहाड़ो।" तब स्वतन्त्र सिंह ने गर्जना करी, जिसे सुन कर गधे भी भाग निकले और कुम्हार मूर्छित होकर गिर पड़ा। यह देख हर्षित हो लदे हुए सिंह ने बोझे को फेंक दिया और स्वतन्त्र सिंह के साथ जङ्गल की राह ली।

शिक्षा

ठीक लदे हुए सिंह के समान ही दशा भारतीय नव-मुसलमानों की है। वह लोग शाही ज़माने में भय से वा छूत छात और खान पान के वहम से किसी प्रकार अरब के रस्मो-रिवाज का बोझा अपने सिर पर लाद कर बद्दुओं के संग हो लिये थे परन्तु वह समय अज्ञान की रात्रि का था उस समय राजनैतिक और धार्मिक उपद्रवों की आंधी चल रही थी। ऐसे समय पर वीर राजपूतों के ऊपर मुसलमानी मत की सन्ध्या का रोबदाब पड़ गया था। इस समय आज़ाद सिंह आर्य्य समाज ने यह दशा देख कर, शुद्धि की गर्जना करी है। जिसे सुन कर इस्लाम मूर्छित हो गया है, अरबी बद्दू इधर उधर भाग रहे हैं। लदे हुए सिंह स्वतन्त्र हो रहे हैं, और जो बचे हैं उन्हे भी स्वतन्त्र हो जाना चाहिये।

स्वार्थियों की एकता

एक बार दो कुत्ते इधर उधर से एक वृक्ष के नीचे आ पहुँचे गरमी से घबराये हुए थे वृक्ष की शीतल छाया पा कर बैठ गये और आपस में कहने लगे कि भाई अब तो हमारी जाति में एकता का प्रस्ताव पास हो गया है इसलिये हम दोनों को एक दूसरे से प्रेम भरी बातें करनी चाहिये। और कभी एक दूसरे पर न तो भूकें न गुर्रावें अब लड़ाई भिड़ाई बन्द रहा करेगी। इस बात चीत को थोड़ा ही समय हुआ था कि उसी वृक्ष पर बैठी हुई चील के मुख से मांस का एक टुकड़ा भूमि पर गिर पड़ा बस उसे देख दोनों कुत्ते उठाने को झपटे और आपस में लड़ने लगे।

शिक्षा

ठीक यही दशा स्वार्थी मित्रों की है जब तक स्वार्थ सामने नहीं होता तब तक तो मित्र भाव रहता है। और जहाँ स्वार्थ सामने आया कि मित्रता टूट गई। हिन्दू मुसलमानों की एकता भी तब तक स्थिर नहीं हो सकती कि जब तक मुसलमान लोग स्वार्थी बने रहेंगे। पंजाब और बङ्गाल में हिन्दू मुसलमानों का वैमनस्य मुसलमानों के स्वार्थ के कारण ही है। मुसलमानों का स्वार्थीपन स्वराज्य मार्ग में कांटा बना हुआ है। स्वार्थ के कारण ही रईस और राजा लोग देश द्रोह कर रहे हैं। स्वार्थ त्यागने से ही प्रेम मेल और एकता रहती है।

जीवित मृतक

एक दिन शेखचिल्ली वृक्ष पर चढ़ा हुआ उसी शाखा को काट रहा था कि जिस पर बैठा था। दैवात् किसी ओर से

एक साधु आ पहुँचे। शेखचिल्ली की यह मूर्खता देख कर बोले भाई इस प्रकार बैठ कर शाखा को मत काटो नहीं तो गिर पड़ोगे। शेखचिल्ली समझ की बात को कब मानने वाले थे, बोले चल अपना काम कर, हमें बहकाता है। साधु विचारा हँसकर चुप रहा। थोड़ी देर में शाखा के कटते ही शेखचिल्ली भूमि पर आ रहे। सँभल कर उठे और साधु के चरणों पर गिर कर कहने लगे, कि तुम तो जरूर २ कोई महापुरुष हो। अन्यथा तुमने यह कैसे जान लिया कि अब मैं गिर पड़ूँगा, कृपा करके आप मुझे यह बता दीजिये कि मैं कब मरूँगा साधु इस प्रकार इस मूर्ख की बातें सुन बड़ा हैरान हुआ कहने लगा कि भाई मुझे क्या मालूम कि तुम . कब मरोगे। परन्तु शेखचिल्ली किसी प्रकार भी न माना और साधु के चरण पकड़ बैठ गया तब इस आग्रह को देख पीछा छुड़ाने के लिये साधु ने शेखचिल्ली के हाथ में एक डोरा बाँध दिया और कह दिया कि जब यह डोरा टूटेगा तब ही तुम्हारा काल होगा। इसके उपरान्त साधु और शेखचिल्ली ने अपना २ मार्ग लिया।

कुछ दिन बाद पुराना पड़ जाने के कारण डोरा टूट गया बस फिर क्या था शेखचिल्ली भी धड़ाम से गिर कर भूमि पर लम्बे २ लेट गये; और चिल्ल पुकार मचाने लगे कि "दौड़ना हम मर गये" यह सुन अड़ोसी पड़ोसी घरवाले सब दौड़ आये। देखते हैं शेखचिल्ली लम्बे २ हट्टे कट्टे पाँव फैलाये लेटे हैं। लोगों ने पूछा कि तुझे साँप ने डस लिया क्या ? वा और कोई कारण हुआ हो तो बताओ। शेखचिल्ली बोले और तो कुछ कारण नहीं है। यह डोरा टूट गया है। जिस महात्मा ने यह डोरा बाँधा था, उसने कह दिया था कि जब डोरा टूट जावेगा तभी तुम मर जाओगे अब क्योंकि यह डोरा टूट गया

इसलिये हम मर गये। लोग यह सुन हँसने लगे शेखचिल्ली हँसते हुओं को देखकर बहुत अप्रसन्न हुए। बोले हम तो मरे पड़े हैं, और तुम लोग रोने के स्थान में उलटा हँसते हो। अब हमारे लिये कफ़न लाओ, और हमें स्मशान ले चलने की तैयारी करो लोग फिर हँसने लगे। अब शेखचिल्ली नाराज़ होकर खड़े हो गये और बोले तुम लोग हमें स्मशान नहीं ले चलते तो हम स्वयं स्मशान में जाते हैं, यह कहते हुए स्मशान को चल दिये वहाँ जाकर लेट रहे। रात्रि में उधर से कोई मनुष्य मार्ग भूलकर आ निकला, और पुकार २ कर कहने लगा कि भाई कोई मनुष्य हो तो मुझे मार्ग बता दो। उस मनुष्य की पुकार को सुनकर पड़े ही पड़े शेखचिल्ली बोले कि भाई मार्ग तो हम बता देते परन्तु करें क्या हम तो मरे पड़े हैं। वह मनुष्य शेखचिल्ली के शब्द सुन उस स्थान पर पहुँचा, और लेटे हुए शेखचिल्ली से बोला कि भाई तुम तो हट्टे कट्टे तन्दुरुस्त आदमी हो। तुम अपने को मृतक कैसे कह रहे हो। शेख चिल्ली ने अपनी मृत्यु का सब वृत्तान्त सुनाया। जिससे वह पथिक (मुसाफिर) बड़ा दुःखी होकर आश्चर्य करने लगा कि जीवित मृतक भी होते हैं।

शिक्षा

ठीक शेखचिल्ली की भाँति हिन्दू जाति भी आज जीती हुई भी अपने को मृतक समझ रही है इसके अङ्ग का एक बहुत बड़ा भाग व्यर्थ ही अछूत बन गया है बहुत सा भाग कायर और डरपोक हो गया है २२ करोड़ हिन्दू सात करोड़ से कम मुसलमानों से डरते और अपने को स्वराज्य के असमर्थ

समझते हैं। कोई कलियुग के वहम से, कोई होनी के ख़ब्त से, शेख़चिल्ली बने हुए हैं।

स्वातन्त्र्य प्रेम

एक दिन नगर का पालतू कुत्ता जङ्गल में जा निकला वहाँ उसकी किसी भेड़िये से भेंट हुई। भेड़िया कई दिन का भूखा था। भूख की निर्बलता से फिरने तक में असमर्थ हो रहा था। कुत्ते को मोटा ताज़ा देखकर बोला "भाई! तुम किस जङ्गल में रहते हो तुम तो बड़े तन्दुरुस्त हो मैं तो यहाँ भूखा मरा जाता हूँ।" कुत्ता बोला "भाई! मैं तो इस पास वाले नगर में एक महाजन के यहाँ रहता हूँ। वह मेरी खूब ख़ातिर करता है मनमौजी भोजन मिलता है इसलिये तन्दुरुस्त हो रहा हूँ।" तब भेड़िये ने कहा ऐसा है तो मुझे भी वहाँ ही ले चलो वरना मैं दो चार दिन में मर जाऊँगा। कुत्ते ने कहा बहुत अच्छा चलो, मेरे साथ साथ रहा करना। भेड़िया कुत्ते के साथ नगर को चल दिया। चलते २ मार्ग में भेड़िये की निगाह कुत्ते की गर्दन पर पड़ी तो गर्दन के पट्टे को देखकर बोला कि भाई यह क्या कोई आभूषण है? कुत्ता बोला, हाँ यह पट्टा कहलाता है रात भर तो मैं स्वतन्त्र घूमता रहता हूँ। प्रातःकाल मेरा मालिक इस पट्टे में जंजीर डालकर मुझे बाँध देता है। भेड़िया यह सुन पीछे को लौटने लगा। कुत्ते ने पूछा क्यों चलते क्यों नहीं? भेड़िया बोला भाई इस बन्धन से तो भूखों मर जाना ही अच्छा है।

शिक्षा

जो स्वतन्त्रता के प्रेमी हैं वे नौकरी आदि के लालच में फँसकर पराधीन नहीं होते चाहे भूखों मरें कष्ट भोगें परन्तु

स्वतन्त्रता का मान करते रहते हैं। परन्तु जो कुत्ते के समान आराम और टुकड़े के तलबगार हैं वे परतन्त्रता की शृंखला में बँधते हैं। आज कल पुलिस और पलटन के भारतवासियों की यही दशा है। केवल मौज से खाने पीने के लिये अपने को नौकरी की जंजीर में बाँधते हैं; और देश द्रोह आदि पाप करते हैं।

पापों की माता

एक राजा ने किसी पण्डित के उपदेश को सुनकर और तो सब पापों से घृणा कर ली. परन्तु शराब से उसके चित्त में घृणा उत्पन्न नहीं हुई। और उसने पण्डितजी से कहा कि महाराज! यदि रात्रि में थोड़ी सी सुरा का सेवन कर लिया जाये तब तो कोई हानि ज्ञात नहीं होती। क्योंकि न तो इसमें किसी को सताना पड़ता है और न कोई अभक्ष्य पदार्थ इसमें है, न व्यभिचार ही है, शुद्ध अंगूर जो कि फल है, उनका रस भभके में खिंचा हुआ है, थोड़ी सी पी और तबियत खुश कर ली पण्डित यह सुनकर बोला कि श्रीमान्‌जी! आप इसे सीधी न समझें, यह मदिरा सर्पिणी है और सम्पूर्ण पापों की माता है। राजा ने कहा हम जब तक अनुभव न कर लें नहीं मान सकते। पण्डित ने कहा बहुत अच्छा बस एक कमरे में पण्डित ने तलवार, तरुणी "स्त्री", सुरा, मांस और एक वृद्ध को बैठाकर राजा को कमरे में भेज दिया। और राजा से कहा कि यह सुन्दरी रमणी है इसे भोगिये। राजा ने कहा कि नहीं पर स्त्री गमन पाप है। पण्डित ने कहा कि यह मांस है इसे खाइये। राजा ने कहा कि माँस अभक्ष्य है मैं नहीं खा

सकता। तब पंडित ने कहा अच्छा खड्ग से इस बुड्ढे का सिर ही काट दीजिये। राजा नें कहा मैं हत्या का पाप सिर पर नहीं लेता। पंडित ने कहा कि तो क्या आप सुरा पान करना चाहते हो ? राजा ने कहा "हाँ इसमें कोई दोष नहीं मैं इसे पिऊँगा"। बस राजा ने सुरापान करी और नशे में झूमने लगा। शराब के साथ कुछ ज़ायक़ेदार वस्तुओं को भी चित्त चाहता ही है। बस राजा ने मांस को सन्मुख पा खाना प्रारम्भ कर दिया, और वह नशे में भक्ष्याभक्ष्य के विचार को भूल गया। अब राजा नशे के कारण कामोन्मत्त होकर स्त्री की ओर बढ़ा और स्व-स्त्री पर-स्त्री के विवेक को भूल गया। स्त्री ने कहा कि यह वृद्ध बैठा है इसके सामने मैं लजाती हूँ। राजा ने झट कृपाण उठा, बुड्ढे की गर्दन मार दी। और उस वेश्या के साथ कामचेष्टा में प्रवृत्त हो गया। जब प्रातःकाल हुआ राजा का नशा उतरा; तब अपनी सब करतूत को देख पछताने लगा, कि हाय मैंने नशे में क्या कर डाला। तब पंडित को बुलाकर कहा कि महाराज सत्य है यह दुष्टिनी सुरा तो सब पापों की माता है यह विवेक को हर लेती है और विवेक नष्ट हो जाने पर पाप पुण्य सब समान ही हो जाते हैं, इसीलिये नशा कभी न करना ही ठीक है।

शिक्षा

वेदादि सर्व शास्त्र इसीलिये शराब भङ्ग आदि, जितने भी बुद्धि नाशक पदार्थ हैं उन्हें त्याज्य बताते हैं।

बुद्धि के बेटे

कोई चौबे जी सन्तान रहित थे। बुड्ढे हो गये थे, घर में न काफ़ी था। बूढ़ी चौबाइन जी के सिवा और घर में कोई

न था। एक दिन चौबे जी भङ्ग के नशे में खाट पर पड़े ऊँघ रहे थे। चौबाइन जी खाट पर पड़ी खर्राटे ले रहीं थीं। रात अन्धेरी थी चोरों ने चौबे जी का भेद जान रक्खा था इसलिये नक़ब लगाकर भीतर घुस आये और बेखटके माल चुराने लगे। चौबे जी ने जो खटपट सुनी तो जान गये कि चोरों ने आज आक्रमण किया है। फिर विचारा कि यदि अकेला इनसे मुक़ाबिला करूँ तो मारा जाऊँगा, यदि चुप रहता हूँ तो आँखों के सामने ही गाढ़ी कमाई का रुपया जाता है। अन्त में मन में उपाय विचार चौबाइन जी को जगा कर बोले कि चौबाइनजी! यदि हमारे लड़का हो तो तुम उसका क्या नाम रक्खोगी? चौबाइन समझी कि आज भङ्ग के नशे में चौबेजी को प्रलाप सूझा है, इसलिये झिड़ककर बोली कि अब इस अवस्था में सन्तान कहाँ धरी है, चुप होकर सो रहो। क्यों अंट संट बकवाद में समय खोते हो। चौबे जी न माने और बराबर चौबाइन जी से नाम बताने के लिये आग्रह करते रहे। तब झुंझला कर चौबाइन जी ने कहा कि आप ही नाम रख लो। चौबे जी बोले हम तो "रामदेव" नाम रखेंगे। चौबाइन ने कहा भली बात है। चौबे जी ने फिर कहा कि यदि एक लड़का और हो जाय तो क्या नाम रक्खोगी? चौबाइन ने कहा कि तुम ही जानो। चौबे जी फिर बोले इसका नाम जयदेव रक्खेंगे। फिर चौबे जी बोले कि अच्छा यदि एक और हो जाये तो क्या नाम रक्खा जाये? चौबाइन जी ने कहा कि मुझे तो सोने दो और तुम नाम धरते रहो। चौबे जी बार २ एक २ लड़का होने की कल्पना करते और नाम धरते। यहाँ तक कि ६ लड़के चौबे जी ने गढ़ लिये फिर चौबाइन जी से बोले कि अच्छा चौबाइन यह तो बताओ कि अगर एक लड़का

और हो जाये तो फिर उसका नाम क्या धरोगी ? चौबाइन बोली कि आज क्या पागल हो गये हो जो न सोते हो न सोने देते हो। चौवे जी बोले यह लड़का सबसे छोटा और लाड़ला होगा इसलिये इसका कुछ भी नाम नहीं धरेंगे और और यह लाड़ में बिगड़ जायगा। पतंग उड़ाने चाट खाने के लिये घर से पैसे चुरा ले जाया करेगा, इसलिये इसका नाम चोर पड़ जायगा। इधर चौवेजी इस प्रकार लड़के बनाने में लग रहे थे, उधर चोर चौवे जी की बातों को सुन मन ही मन हँस रहे थे। चौवे जी की विनोद भरी बातें चोरों को बड़ी अच्छी लगती थीं, इसलिये माल बटोरने में शिथिलता कर रहे थे। और देर होती जाती थी। अब चौवेजी ने जब दस लड़के बना लिये तो बोले कि चौवाइन ! हमारे ९ लड़के पाठशाला में पढ़ने जाया करेंगे परन्तु दसवाँ तो बड़ा धूर्त्त होगा पढ़ने लिखने नहीं जायगा। इस बात पर यदि हम उसे डाटेंगे तो नाराज़ होकर घर से भाग जायगा और दिन २ भर नहीं आया करेगा। जब उसके सब बड़े भाई पढ़कर आयेंगे तब तू उन्हें चोर भाई को ढूँढ़ने भेजा करेगी, परन्तु जब ही वे उसे ढूँढ़ने जायेंगे तब ही संध्याकाल हुआ जानकर चोर लड़का घर आ जाया करेगा तब तू मुझसे कहेगी कि चोर तो घर आ गया। अब उन सब लड़कों को भी बुला लो ताकि सब सङ्ग भोजन कर लें तब मैं छत पर खड़ा होकर पुकारा करूँगा। "रामदेव जयदेव गोपाल धर्मदत्त आदि सब भाई शीघ्र आओ चोर घर आ गये" चौवे जी ने उक्त वाक्य बहुत उच्च स्वर से कहा जिसे सुनते ही उनके रामदेव आदि पास पड़ोस में रहनेवाले मनुष्यों ने आकर चोरों को घेर लिया। तब चौबाइन जी और चोरों की समझ में यह रहस्य आया।

शिक्षा

यदि चौवे जी के सन्तान होती और उस समय पास न होती तो कौन सहायता करता; परन्तु वुद्धि की सन्तान ने चौबे जी की जान माल सब वचा लिया। तभी तो कहा है, "वुद्धिर्यस्य वलं तस्य" (जिसके पास वुद्धि है वही वलवान है) गायत्री मंत्र में धन सन्तान स्त्री आदि सांसारिक वैभव की प्रार्थना न करके केवल वुद्धि की प्रार्थना इसीलिये की गई है।

अपने गज से सबको न नापो

एक दिन एक गधा और ऊँट साथ २ जा रहे थे मार्ग में एक नदी पड़ी; ऊँट तो नदी में घुस पड़ा परन्तु गधा रुका और विचार करने लगा, उसे रुका हुआ देखकर ऊँट कहने लगा कि रुकते क्यों हो चले आओ केवल कमर २ ही पानी है। यह सुनकर गधा बोला भाई तुम्हारी तो कमर २ है परन्तु मुझे तो डुवा देगा।

शिक्षा

मदान्ध धनी लोग दूसरों को भी अपने ही गज़ से नापते हैं, वे नहीं विचारते कि हमारे समान दूसरे में शक्ति है या नहीं और वे ग़रीव जो धनवानों की देखा देखी ख़र्च रूपी नदी में कूद पड़ते हैं दु:ख दारिद्य नदी में डूवते हैं इसलिये कभी यह हिर्स मत करो कि अमुक लाला जीने विवाह में इतनी धूम धाम करी है। हम भी उधार लेकर क्यों न करें, अमुक ने मेले तमाशों में इतना ख़र्च किया है। हम भी करें, उसने इतना चन्दा दिया है। हम भी दें आदि सब काम अपनी शक्ति

को विचार कर करो और दूसरों से भी उनकी शक्ति के अनु-
सार कराओ ।

साथी की सहायता न करने का फल

एक घोड़ा और एक बैल बोझ से लदे हुए साथ २ जा रहे थे मालिक ने बैल पर बोझ अधिक लाद दिया था इस लिये विचारा थक कर घबरा रहा था, मार्ग में घोड़े से कहने लगा कि भाई ! इसमें से थोड़ा बोझा आप ले लें तो मैं मञ्जिल तै कर जाऊँ, वरना मार्ग में ही मेरा ढेर हो जायगा । घोड़ा बड़ा घमंडी और स्वार्थी था कहने लगा कि वाह मैं क्यों तुम्हारा बोझ लादूँ ? लाचार बैल विचारा चलता रहा आखिर थक कर ठोकर खाकर गिरा और मर गया । मालिक ने बैल का सब बोझा घोड़े पर लादा और बैल की खाल भी निकाल घोड़े पर लादी अब घोड़ा रोता पछताता चलने लगा ।

शिक्षा

जो किसी को मुसीबत में देखकर सहायता नहीं करते वे स्वयं भी मुसीबत में फँसकर पछताते हैं । यदि हमारे पड़ोस में एक रोगी चीखता है तो नींद तो हमारी भी जाती रहती है । यदि हमारे सामने एक दरिद्री का घर है तो मैला कुचैला दृश्य तो हमें भी ग्लानि उत्पन्न करता रहेगा । यदि दुराचार और संक्रामक रोग हमारे नगर में फैल रहे हैं तो न जाने कब हम पर उनका असर आ जाये । इसलिये हमें चाहिये दीन दुःखी निर्बलों की सहायता करें, रोगियों की सेवा और दरिद्रों की सहायता करें, दुराचारियों को सदाचार मार्ग पर लायें ।

बे समझे नकल न करो

एक गधा और घोड़ा मार्ग में साथ २ जा रहे थे गधे पर रुई लदी हुई थी और घोड़े पर नमक। मार्ग में नदी जो मिली तो घोड़े ने पानी में एक दो डुबकियाँ लगा कर पानी में नमक बहाकर अपना बोझा हलका कर लिया। गधे ने जो देखा तो घोड़े से बोला यह क्या करते हो ? घोड़े ने कहा बोझ हलका करता हूँ। बस इतना सुनते ही गधा भी पानी में लोट गया। भीगने से रुई भारी हो गई, अब तो मारे बोझ के गधे की कमर टूटने लगी।

शिक्षा

जब तक यह न जान लो कि अमुक मनुष्य अमुक कार्य्य क्यों करता है स्वयं न करो। नक़ल करने वाले अपने ऊपर बोझा बढ़ाते हैं। हिन्दू जाति के रस्मो रिवाज तीज त्यौहार अधिकतर नक़ल पर चल रहे हैं इसलिये बोझा बन गये हैं।

अच्छा विनोद करो

बहुत से लड़के एक तालाब में ईंट पत्थर फेंक २ कर खेल रहे थे जिससे तालाब के जीवों को बड़ा दुःख हो रहा था। तब एक मेंढक ने किनारे पर आकर लड़कों से कहा कि तुम लोग क्यों हमारे सिर कुचले डालते हो कृपा करके तालाब में पत्थर ईंटें न फेंको। लड़के बोले क्या खूब ! हम अपना खेल छोड़ दें। मेढक ने कहा कि खेल छोड़ने को मैं नहीं कहता परन्तु ऐसा खेल खेलो कि जिससे दूसरों का अपकार (बुरा) न हो।

शिक्षा

हमें अपने विनोद के लिये दूसरों को कष्ट न देना चाहिये यह भी देख लेना चाहिये कि हमारे इस विनोद से दूसरों पर क्या बीतती है हम पक्के मकान में बैठ कर आतशबाजी छोड़ते हैं तो दूसरों की झोपड़ियों का भी तो ध्यान रखना चाहिये हम जितेन्द्रिय बनकर वेश्या नचाते हैं तो चञ्चल चित्त वाली युवती और युवकों का भी तो ध्यान करना चाहिये वेश्या का नाच, रास, स्वाँग मन्दिरों की झांकियाँ, मुहर्रम, उर्स, यह सब ऐसे ही विनोद हैं, होली और शब्बरात इन त्योहारों पर अपने विनोद के लिये दूसरों की खटिया पिढ़िया छान छपरिया होली में डालते हैं। और हवाई अनारों से जनता के सर तोड़ते हैं।

नम्र दानी

किसी नगर में एक दानी रहता था कभी भी कोई याचक उसके यहाँ से निराश नहीं लौटता था। परन्तु वह दानी दान के समय याचक की ओर न देखकर नीचे की निगाह डाले रहता था। एक भिक्षुक ने जाकर उससे दान मांगा। दाता ने उसे दान दे दिया। भिक्षुक ने फिर स्वर बदल कर मांगा। दाता ने फिर दे दिया। भिक्षुक ने तीसरी और चौथी बार इसी प्रकार मांगा दाता ने दे दिया तब भिक्षुक बोला कि मैंने आप से वाणी का स्वर बदल २ कर चार बार दान ले लिया और आपने नहीं जाना आप ऊपर दृष्टि क्यों नहीं रखते? यह सुनकर दाता ने मुस्करा कर कहा कि भाई मैं दान देते समय ऊपर निगाह नहीं कर सकता क्योंकि—

देने वाला और है देता है दिन रैन।
लोग भरम (भ्रम) मुझपर करैं ताते नीचे नैन ॥

शिक्षा

दान देते हुए अभिमान नहीं करना चाहिये क्योंकि सब वस्तु परमात्मा की है वही भाग्यानुसार सबको देता दिलाता है आज कल दो दो आने देकर लोग चाहते हैं कि उनके नाम अखबारों में छपें यह दान की उत्तम भावना नहीं है। श्रेष्ठ दान यह है देश काल और पात्र को विचार कर स्वार्थ और अभिमान रहित होकर दान दो।

स्वावलम्बन

किसी वन में एक खरगोश रहता था। हरिण, बकरी और भेड़ उस के बड़े मित्र थे और उस से कहा करते थे कि जब कोई काम पड़े तो देखना कि हम कितनी सहायता देंगे आपके लिये अपने प्राण निछावर कर देंगे। दैवात एक दिन खरगोश का पीछा शिकारी कुत्तों ने किया, तब खरगोश दौड़ कर बकरी पर पहुँचा। बकरी यह दशा देख कर बोली क्षमा करिये इस समय मैं अपने बच्चों को दूध पिला रही हूँ। तब वह भेड़ पर पहुँचा। भेड़ ने कहा कि मैं आप की सहायता अवश्य करती, परन्तु इस समय ऊन कतरवाने को अपने मालिक के पास जा रही हूँ। फिर खरगोश ने हरिण का सहारा लिया। हरिण छलाँग मार कर दौड़ता हुआ यह कहता चल दिया। मैं भी कुत्तों से डरता हूँ। लाचार खरगोश ने अपने पांवों पर भरोसा किया और दौड़ कर झाड़ी में छिप गया।

शिक्षा

सदा अपने ऊपर भरोसा रक्खे स्वावलम्बी (अपने ऊपर भरोसा रखने वाला) की सहायता ईश्वर भी करते हैं। जो हिम्मत छोड़ दूसरों के सहारे रहता है समय पर धोखा खाता है। भारतवासियों ने दूसरों का सहारा ले ले कर सारी कला कौशल और वीरता खो दी। हिन्दू लोग तो इस परावलम्बन के पाप से ही रात दिन लुटते पिटते हैं। अंग्रेजों के सहारे पर इन्होंने लठियाँ तक जलादीं मगर जब डाकू लुटेरे मुसलमानों का आक्रमण इन पर होता है तब सहारनपुर, मुलतान, कोहाट से घोर काण्ड होजाते हैं। और अंग्रेजी सेना और पुलिस खड़ी २ हिन्दुओं की दुर्दशा देखती रहती है। यदि हिन्दू लोग स्वावलम्बन का पाठ पढ़ लें तो फिर विपत्तियों से बच जायें।

अपकार में उपकार

किसी नगर में एक अन्धा धनी रहता था। उसे देख एक मनुष्य के हृदय में स्वार्थ सवार हुआ। उसने जाकर धनी से कहा कि मुझे आप की धन सम्पत्ति का कुप्रबन्ध देखकर बड़ा दुःख होता है। मैं चाहता हूँ कि आपकी रियासत का अच्छा प्रबन्ध हो इस लिये आप मुझे अपना सब काम सौंपिये और मैं यह सब भार परोपकार भाव से ही करना चाहता हूँ अन्धे रईस ने इस स्वार्थी की बातों में आकर सब प्रबन्ध और ताला कुञ्जी इस चालाक आदमी के हाथ में दे दिया। बस सब अधिकार पाकर स्वार्थीने अपना माया जाल फैला दिया और अपने भाई भतीजों कुटुम्बी सम्बन्धियों को सब कामों पर बड़ी २ तनख्वाओं पर नौकर रख दिया। अन्धे रईस के घर

वालों कुटुम्बियों नातेदारों और सन्तान तक को बहाने कर २ के उससे पृथक् कर दिया। रईस का खाना तक अपने आधीन रक्खा परन्तु उसकी बातों से रईस बड़ा खुश रहता और उस की चालाकी न समझता था प्रति वर्ष आमदनी खर्च बुड्ढे को इस प्रकार सुनाता कि सब खर्च अन्धे रईस के कामों में ही खर्च हुआ जान पड़ता और स्वार्थी मैनेजर के खर्च में एक पैसा भी न निकलता। मैनेजर साहब इस प्रकार चिट्ठा पेश करते कि बीस सहस्र की आय होती तो पाँच हजार अन्धे रईस के बालकों की शिक्षा में, पाँच सहस्र अन्धे के घरबार की दवा दारू में, पाँच सहस्र सिपाही पहरेदारों में, पाँच सहस्र के कपड़े लत्ते सवारी आदि में। मैनेजर साहब ने जो काम किया सो मुफ्त किया ही साबित होता था। और असल में सारा रुपया बड़ी २ तनखाओं के द्वारा मैनेजर साहब के घर में पहुँचता था। रईस के पुस्तकालय में जो उत्तम पुस्तकें थीं, रत्नागार में जो अच्छे २ रत्न थे, वे सब मैनेजर साहब ने चुपके २ अपने घर भेज दिये थे, अच्छी से अच्छी सब वस्तुएं अन्न धन और सम्पत्ति से रईस को कोरा कर दिया था। रईस के कुटुम्बी और बाल बच्चों को चटक मटक की चीजों और खेल खिलौनों में यहाँ तक लुभा रक्खा था कि उन्हें कुछ ध्यान ही न था। अब मैनेजर साहब की नियत में बदी और भी बढ़ी। वे विचारने लगे कि यदि इस अन्धे के बाल बच्चे बड़े होगये तो मुझे मार कर निकाल देंगे, इसलिये यही अच्छा हो कि इस रईस को एकदम बहाने से चुपके २ मारकर मैं ही मालिक बन जाऊँ। इस विचार का निश्चय कर मैनेजर ने एक काला जहरीला साँप मँगाया, और दूध में पकाने को इस विचार से डाल दिया कि साँप का विष दूध में आ जायगा, और जहरीले

दूध से रईस मर जायगा, तथा इस प्रकार छिपे हुए विष का किसी को पता भी न चलेगा। दूध औटाते २ मैनेजर को शकर की सुध आई, और उसने रईस से कहा कि मैं शकर ले आऊँ तब आपको दूध पिलाऊँगा। मैनेजर तो शकर लेने चला गया और रईस ने यह सोचकर कि दूध उफन कर आग में न गिर पड़े कर्छली से दूध को चलाना प्रारम्भ किया। दूध में विष का प्रभाव हो गया था। अन्धे को मोतियाबिन्द आदि कोई रोग था सो ज़हरीली भाप के लगते ही नेत्रों में से जल निकलने लगा, और बिकार युक्त जल के निकल जाने पर रईस को दृष्टि साफ़ हो गई। दृष्टि के साफ़ होते ही रईस को सब पदार्थ दीखने लगे। देखता है तो कढ़ाई के दूध में सर्प पड़ा है। घर के पदार्थों को देखता है तो सब साफ़ हो गये हैं। ख़ज़ाना ख़ाली पड़ा है मैनेजर के घर वाले ही सब अधिकारों पर डटे हुए हैं। तब रईस की समझ में मैनेजर की सारी चालाकी आ गई।

शिक्षा

भारत की नौकरशाही भी ठीक उसी स्वार्थी मैनेजर के समान ही है। भारतवर्ष की रक्षा और प्रबन्ध के बहाने देश की सारी सम्पत्ति नौकरशाही ने विदेश भेज दी। भारत की सन्तानें ठोकरें खाये, भूखों मरे, विदेशों में कुली बनकर कष्ट भोगे, परन्तु नौकरशाही के भाई भतीजे मोटी तनखाहें लेकर भारतवर्ष में मौज उड़ायें। इस पर भी नौकरशाही को सन्तोष न हुआ और इस बूढ़े रईस भारतवर्ष देश को जिसकी राज-नैतिक दृष्टि पर विकृत पानी आ गया था—रौलटऐक्ट आदि कठोर क़ानून के विष को भारत-रक्षा और शान्ति के दूध में मिला भारत को पिलाकर मार डालना चाहा; परन्तु इस

विषैले धुएँ से भारतवर्ष की राजनैतिक दृष्टि साफ़ होगई और सरकारी विश्वास तथा भक्ति का विकृत जाल जो देश की आँखों में छा गया था दूर हो गया। अब देश ने देखा कि सारा देश ऊजड़, देशवासी दुखी हैं, नौकरशाही और उसके घर वाले मौज मार रहे हैं।

भ्रम का भूत

किसी मन्दिर का घण्टा चोर चुरा ले गया और वन में जाता हुआ बाघ के हाथ से मारा गया, और वहाँ वह बन्दरों के हाथ पड़ गया। बन बहुत घना था, बन्दर झाड़ियों के अन्दर रहते थे, जब उनकी मौज होती घण्टे को बजाते थे। इससे नगर में यह अफवाह फैल गई कि जंगल में भूत रहता है और उसका नाम घण्टाकरण है। इस अफवाह से लोग ऐसे भयभीत हुए कि जंगल की ओर भूलकर भी कोई न जाता था जंगल से दूर २ ही सब रहते थे। जंगल से लकड़हारे लकड़ियाँ न लाते थे। घसियारे घास न लाते थे, चरवाहे जंगल में पशुओं को न ले जाते थे, शिकारी शिकार का हौसला उस जंगल में न कर सकते थे। आखिर सारे का सारा जंगल किसी भी काम में न आकर कल्पित घण्टाकरण भूत की राजधानी बन गया। अब तो राजा को भी बड़ी चिन्ता हुई और उसने स्यानों और जादूगरों को इकट्ठा कर कहा कि भाई इस भूत को इस जंगल से निकालो, वरना सारा जंगल और हज़ारों रुपये साल की आमदनी बेकार हाथ से जा रही है। सब लोगों ने अपने २ टोटके टनमन प्रारम्भ करे, पंडितों ने चण्डी का जाप, हनूमान का पाठ, मुल्लाओं ने कुरान के पाठ और वज़ीफ़े प्रारम्भ किये, किसी ने भैरों को याद किया

किसी ने लाँगुर को, काली कराली सबको मिन्नत करली, और पैग़म्बर सबको मनाया, परन्तु घण्टाकरण किसी के क़ाबू में न आये। घण्टे का शब्द सदा की भाँति सुनाई देता रहा और सब लोग समझते रहे कि घण्टाकरण घण्टा बजा रहा है, तब एक बुद्धिमान मनुष्य भी उधर कहीं से आ निकला वह भूत प्रेत, काली कराली, चण्डी मुंडी, भैरों, हनूमान, पीर, पैग़म्बर, आदि कपोल कल्पित मिथ्या वार्तो पर विश्वास नहीं रखता था, उसने विचारा कि वन में हो न हो कोई विशेष बात होगी या तो डाकू रहते होंगे और उन्होंने वन को अपने रहने के लिये रक्षित बनाने को यह पाखण्ड रचा हो या कहीं बन्दरों के हाथ में घण्टा पड़ गया हो, ऐसा दृढ़ निश्चय कर वह चतुर पुरुष साधु का वेश बनाकर जंगल में घुसा अन्दर जा कर देखा तो अपने अनुमान को सही पाया और नगर-निवासियों से कहा भाइयो! "मैंने भूत को पकड़ने का उपाय विचार लिया है, आप लोग मुझे एक गाड़ो भुने चने दें तो मैं कल ही भूत को पकड़े लेता हूँ" नगर-निवासी और राजा तो भूत के नाश के लिये सब कुछ करने को तैयार थे, झटपट सब सामान कर दिया। चतुर मनुष्य ने जाकर जंगल में चने बन्दरों के सामने डाल दिये। इधर सब बन्दर तो चने खाने में लगे उधर उसने घण्टा उठा नगर की राह ली। अब क्या था सारे नगर में और राजसभा में विद्वान् को बड़ा आदर मिला फिर उसने सब भेद खोल कर लोगों का मिथ्या विश्वास हटाया।

शिक्षा

इसी कहानी के समान अनेक वार्तों से भ्रम में पड़कर मनुष्यों ने देवी देवता भूत प्रेत पीर पैग़म्बर आदि नाना प्रकार

की कल्पना कर ली है, असल कारण का पता भय और मिथ्या विश्वास के कारण लोग लगाते नहीं और झूठे उपाय कर २ के थकते हैं असल में भूत प्रेत भैरव हनूमान आदि यह सब ठग लीला है। जादू टोने सब लूटने खाने के बहाने हैं इनसे सदा बचो मिथ्या विश्वास से यह सब बवाल पीछे लगता है इसलिये मिथ्या विश्वास दूर करने को सत्यार्थप्रकाश पढ़ना चाहिये।

मन का डर ही भूत है

एक लड़का भूत से बहुत डरा करता था। घरवालों ने डर छुटाने के लिये उसे एक साधु के पास भेजना प्रारम्भ किया, परन्तु लड़का जब साधु के पास जाता तो मार्ग में भी डरता हुआ जाता एक दिन अँधेरी रात थी, लड़का जब साधुजी के पास पहुँचा तो पसीने से तर हो रहा था, साँस उखड़ रही थी साधु ने पूछा "क्यों क्या हाल है ?" लड़का बोला महाराज ! आज तो भूत मेरे सामने आकर खड़ा होगया, बड़ी कठिनता से बचकर आया हूँ। साधु ने कहा अच्छा तो यह पुड़िया ले जाओ कल यदि भूत मिले तो उसके मुख पर मल देना बस फिर भूत कभी न मिलेगा। अगले दिन लड़के ने ऐसा ही किया। और प्रसन्न होता हुआ बाबा जी के पास पहुँचा और बोला कि महाराजा मैंने भूत के मुख पर पुड़िया मल दी बाबा जी बोले बहुत अच्छा किया। अब भूत कभी न मिलेगा। अच्छा ज़रा इस दर्पण में मुख को तो देखो यह कहकर दर्पण हाथ में दिया ! लड़के ने दर्पण में जो मुख देखा तो स्याही की पुड़िया अपने ही मुख पर लगी पाई। लड़का बड़ा ही लज्जित हुआ। तब साधु ने कहा बच्चा ! भूत चुडैल कोई पदार्थ नहीं

होते । यह सब मनका वहम है । तू अपने ही में सब कल्पना कर के दुःख उठाता था यह तेरा ही मुख तुझे डराता था। मन से कल्पित भूत प्रेत के विचार दूर कर निर्भय हो कर विचर ।

शिक्षा

ऐसे ही वहमों में आज करोड़ों मनुष्य भटक रहे हैं । मन से गढ़ २ कर कोई भूत प्रेत परियों को बुलाता है । कोई तीन पाओं की मेज पर जिसके चारों ओर अनेक मनुष्य बैठ जाते हैं और उन मनुष्यों के शरीर की बिजली से मेज का पाया बार बार उठने और गिरने लगता है, रूहों (आत्माओं) से उठाया जाना मानते हैं यह सब अपने मनके विचार हैं जो शरीर की विद्यु त द्वारा मेज के पाये के उठने और गिरने से कल्पित होते हैं आत्मायें आकाश में इस प्रकार उड़ती नहीं फिरती हैं और न ऐसी २ तमाशे की बातों का आत्माओं से कोई सम्बन्ध है । आत्मायें तो शरीर में रहती हैं एक शरीर छोड़ दूसरी में गईं ऐसा ही योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरो पराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥"

अर्थ—जिस प्रकार जीर्ण वस्त्रों को छोड़ कर मनुष्य नये वस्त्र धारण कर लेता है इसी प्रकार पुराने शरीरों को छोड़ कर आत्मा नये शरीरों को प्राप्त करता है ।

सहानुभूति से सुधार सुगम होता है

एक मनुष्य को यह वहम हो गया कि मेरा सारा शरीर शकर का हो गया है । अब तो वह पानी से कोसों दूर

भागता और गरमी से भी घबराता कि कहीं गल या पिघल न जाऊँ। उसकी यह दशा देख कर सब लोग हँसते और उसे चिढ़ाते यहाँ तक कि बिचारे की दशा पूरे पागलों के समान होगई एक दिन उसके घरवालों ने एक अनुभवी वैद्य को सब हालत सुनाई तब उसने कहा कि मुझे उससे मिलाओ मैं उस का इलाज करूँगा। घरवाले उसे वैद्य के पास लाये वैद्य ने देखते ही कहा कि ओहो! यह रोग तो बहुत बढ़ा हुआ है आपका सारा ही शरीर शकर का होगया परन्तु घबड़ाइये मत ईश्वर कृपा करेंगे तो बहुत शीघ्र आपको लाभ होगा। इतना सुनते ही रोगी बड़ा हर्षित हुआ और कहने लगा कि वैद्यजी मुझे भी आशा पड़ती है कि अच्छा होजाऊँगा, क्योंकि अब तक जिस वैद्य से भी मैं मिला उसने यही कहा कि तुम वहमी हो झूठे हो पागल हो तुम्हारा शरीर अच्छा खासा है परन्तु आपने आज रोग को सही २ पहचाना है इसलिये आप ही औषध भी कर सकेंगे। तब वैद्य ने उसे एक पुड़िया साधारण दवाई की खिलादी अगले दिन वह फिर आया तब उससे कहा कि इस पुड़िया के प्रभाव की परीक्षा करने के लिये मैं आज तुम्हारी एक अँगुली के एक पोरे को पानी से धोता हूँ यदि तुम्हारी एक अँगुली का पोर जाता रहेगा तो अधिक नहीं होगी मैं दूसरी औषध दूँगा और यदि पोर नहीं गला तो यही औषध दूँगा। वहमी मनुष्य ने सन्तोष के साथ अँगुली धुलवा ली। तब वैद्य ने कहा कि अच्छा लो इसी दवा का सेवन करो कल को हाथ धुलाऊँगा। अगले दिन वैद्य ने हाथ धोया। धीरे २ सब अङ्ग प्रत्यंग धो दिये और साथ २ वहमी के वहम को भी खो दिया। तब तो वहमी मनुष्य वैद्य जी से बड़ा प्रसन्न हुआ।

शिक्षा

इसी प्रकार यह मत मतान्तर वाले भी वहम में फँसे हुए हैं प्रेम पूर्वक धीरे २ ही इनका यह वहम दूर किया जा सकता है।

मूर्ख व्यर्थ श्रम करता है

जुलाहों के मुहल्ले में किसी रईस ने अपना मकान बनवाया और जुलाहों की कुछ भूमि रईस की दीवार में आगई यह देख कर जुलाहों ने मन में ठान ली कि आज रात्रि में दीवार को हटाया जाये। जब रात्रि हुई तब सब जुलाहों ने दीवार में कमर लगा कर जोर करना आरम्भ किया, रात्रि चाँदनी थी इस लिये ज्यों २ दीवार की परछाई हटती जाती थी त्यों २ मूर्ख जुलाहे समझते थे कि दीवार हट रही है दो तीन घण्टे में परछाई घूमकर दीवार की जड़ में हो गई जुलाहे समझे कि यह परछाईं दीवार के हट जाने से हट गई। बड़े खुश हो २ कर कहने लगे कि मिहनत सफल हो गई हमने दीवार हटा दी। जुलाहों की इस मूर्खता पूर्णचेष्टा को रईस छत पर लेटा २ देख रहा था और देख २ हँसता था। जब प्रातःकाल हुआ तब रईस ने जुलाहों से बुलाकर कहा कि तुमने हमारी आध गज दीवार क्यों हटा दी? जुलाहे तो समझते ही थे कि हमने दीवार हटा दो झट दोष स्वीकार कर लिया, रईस ने मारा पीटा और रुपये लिये जुलाहों की मूर्खता पर हँसते हुए जुलाहों को विदा किया।

शिक्षा

ठीक २ भारतवासियों के भी आन्दोलन जुलाहों की तरह हो रहे हैं वे नौकर शाही की दीवार को हटाने में दिल तोड़ प्रयत्न करते हैं और नौकर शाही के छाया रूप अधिकारों को हटता हुआ देख कर यह समझ लेते हैं कि नौकर शाही हट गई, परन्तु नौकर शाही हटती नहीं वह अपने स्थान पर दृढ़ खड़ी है भारतीय आन्दोलन से यह हुआ कि नौकर शाही को मनमाने अत्याचार करने का मौक़ा मिल गया।

सूत न कपास जुलाहे से लट्ठमलट्ठा

एक मूर्ख किसान जुलाहे से बोला कि इस बार हम भी कपास बोयेंगे मगर हमारी कपास बहुत बढ़िया उतरेगी इस लिये सूत भी बहुत बढ़िया होगा, बताओ तुम क्या भाव लोगे जुलाहा बोला कि यदि अच्छा सूत हुआ तो रुपये का तीनपाव ले लूंगा, मूर्ख किसान बोला कि हम तीनपाव कभी नहीं दे सकते तेरी ग़रज़ हो तो डेढ़पाव ले जाना। जुलाहा बोला कि कुछ कम ले लूंगा। मूर्ख बोला कि डेढ़पाव से ज्यादा नहीं दूँगा लेना हो वैसी कहो नहीं तो उठ यहाँ से। जुलाहा अकड़ कर बोला कि तेरी ग़रज़ हो तो बेंच ऐंठता क्यों है? मूर्ख बोला तू क्यों ऐंठता है हमारे सूत से अच्छा तेरे बाप ने भी न बुना होगा। जुलाहा बोला तेरा सूत महीन हो ही नहीं सकता, मैं तेरे रद्दी सूत को नहीं लूंगा। मूर्ख ने जुलाहे को धक्का देकर कहा जा भाग यहाँ से हम अपना सूत और किसी को देंगे। जुलाहे ने भी धक्के के उत्तर में मूर्ख को ढकेल दिया

बस इसी तरह धक्का मुक्की जूता पैजार और लाठी चलने लगी दोनों लहू लुहान हुए तब गाँव के लोगों ने बीच बचाव करा।

शिक्षा

हिन्दू मुसलमानों की भी यही दशा है कि स्वराज्य का तो पता भी नहीं परन्तु आपस में सौदा कर २ के लड़ रहे हैं मुसलमान कहते हैं कि हम इतनी नौकरियाँ लेंगे हिन्दू कहते हैं हम इतनी नहीं देंगे यह लड़ाई मूर्ख किसान और जुलाहे की तरह है अभी न तो कपास बोई न सूत कता परन्तु सौदा कर लहूलुहान हो बैठे अभी स्वराज्य सौ कोस दूर है पर हिन्दू मुसलमान बटवारा कर २ के लड़े मरे जा रहे हैं।

डुकरिया पुराण

एक स्त्री बड़ी चालाक और चटोरी थी जब उसका पति बाहर चला जाता तो नाना प्रकार के पूरी पकवान कर २ के खाया करती थी संयोगवश एक दिन यह स्त्री पुए बना रही थी कि इसका पति कुछ काम घर का निकल आने से खेत पर से घर को लौट आया देखता क्या है कढ़ाई चढ़ी हुई है, बोला कि आज क्या है जो कढ़ाई चढ़ी हुई है। स्त्री बोली कि आज ढलका चौथ है स्त्री पुए करती है और पुरुष उन पुओं को छप्पर पर फेंकता है जो अटक जाते हैं उन्हें पुरुष खाते हैं जो ढलक कर नीचे गिर पड़ते हैं उन्हें स्त्री खाती है पुरुष बोला कि यह चौथ का व्रत कहाँ लिखा है ? स्त्री बोली कि "डुकरिया पुराण में यह व्रत लिखा है अब तुम बांचलो फिर तुम पुए फेंकना।" पुरुष बोला कि अच्छा, इसके बाद पुरुष बींड और सरकंडे लेकर छप्पर पर मेंडरी बांधने लगा ताकि

सब पुए अटक जायँ, यह देख कर स्त्री घर से बाहर गई और थोड़ी देर में लौट आई। आते ही बोली कि यह बामन भी बड़ी गड़बड़ करते हैं कल तो कहते थे कि ढलका चौथ है आज कहते हैं कि अटका चौथ है जो पुए अटक जाते हैं उन्हें स्त्री खाती है। यह सुन पुरुष नीचे उतरा और हँसकर बोला कि यह बातें जाने कहां से सीखी है स्त्री बोली डुकरिया पुराण से।

शिक्षा

ऐसे ही खाने पीने के लिये बीसों त्योहार गढ़ डाले हैं स्त्रियाँ नये त्योहार बना लेती हैं और चटोरपन के लिये ही बहुत से व्रत किये जा रहे हैं।

भ्रम से भय

एक गृहस्थ किसी दिन बाजार से खाँड के ३ खिलौने लाया यह खिलौने साधुओं की मूर्तियाँ थीं उसने उन खिलौनों को ताक में रख दिया संयोगवश उसी समय उसके यहाँ तीन अतिथि साधु आये। गृहस्थ ने उन्हें भोजन कराने के लिये बड़ी श्रद्धा भक्ति से बैठाया। इतने ही में गृहस्थ का छोटा सा लडका खेलता २ आया और घर में धरे हुए खिलौनों को देख कर अपने पिता से बोला पिता जी! यह कौन हैं? गृहस्थ बोला कि साधु हैं। बालक बोला कि इनका क्या होगा? गृहस्थ बोला कि इन्हें खायेंगे। लड़का बोला कब खाओगे? गृहस्थ बोला कि साधुओं को भोजन कराने के बाद तुम और तुम्हारी माता भोजन करलें फिर एक को मैं और एक को तेरी माता एक को तुम खाना। गृहस्थ तो घर में इस प्रकार अपने

लड़के से खाँड़ के साधुओं के विषय में बात चीत कर रहा था बाहर बैठे हुए तीनों साधुओं ने समझा कि यह बातचीत हमारे विषय में हो रही है। झट तीनों साधु चल दिये। गृहस्थ ने बाहर निकल देखा तो तीनों साधु जा रहे हैं। गृहस्थ ने पुकार कर कहा कि महाराज भोजन बिना करे हुए कहाँ जाते हो? साधुओं ने दूर से ही कहा कि तुमसे नर भक्षी निशाचर के यहाँ भोजन कर हम प्राण नहीं गँवाना चाहते। गृहस्थ यह सुन उनका भ्रम दूर करने को उनके समीप को चला। साधुओं ने समझा कि पकड़ने को आता है, भागो। बस आगे २ साधु, पीछे २ गृहस्थ भागे। जंगल में जाकर साधु भी थक कर एक कुएँ पर बैठ गये, पीछे २ ग्रहस्थ भी पहुँच गया। गृहस्थ ने हाथ जोड़ कर कहा कि—सेवक का अपराध तो बताइये जो भोजन त्याग भाग आये! साधु बोले तू हमें भोजन कराने के उपरान्त अपने कुटुम्ब सहित भक्षण करता इसीलिये भाग आये। हमने तेरी और तेरे पुत्र की वार्तालाप को सुन लिया है। गृहस्थ बोला महात्मा जी यह आप को भ्रम हुआ है वह वार्तालाप आपके विषय में नहीं थी किन्तु खाँड के बने खिलौने के जो कि साधुओं के आकार के बने हैं विषय में थी आप चलकर देख लीजिये। तब बहुत समझ बूझकर साधु लौट आये और भोजन पाय खाँड के साधुओं को देख गृहस्थ की बात सच जान बड़े प्रसन्न हुये।

शिक्षा

यही दशा सनातनधर्मियों की है वे भ्रम में होकर साधुओं के समान आर्य्य-समाज से दूर भागते हैं और कहते हैं कि यह तो हमारा खण्डन करते हैं यह नहीं जानते कि

आर्य्यसमाज असली सनातनधर्म का खण्डन नहीं करता वह तो नकली सनातनधर्म का खण्डन करता है। असल सनातनधर्म वेदादि सत् शास्त्र हैं। असल देवऋषि और पितरज्ञानी वेदज्ञ और जीवित माता पिता हैं उनका खण्डन आर्य्य समाज नहीं करता है। परमात्मा की बनाई मूर्तियां देवगुरु अतिथि आदि हैं। इनके पूजन को आर्य्यसमाज मना नहीं करता। मिट्टी की माता शीतला और अपनी गढ़ी हुई काठ धातु आदि की मूर्तियों पर परमात्मा की बनाई मूर्तियाँ भैंसे और बकरे काटना सनातनधर्म में नहीं है।

असली कलगी

एक दिन कोई मनुष्य कबीर साहिब के स्थान पर दर्शनों को गया तो उसको घरवालों से ज्ञात हुआ कि कबीर साहिब किसी मृतक के संग स्मशान में गये हैं। दर्शनार्थी कहीं बाहर का रहने वाला था उसे कबीर साहिब के दर्शन कर अपने स्थान को जाना था समय उसके पास थोड़ा था इस कारण कबीर जी के दर्शनों को स्मशान जाने को ही तैयार हो गया और कबीर जी के घरवालों से कबीर जी के हुलिये का पूछने लगा ताकि बहुत से मनुष्यों में भी कबीर जी को पहचान सके कबीर जी के घरवालों ने कहा कि कबीर जी की पगड़ी में कलगी लगी हुई है। दर्शनार्थी चल दिया और श्मशान भूमि में जा पहुँचा देखता क्या है कि जो लोग मृतक के संग आये हैं सबके सिर पर कलगी है। अब तो विचारा दर्शनार्थी बड़े चक्कर मे आया कबीर साहिब को पहचाने तो कैसे पहचाने सबके सिर पर कलगी थी, और बूझे तो कैसे बूझे क्योंकि

शोक में सब मौन थे बातचीत का अवसर ठीक न था। निदान सबके संग मृतक को फूंक कर नगर को लौटा। नगर को लौटते समय क्या आश्चर्य देखता है कि कुछ मनुष्यों के सिर से कलगी लुप्त होगई है। इसी प्रकार थोड़ी २ दूर पर सबके माथे से कलगी दूर होती गई जब सब नगर में पहुँचे तो दर्शनार्थी ने क्या देखा कि सब मनुष्यों के सिर से कलगी लुप्त होगई है केवल एक मनुष्य के सिर पर कलगी है। तब दर्शनार्थी उसी मनुष्य के साथ होलिया देखा तो वह मनुष्य कबीर साहिब हैं। दर्शनार्थी ने कबीरसाहिबको प्रणाम किया कबीर जी ने बूझा कि कहो क्या कार्य्य है? तब दर्शनार्थी ने कहा कि महात्मन! मैं आपके दर्शन तथा उपदेश सुनने को बड़ी दूर से आया हूँ सो और प्रश्न तो फिर बूझूंगा पहले यह बताइये कि यह कलगी की आश्चर्यमयी घटना क्यों हुई, पहले तो सबके सिरों पर कलगियाँ देख पड़ीं फिर आपके अतिरिक्त धीरे २ सबकी लुप्त होगई। कबीर साहिब बोले "वह कलगी रामनाम की थी मृतक को लेकर जो लोग सङ्ग गये थे तो सबके हृदय में संसार की अनित्यता और रामनाम की सत्यता थी; परन्तु वे सब लोग धीरे २ इस उत्तम ज्ञान को भूलते गये, केवल मेरे हृदय में संसार की अनित्यता और रामनाम की सत्यता सदा रहती है वैसी ही वहाँ भी रही और अब भी है इसलिये कलगी नहीं गिरी।" दर्शनार्थी को यह सुन शान्ति होगई।

शिक्षा

मृतक को जब स्मशान लेजाते हैं तब तो सब कहते जाते हैं "रामनाम सत्य है" परन्तु जहाँ घर को लौटे तो रामनाम

को भूल माया मोह में लिप्त होजाते हैं। मृतक के घर वाले ही सबसे पहले मृतक के माल ताल सुँगवाने की चिन्ता में लगते हैं और माल पर लड़ते भिड़ते हैं। महाराज युधिष्ठिर ने सत्य कहा है:—

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।
शेषा विभूति मिच्छन्ति किमाश्चर्य मत: परम्॥

अर्थ—नित्य ही प्राणी मरते हैं (परन्तु) बचे हुए सम्पत्ति को चाहते हैं इससे बढ़कर क्या आश्चर्य होगा।

मनुष्य को चाहिये कि यह विचारता हुआ कि मरना अवश्य है और धन सम्पत्ति सब यहीं छोड जानी है कभी लोभ वश अधर्म न करे न्याय की कमाई खाये और हरिभजन को न भूले यही सच्ची कलगी है।

कुलीनता का फल

एक राजा के यहाँ बड़ी सुन्दर और सुशील घोड़ी थी कई बार युद्ध में इस घोड़ी ने राजा के प्राण बचाये थे। कुछ दिन बाद घोड़ी के एक बच्चा हुआ परन्तु बच्चा काना था। एक दिन बच्चे ने अपनी माँ (घोड़ी) से बूझा कि मेरा सारा शरीर तो बहुत सुडौल है परन्तु मेरी एक आँख क्यों नहीं है मुझे बड़ी लज्जा आती है। घोड़ी ने कहा कि बेटा एक दिन राजा मुझपर सवार हुए टहलने जा रहे थे तू गर्भ में था। राजा ने मेरी कोख पर एक हंटर मार दिया जिसका असर गर्भ पर पहुँचा और तू काना जन्मा यह बात माता के मुख से सुनकर बच्चे ने कहा कि माता मैं राजा से इसका बदला लूंगा। कभी युद्ध में राजा को शत्रु के हाथ फँसाकर मरवा दूंगा। घोड़ी अपने पुत्र

की यह बात सुन घृणा से कहने लगी बेटा तू बड़ा कृतघ्न है मेरी कोख को कलंकित करना चाहता है। जिस राजा ने पाला पोसा भांति २ का दाना चारा खिलाया उसे एक बार क्रोध आगया और उससे कुछ हमारा नुक़सान होगया तो क्या उसकी जान के ग्राहक बनें। घोड़ी ने इसी भांति नाना प्रकार से बच्चे को समझाया परन्तु वह राजा को कष्ट पहुँचाने की ज़िद पर डटा रहा। निदान जब वह बछेड़ा बड़ा हुआ और राजा की सवारी में आया तब मन ही मन बदले की प्रतीक्षा करता रहा। एक समय राजा उसी बछेड़े पर चढ़े युद्ध को चले तब बछेड़ा बदले का समय आया जान बहुत प्रसन्न हुआ; मन ही मन सोचता जाता था कि आज राजा को युद्ध में फँसा कर आँख का बदला लूंगा। जब राजा युद्ध में पहुँचा और शत्रु से भिड़ गया तो घोड़े ने बड़ी वीरता दिखाई शत्रुओं ने कई बार राजा को घेरा परन्तु घोड़े ने राजा को निकाल २ लिया। आखिर एक अवसर ऐसा आया कि राजा शत्रु के प्रहार से मूर्छित हो गिरने को ही था कि घोड़ा राजा को ले भाग आया। तब घोड़ी ने बूझा बेटा कहो युद्ध कैसा रहा। घोड़े ने युद्ध की सब कथा सुनाई माता ने कहा क्या तूने राजा से अपना बदला लिया। घोड़े ने कहा माता मैं बदला कैस लेता मुझे तो उस समय यश की चाह से केवल शत्रु को परास्त करने की सूझती थी। माता ने कहा बेटा तुझसे नमकहरामी हो ही नहीं सकती थी क्योंकि तू नसल में अच्छा है और फिर तेरी माँ भी तो नमकहलाल है।

शिक्षा।

जिनकी मातायें उत्तम संस्कार डालती हैं वे सन्तानें कभी पाप नहीं कर सकतीं। यदि क्रोध वश कभी पाप का

इरादा भी करें तब भी अपयश के भय से वे पापाचरण में लज्जा करेंगे।

ढोंग भरी तपस्या

किसी स्त्री ने पंडित जी की कथा में सुना कि पति से पहले भोजन नहीं करना चाहिये, परन्तु उस स्त्री की आदत थी कि पति से पहले ही अपनी पेटपूजा कर लेती थी। कारण कि पति देर से घर आता था। अब एक ओर तो धर्म पालन दूसरी ओर पेट पालन करे तो क्या करे इसी सोच विचार में बैठी थीं कि घर की बूढ़ी नाइन आ निकली बहूजी को चिन्ता में देखकर पूछा कि कहिये आज क्या चिन्ता है तब बहूजी ने सब हाल बताया नाइन थी चलती हुई बोली कि इसमें क्या कठिनता है पति से पहले रोटी आदि भोजन नहीं करना चाहिये किन्तु सास नन्द से पूछ कर कुछ मिठाई आदि खाने में कोई दोष नहीं है परन्तु तुम्हारे सास नन्द भी नहीं है इस लिये देहरी से पूछकर खा लिया करो क्योंकि देहरी भी घर की बड़ी है बस बहूजी ने लड्डू बना लिये और सुबह ही लाला जी तो दूकान को जाते और बहूजी लड्डू निकाल कर मन्त्र पढ़तीं—

सुन देहरिया बन्दी, मेरे सास न नन्दी।
तेरी आज्ञा पाऊँ, तो लड्डू को खा जाऊँ॥

यह पद बोल कर दूसरे स्वर में बहूजी स्वयं ही उत्तर दे लेतीं "खाले बहू खाले" इस प्रकार बहूजी खा पीकर मौज मारतीं जब लाला जी आते तब रोटी चढ़ातीं लाला जी यदि झुँझलाते तो कहतीं कि मैंने भी तो अभी नहीं खाई है आपसे

पहले मैं खाती ही नहीं। लाला बहू जी के व्रत को सुन कर सन्तुष्ट हो जाते। एक दिन कार्य्यवशात् लालाजी को दुकान खोलते ही फिर घर को लौटना पड़ा तो दरवाजे में पहुँचते ही वहू जी का मन्त्र सुना और वहूजी को लड्डू उड़ाते देखा, लाला जी को बहू जी की यह दशा देखकर बड़ा गुस्सा आया और अगले दिन दूकान न जाकर मकान में ही छिप कर बैठ रहे जब वहू जी ने लड्डू हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ा तो लाला जी ने सामने आकर कहा—

सुनरे भैया आरे (आला ताख) मेरे ससुर न सारे।
तेरी आज्ञा पाऊँ तो स्त्री के डण्डे लगाऊँ॥

फिर स्वर बदल कर कहा "लगा भाई लगा" जब लाला ने डण्डा सँभाला तो वहू जी बहुत घबराई और क्षमा माँगने लगीं तव लाला ने कहा कि ढोंग बनाना छोड़ो और जब इच्छा हो तब खाओ।

शिक्षा

यही दशा आज कल के व्रत उपवास करने वालों की है इधर तपत्या का ढोंग करते हैं उधर कष्ट भी बर्दास्त नहीं कर सकते और तरह २ के बहाने बना लेते हैं आजकल हिन्दू जाति में और विशेष कर स्त्रियों में तपस्या के नाम पर ढोंग और बहानों का जोर है नाम को एकादशी व्रत में फलाहार (फलों का भोजन) है और असल में खूब माल उड़ाये जाते हैं पुजारी पण्डे ठाकुर जी की आज्ञा का नाम करके जो मन में आवे करते हैं अपने स्वार्थ साधन के लिये मन माने वचन बना लिये हैं इनका इलाज डण्डा अर्थात् कठोरता है तब ही ये ठीक रहेंगे और तब ही ढोंग भरी तपस्या बन्द होगी।

अपना काम आपसे ही होता है

किसी खेत में बुलबुल ने घोंसला रक्खा था घोंसले में छोटे २ बच्चे थे जिनके पालन के लिये नर और मादा दिन भर चारे को खोज २ कर लाते थे एक दिन जब नर और मादा घोंसले में आये तब बच्चों ने चिन्तित होकर कहा कि आज खेत में खेत का मालिक आया था और वह कहता था कि कल अपने मित्र से खेत कटवायेंगे यह सुन बुलबुल ने कहा कि चिन्ता मत करो अगले दिन सायंकाल को बच्चों को फिर चिन्तातुर देखकर बुलबुल ने कहा बेटा ! आज कोई नई बात हुई है तब बच्चों ने कहा कि आज खेत का मालिक फिर आया था और कहता था कि कल मजदूर तलाश करके खेत कटवाऊँगा बुलबुल ने कहा कि अब भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। अगले दिन शाम के वक्त बच्चों ने अपने माता पिता से कहा कि आज फिर खेत वाला आया था और कहता था कि कल मैं स्वयं ही इस खेत को काटूँगा तब बुलबुल का जोड़ा चिन्तित होकर बोला कि अब बच्चों को कहीं और ले चलना चाहिये।

शिक्षा

स्वावलम्बी से सबको भय होता है जब तक दूसरों के ऊपर रहोगे मान नहीं होगा हिन्दू जाति से स्वावलम्बन नष्ट हो गया है इसीसे इससे न कोई भय करता है न इसका कहीं मान है प्रथम तो भारतवर्ष का शिल्प वाणिज्य सब विदेशियों के हाथ में हैं परन्तु जो कुछ बचा वह मुसलमानों के हाथ में है क्योंकि हिन्दू जाति शिल्प को नीच समझती है और शिल्पकारों को शूद्र बताती है अपने हाथ से अपना काम

करना हिन्दुओं ने हीन समझ लिया है इसलिये यह परा-धीनता भोगते हैं जब यह स्वयं कार्य्य करने को खड़े हो जायेंगे तब सब इनकी बात को सच मानेंगे क्योंकि स्वाव-लम्बी का प्रण पूरा होता है।

वहम का बन्धन

किसी गाँव में पीरू नाम का एक जुलाहा रहता था, इस जुलाहे के लड़के जुम्मा का विवाह हो कर नई बहू आई, पीरू अपनी पुत्रवधू को बहुत लाड़ करता था इसी लिये वह पैंठ करने को गया तो वहाँ से बहू के लिये खीले और रेवड़ी भी लेता आया और घर पर आते ही बहू को खील रेवड़ी देने के लिये ढूँढ़ने लगा बहू उस समय छप्पर की थुनियाँ को दोनों हाथों के बीच में किये बैठी थी उसने वहीं बैठे २ हाथ फैला दिये और पीरू ने उसके दोनों हाथों की अञ्जलि को खील रेवड़ियों से भर दिया ? इतने में सासु ने बहू को पुकारा तो बहू बोली कि मैं तो यहाँ इस प्रकार बँधी बैठी हूँ किस प्रकार आऊँ सासु जो उठकर आई देखकर हैरान हो गई उसकी समझ में नहीं आया कि बहू को किस प्रकार छुड़ाऊँ और वह रोने लगी। रोने का शब्द सुनकर अड़ोस पड़ोस के सब जुलाहे इकट्ठे हो गये परन्तु यह किसी की समझ में न आया कि बहू को किस प्रकार थुनियाँ में से निकाला जाय तब सब जुलाहे मिलकर क़ाज़ी पर गये क़ाज़ी जी ने कुल हाल सुन-कर कहा कि पहले घर के छप्पर उतारो फिर सीढ़ियाँ लगा कर जुम्मा की बहू को ऊपर उठाये लिये जाओ और थुनियाँ के सिरे से पार करदो जुलाहे सुनकर चले आये और क़ाज़ी जी के बताये उपाय को काम में लाना चाहते ही थे कि गाँव

के ज़मींदार ठाकुर साहिब आ निकले जुलाहों को घबराहट के साथ इधर उधर दौड़ता हुआ देखकर पूछा तब जुलाहे बोले कि "जुम्मा की बहू को थुनियाँ ने बाँध रक्खा है उसे छुड़ाना है" ठाकुर साहिब ने कहा कि हमें भी तो दिखाओ जुलाहों ने घर में ले जाकर कहा देखिये सरकार। ठाकुर साहिब ने कहा कि तुम्हें यह तरकीब किसने बताई है ? जुलाहे बोले क़ाज़ी जी ने। ठाकुर साहिब ने कहा कि क्या तुम से उन्होंने कुछ लिया ? जुलाहे बोले उनकी हर मसले पर ५) रुपये दिये जाते हैं सो ही दिये थे। ठाकुर साहब बोले कि यदि हम तुम्हारा काम बिना इस मिहनत के ही करादें तो क्या तुम काज़ी जी को छोड़ दोगे ? सब जुलाहे बोले वेशक, ठाकुर साहिब ने कहा कि एक टोकरी लाओ जुलाहे टोकरी ले आये ठाकुर साहिब ने बहू के आगे टोकरी रखकर कहा कि बहू इसमें खीलें छोड़ दो बहू ने ऐसा ही किया और उसके हाथ छूट गये। ठाकुर साहिब बोले कहो भाई अब भी तुम्हारा क़ाज़ी मूर्ख बना या नहीं जुलाहों ने कहा हाँ और आश्चर्य में होकर ठाकुर साहिब की तारीफ़ करने लगे।

शिक्षा

यही दशा मुसलमानी मत और हिन्दुओं की रस्म रिवाज की है यह व्यर्थ ही अपने आपको मिथ्या विश्वासों और रस्मो रिवाज की खीलों से हाथ भर कर थुनिया (खम्बा) में फंसा बैठे हैं जब किसी मुसलमान से पूछा जाता है कि भाई मक्के मदीने में जाकर अपने देश का रुपया क्यों बरबाद करते हो गौ जैसे सीधे और लाभदाई पशु के गले पर छुरी क्यों फेरते हो हिन्दुस्तान की भाषा और भेष को क्यों नहीं

अपनाते बहिन से विवाह क्यों कर लेते हो एक दूसरे का जूठा क्यों खा लेते हो तो कहते हैं कि साहिब करें क्या शास्त्र में लिखा है हिन्दुओं से पूछा जाये कि सब हिन्दू यदि शुद्ध पवित्र होकर रहें तो उनके हाथ का खान पान करने में क्या दोष है वा मुसलमान ईसाइयों को हिन्दू बना लेने में क्या दोष है वा ब्राह्मण भी सब एक क्यों नहीं हो जाते तो कहते हैं कि क्या करें ऐसी रीति नहीं। बस इस प्रकार यह लोग व्यर्थ ही शास्त्र और रीति रिवाज की खीलों को हाथ में भर कर बंध गये हैं और इनके गुरू लोग इन्हें खूब नाच नचाते हैं और सीधी सादी बातों में भी अडंगे लगाते हैं आर्य्यसमाज बुद्धिमान ठाकुर साहिब है वह इन वहम की बातों को रद्दी की टोकरी में डलवाकर मजहबी भेड़ों को आजादी का मार्ग दिखाता है कठिन और एर फेर के कामों को सरल बनाता है।

अहंकार का मारा

किसी राजकन्या ने यह प्रतिज्ञा करी कि मैं उस पुरुष के साथ विवाह करूँगी कि जो मेरे नगर में अमुक कुएँ को धन से भर देगा। यह सुन दूर २ से सैकड़ों राजकुमार नित्य आते और अपनी सामर्थ्य भर रुपया अशर्फियाँ कुएँ में भर देते परन्तु यह भी पता न लगता कि यह सब माया कहां गई। इस तरह हजारों सेठ साहूकार और राजकुमार आये परन्तु सम्पूर्ण धन सम्पत्ति गँवाकर निराश हो लौटे और राजकुमारी किसी को प्राप्त न हुई। तब एक राजकुमार आया जो बड़ा वीर और सुशील था उसने भी हाथी और ऊँटों पर लदी हुई सोना चाँदी कुएँ में लौट दी परन्तु कुएँ में यह भी न

पता चला कि एक पैसा भी कहाँ को गया, अन्त में लाचार हो राजकुमार ने राजसी वेश उतार गेरुआ वस्त्र धार तपस्या की ठानी, तप करने से दीनदयालु की कृपादृष्टि राजकुमार पर हुई और एक सिद्ध को राजकुमार के पास भेज दिया। सिद्ध ने आकर पूछा, राजकुमार ने अपना मनोरथ और विफलता कह सुनाई तब गुरु महाराज ने कहा कि चिन्ता न करो। भगवान तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे। तुम एक उपाय करो कि धनुष बाण लेकर सूक्ष्म से सूक्ष्म लक्ष्य के भेद करने का अभ्यास करो। जब तुझे लक्ष्य सिद्ध हो जाय तब कुएँ में देखना एक भौंरा कुएँ में वास करता है जो माया को न उभरने देता है और कुएँ को पूर्ण होने से रोक रखता है वह भौंरा जब उड़ता दीखे तब ही उसे बांण से वेध देना बस फिर कुएँ में जितनी माया है सब उभर आवेगी, और एक पैसा भी कुएँ के भरने को पूर्ण होगा। सिद्ध गुरु इस प्रकार उपदेश कर चले गये, और राजकुमार ने लक्ष्यभेद का अभ्यास प्रारम्भ करदिया। जब अभ्यास पूर्ण हो गया तो राजकुमार कुएँ पर पहुँचा देखा तो भौंरे को उड़ता हुआ पाया; और तत्काल बांण का लक्ष्य बना भौंरे को मार गिराया। भौंरे का मर कर गिरना था कि कुआं माया से उफन चला। सबकी दौलत बाहर आगई तब राजकुमार ने राजकुमारी को सूचना दी। सुनते ही राजकुमारी हर्ष से गद्गद हो गई। अपनी सखी सहेलियों सहित स्वयंवर की माला हाथ में लिये राजकुमार की सेवा में आ उपस्थित हुई।

शिक्षा

शान्ति देवी ही राजकुमारी है क्योंकि यह राजेश्वर प्रभु की पुत्री है, और असन्तोष ही भौंरा है, क्योंकि असन्तोषी

मनुष्य भौंरे के समान तरह तरह के फूलों अर्थात् पदार्थों में भ्रमता है पर तृप्त नहीं होता। मुमुक्ष (मोक्ष चाहने वाले) जीव अनेक राजकुमार हैं, जो शान्ति को पाना चाहते हैं परन्तु कामना (चाह) के कुएँ को नहीं भर सकते क्योंकि कामना पूर्ण तब हों कि जब असन्तोष का नाश हो। इसलिये धन सम्पति स्त्री पुत्र नाना प्रकार के भोगों की माया से कामनापूर्ण करते हैं परन्तु नहीं होती, जितना धन सम्पत्ति और संसार के ऐश्वर्य मिलते हैं उनसे अधिक की इच्छा होती है "इच्छति शतां सहस्रं सहस्री लक्ष्मीहते" सौ वाला हजार चाहता है हजार वाला लाख चाहता। परन्तु जब सतगुरु के उपदेश से असन्तोष के भौंरे का विवेक (ज्ञान) के बाण से वेध दिया जाता है तो कामना पूर्ण हो जाती है। यथा—

दो०—गोधन गजधन बाजिधन और सकल धन खान।
जब आवत सन्तोष धन सब धन धूरि समान॥

बस असन्तोष के दूर होते ही कामना पूर्ण और कामना की पूर्ति से "शान्ति" प्राप्त हो जाती है इसलिये मुमुक्ष जीवों को चाहिये कि अभ्यास वैराग्य से प्रथम असन्तोष को दूर करें, और जो मिले उसी में प्रसन्न रहें, पुरुषार्थ करना मनुष्य का कर्त्तव्य है और पुरुषार्थ की मजदूरी देना प्रारब्ध का काम है। पूर्णकाम ही सुखी होता है। जो साधु होकर भी संग्रह में लगे हैं उन्हें सुख शान्ति नहीं मिल सकती। संसार की मार, काट, युद्ध, उपद्रव सबका कारण असन्तोष है, और दुःख में डुबाने वाला भी असन्तोष है।

"सन्तोषः परमं सुखम्"

———

पौंगा पंडित

पंडित रामधन मिश्र व्याकरण न्याय स्मृति आदि शास्त्रों के बड़े भारी पंडित समझे जाते थे। काशी में रह कर वर्षों उन्होंने पुस्तकें रटी थी। आपका विश्वास धर्म शास्त्र पर बहुत भारी था। एक २ अक्षर को ब्रह्म-वाक्य समझ प्रत्येक काम को शास्त्रों में देख २ कर करते थे। परन्तु आपकी विद्या और बुद्धि में मूषक मार्जारवत् वैर था। एक दिन पण्डित जी को किसी ग्राम में जाना था सो जब दो चार कोस पहुँचे तो देखते क्या हैं कि दो तीन सड़कें वहां से फट गई हैं सो आपको झट श्लोक याद आया "महाजनो येन गतः सपन्था;" इतने ही में एक बारात उधर आ निकली, बस आपने विचार लिया कि जिधर को महाजन अर्थात् बड़ा समुदाय जाये उधर ही को चलना चाहिये बस चल दिये बारात के पीछे पीछे। यह न विचारा कि श्लोक का तात्पर्य तो यह है कि महाजन अर्थात् ज्ञान और आचरण में बड़े लोग जिस कार्य्य का उपदेश करें वही ठीक है। जब पण्डित जी बारात के सङ्ग चले ही गये तो जिस गाँव में बारात गई थी जा पहुँचे। बारात वालों ने पण्डित समझ कर भोजनादि सत्कार करना चाहा तब पण्डित जी ने कहा अच्छा। पण्डित जी बारात के सङ्ग जीमने गये तो वहाँ भसीड़े (कमल की जड़) का शाक था पण्डित जी ने जो देखा तो बोले "छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति" छेदों में बहुत से अनर्थ होते हैं। बस भोजन छोड़कर भाग आये। यह न समझे कि श्लोक का तात्पर्य है कि घर का भेद खुल जाने से दुःख होते हैं।

शिक्षा—ऐसे ही पौंगा पंडित आज कल देश में भरे पड़े हैं शास्त्र का तात्पर्य समझते ही नहीं और अंटसंट व्यवस्थायें देते रहते हैं।

फूहर बहू

गोबरवती बड़ी फूहर थी। जब वह अपनी सुसराल गई तो सास ने एक दिन कहा कि "रोटी करले" तब गोबरवती ने आटा मलने को आटे में पानी डाला तो आटा बहुत पतला होगया। तब सास ने कहा कि आटा तो बहुत पतला होगया गोबरवती ने एक लोटा पानी और डाल कर कहा कि कि पूओं के लिये मल रही हूँ गोबरवती थी बड़ी लड़ाका और ज़िद्दन। सास ज्यों २ समझाती गई गोबरवती आटे में पानी डालती गई, और सास से लड़ने को तैयार होगई, तब सास चुप हो रही गोबरवती ने आटे में पानी डाल २ कर बिलकुल घोमन कर दिया, तब सास से बोली यह आटा ही बुरा था बिलकुल काम का नहीं फेंके देती हूँ सास ने कहा "भले आदमी को देखकर डालना" गोबरवती को छत पर से आटे का पानी नीचे फेंकना था, नीचे से मुहल्ले के सरपञ्च बाबू रामकिशोर वकील जा रहे थे। गोबरवती ने सब पानी उन पर डाल दिया वकील साहिब के सब कपड़े बिगड़ गये चिरचिराते हुए चले गये; गोबरवती के ससुर से शिकायत करी, उन्होंने घर मालूम करके वकील साहिब से क्षमा माँगी, और गोबरवती को उस दिन से फूहर करार देकर सब कामों से पृथक् करके केवल गोबर उठाने का काम दिया।

शिक्षा

फूहरों को ऐसे फूहरपने के ही काम में रक्खा जाये तो ठीक है। अन्यथा वे घर का फ़जीता कर देती हैं।

भमीरी

भमीरी बड़ी नटखट लड़की थी। घर के काम को हाथ न लगाती और इधर उधर २ घूमती फिरती रहती थी। खाने वाली ऐसी थी, कि कभी खीलें, कभी चने, कभी शाक, कभी पात भखती ही रहती थी। लीखें बालों में जड़ी रहती थीं। और कपड़े महा मैले रहते थे। इन सब दुर्गुणों के होते हुए भी उतार परले सिरे की थी। एकर साँस में सौर गालियाँ देना उसे मामूली बात थी। जब भमीरी ब्याह कर ससुराल गई तो सास नन्द दौरानी जिठानी की नाक में दम कर दिया। पति की कमबख्ती लगा दी। अड़ोस पड़ोस की स्त्रियाँ काँप गईं। दिन २ भर कोसते रहना भमीरी को रोज की बात थी। जब भमीरी ससुराल से प्योसाल गई और उसकी सहेलियों ने बूझा कि कहो ससुराल में कैसे पटती है, तो भमीरी ने कहा कि मेरे सामने कोई "चूँ" भी नहीं कर सकता मैं ने सब पर रोब जमा दिया है।

सास के मारी ईंट ससुर को पत्थर से धमकाया।
पति को कहा मरजाय निखट्टू कैसा बालम पाया॥
जेठ जिठानी को धमकाया नन्द को बाँस दिखाया।
छोटे देवर की धोती फारी सब पर रोब जमाया॥
यह सुन सहेलियाँ मुस्करा कर शाबाश २ करने लगीं।

शिक्षा

फूहर जुबान और नंगपने से घरवालों को धमकाती है ऐसी की औषध मौन ही है। परन्तु वह इस मौन को अपनी जीत समझती है।

चालाक फूहर

लीलावती परले सिरे की फूहर थी। मगर चालाक भी बड़ी भारी थी। जिनसे काम सीखती थी उनका अहसान नहीं मानती थी, और चालाकी में बात उड़ा देती थी। उसको घर गृहस्थी का कोई काम नहीं आता था, परन्तु चालाकी और मुँहज़ोरी से यही कहती थी कि मुझ को सब काम आता है। एक दिन उसके पति ने कहा कि आज खिली हुई अच्छी खिचड़ी बनाना, लीलावती ने कहा "अच्छा" अब लीला पड़ोसिन घर पहुँची और बोली "नन्हें की माँ! तुमपर खिलमा खिचड़ी बनानी भी आती है" नन्हें की माँ ने कहा "हाँ आती है" तब वह बोली झूठ बात है तुम पर नहीं आती यदि आती है तो बताओ कैसे बनती है। तब नन्हे की माँ ने सब तरकीब बता दी तब लीलावती बोली "वाह! बिल्कुल ग़लत, तुमको ठीक तरकीब नहीं आती" नन्हें की माँ इसकी चालाकी समझ गई बोली की एक तरकीब और रहगई है तुम चाहो तो सीख लो। लीलावती बोली कि मुझे तो सब तरकीब आती ही है तुम बताओ। तब नन्हे की माँ ने कहा कि जब खिचड़ी गल जाये तो सेर भर हो तो आधपाव नौसादर उसमें डाल दे और ऊपर से भाड़ का मोटा २ रेता मुँह पर रखकर अङ्गारों पर रख दे। यह सुन लीलावती बोली हमें यह बात पहले ही से मालूम थी, नन्हें की माँ मन ही मन हँस कर चुप हो रही। लीलावती ने खुशी २ खिचड़ी बनाई जब पतिदेव खाने बैठे तो लीलावती अपनी होशियारी पर बड़ी खुश थी, परन्तु जब ही पतिने मुँह में ग्रास दिया तब ही थूककर क्रोधित होकर चौके से उठ गया। लीला थी ज़ुबान जोर बोली क्यों ऐसी अच्छी तो खिचड़ी हुई है

मगर तुम थूकते हो। विचारा सुन कर बोला 'खाकर तो देख' लीला अपनी मूर्खता पर लज्जित होने वाली न थी अपनी खिचड़ी को अच्छी ही बताये गई आखिर क्रोधित होकर पति को डण्डा फटकारना पड़ा।

शिक्षा।

जो काम अपने को नहीं आवे उसको नम्रता पूर्वक सीखना चाहिये। और सीखकर कृतज्ञ होना चाहिये और यदि गृहस्थी का काम विगड़ जाये तो भी स्त्रियों को पश्चात्ताप करना चाहिये हेकड़ी और ज़ुबानजोरी नहीं करनी चाहिये। वरना घरवालों के मन से उतर जाती हैं और अड़ोसन पड़ोसन हँसी उड़ाती हैं।

नख़रे वाली फूहर

श्यामदेवी को काम धन्धा तो घर का आता न था इसलिये नख़रे साध २ कर बीमारी का बहाना कर काम से बचना चाहती रहती थी। मगर किस बीमारी का बहाना करे जिस बीमारी को बतावे उसके लक्षण भी तो प्रत्यक्ष होने चाहिये आखिर श्यामदेवी को एक तरकीब सूझी कि सिर का दर्द ऐसा है कि किसी को एक प्रत्यक्ष नहीं दीख सकता यही बहाना लेना चाहिए बस यह निश्चय करके श्यामदेवी रोज़ 'हाय मरी, हाय राम' करने लगी। जब पति कचहरी से आते तब ही सिर के दर्द का बहाना कर देती दिन भर बातें बनाती रहती। पति ने कई डाक्टर हकीमों को दिखाया, सैंकड़ों रुपयों की दवा खिलाई, मगर दर्द होय तो जाय मक्कारी को हकीम किस तरह खोयें। आखिर को एक दिन पति ने अपने एक मित्र से कहा उसने सब हाल सुनकर जान लिया कि दर्द नहीं है। "त्रिया-

चरित्र" है तब उसने कहा कि दवाई तो मेरे पास है मैं देदूँगा परन्तु अपनी स्त्री को समझा देना कि उतने ही बीच में लगाना कि जितने में दर्द हो, क्योंकि और जगह लग जाने से छाले पड़ जायेंगे! यह कह उसने पानी शीशी में भर कर दे दिया जब श्यामदेवी को जाकर उसने शीशी दी और सब बात समझाई तो श्यामदेवी ने दवा लगाने से इनकार कर दिया तब उसके पति ने अपने मित्र से सब हाल कहा तो मित्र ने कहा भाई दर्द नहीं है मक्कारी है, डण्डा पकड़ो तो दर्द जायगा।

शिक्षा

मक्कारी की परीक्षा चतुरता से होनी चाहिये और बहुत सी स्त्रियाँ जो मक्कारी से भूत प्रेत के बहाने बना देती हैं उन की जाँच होशियारी से करनी चाहिये। यदि रोग हो तो चिकित्सा कराई जाये और मक्कारी हो तो चतुरता से उसका जवाब दिया जाये, और दण्ड भी। परन्तु मनुष्य स्त्रियों का दास बन जाता है उसे ये नाच नचाती हैं!

ज्ञानवती

एक शिक्षित धनवान् युवा को विवाह से बड़ी घृणा थी व मूर्खा और विलासिनी गृहणियों की दशा देख २ कर गृहस्थ के जीवन को बुरा समझने लगा था। परन्तु उसके इष्ट मित्र और हितैषियों को उसका ऐसा जीवन न रुचा, और वे उससे विवाह का आग्रह करने लगे। तब उस युवा ने कहा कि मैं अपने लिए कन्या का आपही अन्वेषण करूँगा यदि मेरी मति के अनुसार पत्नी मिली तो अवश्य गृहस्थी बन जाऊँगा। बस यह निश्चय कर वह युवा सवा सेर धान अँगौछे में बाँध कर

वरणी ढूँढने चल दिया जहाँ जाता और जिस कन्या की प्रशंसा सुनता उसको जाकर देखता और कहता कि मेरे इन सवा सेर धानों से क्या तुम छत्तीस प्रकार के व्यंजन युक्त भोजन खिला सकती हो, उसका यह प्रश्न सुन कन्यायें चुप रह जातीं और उनके घरवाले हँसते और इस साधु रूपधारी युवा को मूर्ख समझते युवा ने इसी प्रकार अनेक नगरों में भ्रमण किया और बहुत से धनी कुटुम्बों की शिक्षिता युवतियों को देखा किन्तु उसकी कामना पूर्ण न हुई एक दिन उसने सुना कि अमुक नगर में एक ग़रीब बुढ़िया रहती है उसके एक विवाह योग्य कन्या को छोड़ कोई नहीं है बुढ़िया इतनी ग़रीब है कि पथिकों को पानी पिलाकर पुत्री सहित अपना पेट पालती है, इस कारण बुढ़िया की कन्या को कोई वर नहीं मिलता पढ़े लिखे युवा दहेज में धन माँगते हैं जो बुढ़िया देने में असमर्थ है और अनपढ़ मूर्ख को अपनी सुशीला सुता बुढ़िया देना नहीं चाहती, युवा यह सुनकर उस नगर को ही चल दिया जाकर देखा तो एक अति स्वच्छ स्थान को पाया, शीतल छाया युक्त पाकड़ का वृक्ष लगा हुआ है, दो फूँस की झोपड़ियाँ पड़ी हुई हैं, आँगन में केले के वृक्ष लहरा रहे हैं, अनेक छोटे २ पुष्प-वृक्ष और लताओं से सुशोभित एक चबूतरा बना हुआ है, उस पर चटाई बिछाये बुढ़िया की कन्या स्वच्छ और सादे वस्त्र पहने चरखा चला रही है, फूँस की झोपड़ियाँ हैं, परन्तु लिपी पुती स्वच्छ पड़ी हैं सामान ठीक ठिकाने धरा है, एक आले में रामायणादि दो चार पुस्तकें कपड़े में लिपटी धरी हैं बुढ़िया मार्ग के समीप वाली झोपड़ी में पानी पिला रही है, घर में और घर के आस पास कूड़े का एक तिनका या सूखा पत्ता तक नहीं है, छोटी २ क्यारियों में धनियाँ, पोदीना, पालक आदि बोया हुआ है।

तुलसी वृक्ष शोभित होरहे हैं। युवा ज्यों ही जाकर उस स्थान में खड़ा हुआ तो स्थान की स्वच्छता को देखते ही और उस स्थान की शीतल मन्द सुगन्ध वायु के लगते ही युवा का सारा मार्ग-श्रम दूर होगया। पिलखन की घनी छाया में चबूतरा बना हुआ था उस पर चटाई पड़ी थी, युवा वहाँ विराज गया। बुढ़िया ने अतिथि से कुशल मङ्गल पूछने के उपरान्त भोजन का प्रश्न किया, तो युवा ने कहा कि माई! मैं तुझ ग़रीबिनी का भोजन तो नहीं करूँगा हाँ यदि तू अपनी कन्या से मेरे लिये इन सवा सेर धानों से छत्तीस प्रकार का भोजन बनवा सके तो बनवा दे, बुढ़िया ने प्रथम तो गम्भीरता पूर्वक युवा के मुख की ओर देखा और फिर अपनी पुत्री को बुलाया और साधु के मनोवांछित भोजन के बनाने की आज्ञा दी, कन्या ने नीची निगाह किये हुए ही युवा के हाथ से धान की पोटली ली और जाकर ओखली में धान डाल दिये इधर धान कूटे उधर चूल्हा जलाकर युवा के पाँव धोने को गरम पानी कर दिया गरम-जल से पाँव धोते ही मार्ग का सारा श्रम उतर गया। कन्या ने धान कूट कर छाज से भूसी फटकी, और अपनी माता को दी माता तो भूसी लेकर बाजार में गई और कन्या ने चावलों को छर कर, किरी कामू अलग करा माता बरतन पकाने के लिये कुम्हार के हाथ भूसी बेचकर लकड़ियाँ और मिट्टी के अलुए ले आई। कन्या ने चूल्हा गरम कर चावल चढ़ा दिये और माता को किरी कामू बेचने को दिया जिसे बकरी के लिये बनिये ने लेकर खटाई और नमक मिर्च हींग जीरा आदि मसाला तथा शकर बुढ़िया को दे दी। इधर कन्या ने भात पका लिया पके चावलों का माड़ उतार कर कोरे प्यालों में डाल दिया एक में शकर और दूसरे में हींग मिर्च आदि मसाला और

नमक खटाई का छोंक लगा दिया, और चूल्हे के बुझे कोयलों को लेकर बुढ़िया सुनार की दूकान पर गई और बेचकर दही और इलायची पान ले आई। इधर कन्या ने मीठे मांड़ का प्याला युवा को दिया। शीतल मांड़ को पीते ही युवा की रुचि भी बढ़ी और मार्ग की गर्मी और खेद को वह भूल गया। अब दही मीठा और नमक खटाई मसाले की चटनी आदि सब सामान केले के सुन्दर चिकने हरे पत्ते पर परोस कर अतिथि महाशय को भोजन के लिये चौके में बैठाया। थोड़ा २ भात परोसना प्रारम्भ किया जब युवा खा चुका तब उसे नमकीन मांड़ का प्याला दिया जिसे खाकर युवा का चित्त प्रफुल्लित हो गया। यह प्याला क्या था हाजमे का चूरन था। अब युवा के हाथ मुख धुवाय पान इलायची दी, जिसे लेकर वह तृप्त हो गया, और भोजन से ऐसा तृप्त हुआ मानो छत्तीस प्रकार के भोजन करे हों। यदि रुचि के अनुसार भर पेट भोजन मिल जाय तो फिर छत्तीस प्रकार के भोजन तो क्या अमृत को भी चित्त नहीं चाहता। पस यही कारण था कि युवा की पूर्ण तृप्ति हो गई। और वह सघन शीतल छाया के नीचे बने चबू-तरे पर लेटते ही सो गया। तीसरे पहर उठा तो बुढ़िया की कन्या के विवाह के विषय में पूछा तो ज्ञात हुआ कि कन्या को अभी तक कोई सुयोग्य वर नहीं मिला है सुयोग्य वर दहेज में धन माँगते हैं और बुढ़िया पर कन्या-रत्न के अति-रिक्त कुछ नहीं है। युवा को यह जानकर दहेज के लोभी वरों पर बड़ी घृणा और शोक हुआ और उसने बुढ़िया से कहा कि मैं तेरी कन्या के लिये सुयोग्य वर बताता हूँ तू जाकर अमुक नगर में अमुक नाम वाले शिक्षित और धनी युवा को देख आना वह अवश्य ही बिना दहेज के तेरी कन्या को विवाह

लेगा और सादर सुखपूर्वक रक्खेगा। बुढ़िया यह सुनकर प्रसन्न हुई और युवा चल दिया। बुढ़िया ने दो चर दिन उपरांत उस युवा के बताये पते पर जाकर वर को देखा तो उसी युवा को पाया, परन्तु वेष साधुओं का सा नहीं था। धनाढ्य सेठों का सा था। बुढ़िया देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और आनंद पूर्वक अपनी कन्या का विवाह इस धनाढ्य के साथ कर दिया।

शिक्षा

जो चतुर स्त्रियाँ हैं वे साधारण सामग्री से भी ऐसा उत्तम भोजन सिद्ध कर सकती हैं कि छत्तीस प्रकार के व्यञ्जनों का स्वाद आये, और फूहर को सब उत्तम सामग्री दे दो तब भी बिगाड़ कर रख देगी, जो स्त्री भोजन नहीं बना सकती वह गृहस्थी में सुख नहीं दे सकती, कन्याओं को उचित है कि गृहस्थी के काम काज भली भाँति सीखें। त्योनारी की सब क़दर करते हैं आलसन त्योनारी नहीं हो सकती इसलिये आलस्य न करे और गृहस्थी में सब चीज़ काम आ जाती है इसलिये किसी पदार्थ को व्यर्थ जानकर फेंक न दे।

मिथ्या मनोरथ

एक जुलाहे ने पैंठ में शरदा तरबूज़ देखकर पूछा यह क्या है? बेचनेवाले ने उसे मूर्खसमझ कर कहा कि यह उड़न घोड़े का अण्डा है। जुलाहे ने पूछा बच्चा कब निकलेगा? दूकानदार ने कहा आज कल में अण्डा फूटने ही वाला है जुलाहे ने दूकानदार का मुँह माँगा मूल्य देकर तरबूज़ ले लिया और मन में बड़ी २ कल्पनायें करता हुआ चला। कभी सोचता कि अब तो मैं मिनटों में बाज़ार जाकर लौट आया करूँगा और

मिनटों में कभी इस रिश्तेदारी में जाऊँगा कभी उसमें जाऊँगा। कभी २ सैर करने जाया करूँगा फिर तो सब जुलाहों का चौधरी हो जाऊँगा मुझे सब लोग आदर देंगे और अब तो हर साल हज को जाया करूँगा जरा एड़ लगाई और घोड़ा उड़ा और मक्के मदीने पहुँच गया और जरा देर में लौट आया करूँगा। और जुमे की नमाज तो दिल्ली की मस्जिद में ही पढ़ा करूँगा। इस प्रकार मिथ्या मनोरथों के झूले में झूलता हुआ जुलाहा अपने गाँव के पास पहुँचा ही था कि उसे शौच जाने की आवश्यकता हुई। वहीं पास में एक तालाब के किनारे अपनी गठरी और तरबूज को रखकर शौच के लिये दूर जा बैठा। तरबूज उसने तालाब के किनारे ऊँचे खेत की मेड़ पर रखा था। तरबूज की गंध पाकर एक लोमड़ी बिल से निकली। जुलाहे ने जो दूर से देखा तो समझा कि अण्डे से बच्चा निकला है फौरन दौड़ा उसे देखकर लोमड़ी जो भागी तो उसके चलने से तरबूज नीचे गिरकर टूट गया। जुलाहे ने लोमड़ी का पीछा किया परन्तु वह कहाँ हाथ आवे जरा देर में हवा हो गई। अब जुलाहा रोता पीटता उदास मन घर को चला। घर आया तो उसकी स्त्री ने शोक का कारण पूछा। जुलाहे ने अण्डे और बच्चे का सब वृत्तान्त सुनाया तो जुलाही ने शोक किया, और फिर बोली "अगर वह बच्चा आ जाता तो उसी पर चढ़कर ताना तना करती बड़ी जल्दी ताना पूरा हो जाया करता दौड़ इस खूँटे पर आती दौड़ उस खूँटे पर जाती" यह सुन जुलाहा झुंझला उठा और ले डण्डा जुलाही पर दौड़ा और कहने लगा "तू इस तरह बच्चे को थका कर मार ही डालती" जुलाही खूब पिटी और रात भर रोती रही जुलाहा भी भूखा प्यासा रहा।

शिक्षा

मिथ्या आशाय कर लेने से और फिर उनकी पूर्ति न होने से बड़ा दुःख होता है। मनुष्य रात दिन कल्पनाओं के क़िले बनाता है और वे क़िले नष्ट होजाते हैं। मिथ्या मनोरथों को बांध कर दुःख उठाना मूर्खता है।

शीलवती

किसी धनवान की कन्या बड़ी रूपवती थी, किन्तु उस के रूप से उत्तम उसका शील था। विदुषी, बुद्धिमती, सब शुभ गुणों से युक्त उस कन्या की जो प्रशंसा सुनता उसके भावी वर के भाग्य को सराहता था। एक दिन सेठ के गृह पर कोई युवा ब्रह्मचारी भिक्षा के लिये पधारा तो शीलवती ने ही उसे भिक्षा दी। ब्रह्मचारी ने भिक्षा तो पात्र में ले ली परन्तु शीलवती के रूप को नेत्र में लिया, और उस मोहनी-मूर्ति के देखते ही ब्रह्मचारी का मन काम-बाण से विद्ध होकर शील-वती के चरणों में चला गया। ब्रह्मचारो आश्रम को तो लौट आया परन्तु शतप्रयत्न करने पर भी उसका मन न लौट। लाचार ब्रह्मचारी फिर सेठ की ड्योढ़ी पर पहुँचा, फिर शीलवती से भेंट हुई, शीलवती ने उसकी आँखों से उसके मन का भेद जान लिया और पतित होते हुए व्रती की रक्षा का ध्यान उसे आया। तब वह ब्रह्मचारी से उसका सब रहस्य अनेक प्रश्नों द्वारा खोलने लगी। जब ब्रह्मचारी ने स्पष्टतया अपने मन का भेद बता दिया, तब शीलवती ने कहा कि भगवत् जिस रूप के लिये आप दीवाने होरहे हैं वह आपके समर्पण हो सकता है आप धैर्य्य धरिये और अबसे सातवें दिन पधारिये। ब्रह्मचारी

आश्रम को लौट आया और बेचैनी के साथ पल २ बिताने लगा। इधर शीलवती ने रेचक औषधों का सेवन करना प्रारम्भ किया। और दो तीन बार के विरेचन (जुलाब) से शीलवती सूख कर काँटा हो गई। चेहरा मुरझाये हुये फूल सा हो गया। दोनों कपोलों की लालिमा कालिमा में परिवर्तित होगई। शीलवती ने विरेचित मल को जो कि रंगे हुए कूँडों में भरा हुआ था सुन्दर रङ्गीन कपड़ों से ढकवा रक्खा था। जब नियत समय पर ब्रह्मचारी जी पधारे तो शीलवती ने अपने कमरे में बुलाया, परन्तु ब्रह्मचारी जी शीलवती को देख कर पहचान भी न पाये और बोले कि देवी कहाँ है? शीलवती ने कहा भगवन् मैं ही सेविका हूँ कहिये अब क्या कामना है। ब्रह्मचारी जी उदास हो विचार में पड़ गये कि "वह अद्भुत रूप-राशि कहाँ गई, वह गुलाब सा चेहरा क्या हुआ, वह माधुर्य वह लावण्य कहाँ लोप हो गया, वह लहलही कोमल, कमनीय लता कहाँ और यह सूखी बेल कहाँ" ब्रह्मचारी जी को चिन्ता-मग्न देखकर देवी ने कहा तपोनिधे! जिस प्राकृत दृश्य के आप पतङ्ग बने हैं वह भी मौजूद है" यह कह कर शीलवती ने टहलनी से कहा कि उन कूँडों के पास ब्रह्मचारी जी को ले जाओ। सेविका ने "जो आज्ञा" कह कर ब्रह्मचारी जी को मल के भरे कूँडे के समीप जा खड़ा किया। कूँडे पर से चादर उतारते ही ब्रह्मचारी जी घृणा से मुँह फेर थूकते पीछे हट गये; और शीलवती के समीप जा कर कहा कि तुम को ऐसा हास्य उचित नहीं। देवी ने कहा "दयानिधे! यह हास्य नहीं किन्तु यथार्थ है जिस चमक दमक पर आप रीझे थे, वह इस मल के शरीर में से निकलते ही तो दूर हुई है, शरीर और आत्मा मैं यहाँ हूँ, और यह शरीर इस ही मल से

पूर्ण था, तब आप इस पर रीझते थे अब आप पहचानते भी नहीं महात्मन् सूक्ष्म दृष्टि से देखो, और विचारो, तुम अपने अमूल्य तप को, ब्रह्म से मिलाने वाले ब्रह्मचर्य को वर्षों की कमाई को इस मलिनता पर नष्ट करे देते थे। अपनी आचरण की पवित्र चादर को इसी मल में डुबाने के लिये तैयार थे।" ब्रह्मचारी इन विज्ञानमय वचनों को सुनते ही सन्न रह गया। उसका शरीर डण्डे के समान देवी के चरणों पर गिर पड़ा उसका मन पश्चात्ताप की अग्नि में तप कर मानसिक पाप की मलिनता को दूर कर निर्मल होने लगा। देवी ने ब्रह्मचारी को उठाया और बोली "भ्रातः उठो तुम अब शोक मत करो तुम नरक की नदी के किनारे पर खड़े तो डूबने को थे, परन्तु विश्वनाथ की दया से बच गये हो। अब जाओ और अखण्ड ब्रह्मचारी रह कर सौन्दर्य्य के धाम, प्रकाश के, पुञ्ज, परम रमणीय, सर्वथा कमनीय, आनन्दघन ब्रह्म को प्राप्त करो।" ब्रह्मचारी शीलवती के चरणों की वन्दना कर वन को सिधारा और शीलवती के उपदेश को हृदय में धारण कर तप में लग गया।

शिक्षा

जो शीलवती हैं वे अपना शील नहीं छोड़तीं किन्तु दूसरे दुःशीलों को भी सुमार्ग पर लगा देती हैं यदि देवियाँ विदुषी हों वेदादि सत्य शास्त्रों को समझ कर पढ़ी हों तो अपने उपदेश के प्रभाव से पापी से पापी का भी सुधार कर सकती हैं।

आर्य्य का स्वप्न

एक दिन एक आर्य जाट एक मौलवी और एक पादरी साथ २ किसी नगर में गये और सराय में ठहरे। भोजन के लिये तीनों ने यह निर्णय किया कि रस की खीर तथा दाल रोटी वना ली जाये, इसके प्रवन्ध के लिये जाट को नियुक्त किया और मौलवी पादरी दोनों आराम से लेट गये। जाट गरमी में थका माँदा भोजन वनाने लगा। जव जाट ने भोजन वना लिया तव मौलवी पादरी साहिव भी आ डटे; तीनों ने भोजन किया मौलवी साहिव और पादरी साहिव ने कहा कि चौधरी! खीर थोड़ी २ ही परोसना और तुम भी थोड़ी सी ही खाना क्योंकि प्रातःकाल ठण्डी खीर खाने में अच्छी लगेगी जाट ने कहा अच्छी वात है। मौलवी और पादरी साहिव ने खूव पेट भर खाया परन्तु जाट से रोटी करके गरमी और खुश्की के कारण प्यास के मारे भली भाँति नहीं खाया गया केवल दो एक रोटी खाई गईं और दो लोटे भर पानी पी लिया। अव जो खीर वची सो उटाकर रख दी गई और तीनों लेट रहे मौलवी और पादरी साहिव तो थे वड़े चालाक उन्हों ने सलाह करी कि इस खीर को किसी हिकमत से हम ही खायें और जाट को भूखों मारें। यह सोचकर मौलवी साहिव वोले कि चौधरी कितनी खीर वचाई? चौधरी ने कहा कि एक आदमी पेट भर खा सकता है। मौलवी साहिव वोले फिर आदमी तो तीन हैं, इसलिये ऐसा होना चाहिये कि रात्रि में जिसे अच्छा ख़्वाव दीखे वही सुवह खीर खाने का हक़दार ठहरे और दूसरे सत्र से काम लें। मौलवी साहिव की पादरी साहिव ने ताईद करी क्योंकि दोनों यह समझते थे कि हम

अह [illegible] स्वप्न गढ़ लेंगे और जाट मूर्ख है इस [illegible] । जाट से दोनों ने पूछा कि चौधरी तुम्हें भी यह शर्त मंजूर है या नहीं ? जाट ने कहा कि जब दो की एक राय है तो मैं अकेला कैसे मना कर सकता हूँ। इस के बाद तीनो सो गये। मौलवी पादरी तो ठूँस २ कर पेट भर चुके थे इसलिये पड़ते ही मरे के समान होगये, परन्तु चौधरी से भली भाँति खाया न गया था अब उसे भूख लगी और इधर इन चालाक आदमियों की चालाकी का जवाब भी देना था, इसलिये उसे नींद न आई आधी रात को उठकर खीर उतारी और नारायण का नाम लेकर सब का भोग लगा गया और खीर की हंडिया में हाथ मुँह धोकर ज्यों का त्यों उसे ढक कर रख दिया। और निश्चिन्त होकर सो गया। प्रातःकाल मौलवी और पादरी जागे और शौच से निवृत्त हो हाथ मुँह धो आ बैठे। परन्तु जाट राम की अभी नींद ही न खुली थी मौलवी और पादरी के मुँह में खीर को याद कर २ के पानी भरा आता था दोनों यही सोच रहे थे कि हम ही खायेंगे। आखिर अधीर होकर मौलवी साहिब ने जाट को जगाया। जाट अँगड़ाई लेता हुआ उठा तो एक दम मौलवी और पादरी साहिब ने कहा कि खीर लाओ जाट बोला कि साहिब! पहले मुझे दिशा जङ्गल से निवट कर हाथ मुँह तो धो लेने दो, परन्तु मौलवी पादरी न माने, तब जाट ने कहा कि अच्छा पहले अपना सुपना तो सुनाओ तब खीर को माँगना। यह सुन प्रथम मौलवी साहिब कहने लगे।

मौलवी साहिब—सुनिये अल्लाह ताला की शान है कि उसने मुसलमानों के लिये अपने फ़ज़ले करम के दरिया बहा दिये हैं उसका रहमत और उसके तोफ़े हम मुसलमानों को ही

अता होते हैं जबही मैं सोया कि फ़ौरन ही फ़रिश्ता अस्मान से उतरा और मुझे उठा कर बोला कि चलो तुम को खुदा ने बुलाया है मैं उसके साथ दुलदुल पर बैठ कर चल दिया, बस वहाँ पहुँचते ही क्या देखता हूँ कि मेज़ लगी हुई है और तरह२ के खाने और मेवे और जरदा पुलाव वगैरा बहिश्ती शराब की बोतलें रखी हुई हैं मुझेदेखते ही फरिश्तों ने उठाकर मेरा इस्ताक़-बाल किया और बोले कि तेरी नमाज़ और रोजे से खुदा बहुत खुश है इसीलिये तेरी दावत की है, आखिर दस्तरख्वान (भोजन का थाल) पर मैं बिस्मिल्लाह कर बैठ गया, और हस्बमन्शा चीजें पेट भर खाई। जाट बोला "तब तो आपका पेट भर रहा होगा" अब पादरी साहिब का नम्बर आया तो वह कहने लगे "खुदा की शान है कि हमारे खुदावन्द खुदा ईसू ने हमारे लिये बहिश्त का दरवाज़ा खोल रक्खा है। जब मेरी आंख झपकी देखता क्या हूँ कि फ़रिश्ता पास खड़ा कह रहा है "उठ तुझे खुदा के इकलौते बेटे ईसू ने बुलाया है" मैं फ़रिश्ते को जवाब भी न देने पाया था कि आसमान पर उठा लिया गया। वहां देखता क्या हूँ कि हमारा खुदावन्द ईसू शान के साथ खुदा के दायें हाथ सिंहासन पर बैठा है मैं ने जाकर सामने सर झुका कर घुटने टेके। फिर खुदावन्द ईसू ने मेरे हाथ पकड़ कर उठा लिया और प्यार के साथ कहा "ऐ नेक पादरी हम तुझसे बहुत खुश हैं तूने अपनी चालाकी और होशियारी से बहुत से भंगियों को ईसाई बनाया है। आ मेरे साथ बैठ और बहिश्ती दावत खा" बस यह कह कर मुझे फरिश्तों के साथ मेज़ पर बहिश्ती खाने परोसे गये और अंडे मछली, शराब, चाय, बिस्कुट, डबल रोटी, मक्खन वगैरा जी भर कर खाया" जाट यह सुन कर बोला "तो पादरी साहिब

आपको तो आज भी भूख न लगेगी" अब जाट की बारी आई तो उसने अपना सुपना इस प्रकार प्रारम्भ किया "मेरी आंख ज्यों ही लगी त्यों ही देखता क्या हूँ कि कोई मुझे उठा कर यह कहता है कि खीर खा ले। मैंने कहा कि मैं नहीं खाऊँगा तब उसने मेरे एक घूंसा जोर से मारा और कहा "खा खीर" मैंने कहा कि मैं खीर नहीं खाऊँगा क्योंकि रात में सुपना देख कर खीर खाने की ठहरी है। परन्तु मैं ज्यों २ नहीं करता था त्यों २ वह मेरे लात घूंसे मारता था यहां तक मारा कि सारी देह चूर २ होरही है।" यह सुन मौलवी पादरी साहिब बोले "तू काफ़िर है तुझे अच्छा ख्वाब कैसे दीखता" जाट फिर कहने लगा कि मैं बार २ नहीं करता था और वह कहता था कि "खा खीर" जब मैंने पूछा तू कौन है? उसने कहा मैं ईश्वर हूँ मैंने तब खीर उतार कर सामने रक्खी, मौलवी पादरी बोले तूने हमें क्यों न उठाया। जाट बोला मैं तो बहुतेरा ज़िल्लाया रोया मगर तुम तो आस्मान पर बैठे दावत उड़ा रहे थे मेरी किस तरह सुनते। आख़िर मैंने खीर खा ली। मौलवी पादरी बोले कि अच्छा अब खीर लाओ क्योंकि हमने अच्छा ख्वाब देखा है। जाट ने कहा बहुत अच्छा लीजिये, और हाँडी लेकर सामने रख दी मौलवी साहिब ढकना उघाड़ देखते हैं तो उसमें केवल जूठा पानी भरा है बोले कि चौधरी! यह क्या हुआ? इसमें की खीर कहां गई। जाट बोला कि मैंने तुमको सुनाया नहीं कि मैंने खीर खाई है मौलवी पादरी बोले कि वह तो ख्वाब की बात है सच थोड़े ही है। जाट बोला कि भाई जिनका मज़हब झूठा होता है उन्हें झूठे सुपने दीखते हैं मेरा वैदिकधर्म तो सच्चा है फिर भला झूठा सुपना क्यों देखता। जिस तरह तुम्हारा खुदा कल्पित और आकाशी

(शून्य) है इसी प्रकार तुम्हारी दावत भी कल्पित और आकाशी है मेरा प्रभु तो वास्तविक घट २ व्यापक अन्तर्यामी है इस लिये मेरा खीर खाना भी यथार्थ ही हुआ। मेरे प्रभु ने मुझे बुद्धि प्रदान करी और तुम्हारी चालाकी से सावधान किया और मुझे प्रेरणा करी कि उठ और स्वार्थियों के चक्कर से बच और "खा खीर" यह सुन मौलवी पादरी शोकित और उदास होगये। जाट ने मुस्करा कर कहा कि भाई उदास क्यों होते हो तुम्हारा तो पेट भरा होगा, क्योंकि अल्लाह मियाँ के घर रात भर दावत खाई है। मौलवी पादरी लज्जित हो चुप होगये।

शिक्षा

यह मत मतान्तर केवल कल्पनाओं के फन्दे हैं। कोई बहिश्त में हूर गुलमा मिलने की आशा दिलाता है कोई ईसा मसीह के पास मौज मारने की उमीद दिलाता है। कोई कहता है कि मुहम्मद साहिब मुसलमानों की शिफारिस करेंगे तो कोई यह आशा बँधा रहा है कि ईसूमसीह तुम्हारे सब पापों को लेकर शूली पर चढ़ गया है। मगर भाइयो! यह सब झूठी आशायें हैं। मतवाले! अपने चंगुल में फँसाने के लिये आशायें और भय दिला २ कर अपना मतलब साध रहे हैं। अच्छे वह हैं कि जो इन कल्पित आशाओं का भरोसा न करके पुरुपार्थ करते हैं। कल्पित आशाओं की दावत खाकर भूखे रहोगे और पुरुपार्थ की खीर से सचमुच ख़ीर मिलेगी। मतवाले भूखे अर्थात् अशान्त रहेंगे। और शुभ कर्म करने वाले पुरुपार्थी खीर अर्थात् शान्ति मुक्ति का भोग करेंगे। क्योंकि मतवाले दूसरों के टिकट से पार जाना चाहते हैं और दूसरों

के भरोसे रहने की शिक्षा देते हैं परन्तु वैदिकधर्म अपने टिकट से तरने और अपने कर्म पर विश्वास करना सिखाता है।

मजहबी घड़े

किसी सेठ ने एक कुआं इस प्रयोजन से बनवाया कि सब लोग बिना रोक टोक इससे पानी भरें और पियें जिसके पास लोटा डोर हो और लोटा स्वच्छ हो वह पानी भरने का अधिकारी हो। देश और रङ्ग रूप का विचार न करके सेठ ने तो सबके लिये समानाधिकार दे दिया परन्तु कुछ स्वार्थी लोग कुएँ पर बैठ गये और पियासुओं को पानी भर २ कर स्वयं पिलाने लगे और आलसी लोग उसही पानी को पीकर चलने लगे और धीरे २ सबने लोटा डोर साथ रखना छोड़ दिया। जब कुछ और पक्के स्वार्थियों ने यह दशा देखी तो आकर कुएँ को ही ढाँप दिया और अपना घड़ा लेकर बैठ गये। पहले पानी पिलाने वाले तो यह कहते थे कि हम कुएँ से खेंच कर पिलाते हैं मगर इन छली स्वार्थियों ने कहा कि नहीं यहाँ कोई कुआँ नहीं है हम तो मानसरोवर के स्वच्छ जल को लाते हैं हमारा जल सर्वोपरि है इस प्रकार जल को बेचने लगे एक को देख कर दूसरा भी यही करने लगा। अब तो दसियों दूकानें खुल गईं और अपने २ नाम दूकानों पर लिखकर लगा दिये। पानी में रङ्गते और तरह २ खट्टे मीठे रस मिलाकर दूकानदार बेचने लगे और हर एक दुकानदार एक दूसरे के जल को बुरा बताते थे, और आपस में लड़ते थे, इस गड़बड़ में प्यासे लोग भटक गये और निर्मल स्वच्छ जल से वंचित होगये। यह समाचार जब सेठ को पहुँचा तो उसने एक ईमानदार

अपने सेवक को भेजा जिसने आकर उस कुएँ को खोला उस पर जो तख्ते स्वार्थिओं ने डाल रक्खे थे दूर कर दिये और सब दूकानदारों के घड़े तोड़ २ कर फेंक दिये और पिपासुओं (प्यासों) को बताया कि जल तो इन्होंने इस कुएँ का लिया है परन्तु अपने रङ्ग और खट्टे मीठे रस मिलाकर जल को बदल दिया है और सड़ाकर इस की निर्मलता और प्राकृत मधुरता को खो दिया है। लो आवो जिसके पास लोटा डोरी हो वह इस कुएँ से भरो और पियो और जो लोग असमर्थ हैं उन्हें दूसरे लोग पिलायेंगे। ऐसी व्यवस्था जब सेठ के कर्मचारी ने करी तब पिपासुओं को तो अच्छा लगा और वे बार बार सेठ की दया और कर्मचारी की कुशलताका धन्यवाद करने लगे, परतु दूकानदार दाँत पीस २ कर सेठ के सेवक पर कुड़कुड़ाने लगे।

शिक्षा

ईश्वर ने वेद रूपी कूप आदि सृष्टि में इसीलिये दिया कि ज्ञान की प्यास रखनेवाले इससे अपनी प्यास बुझावें जिनके पास पुरुषार्थ की डोरी और बुद्धि का पात्र हो वह वेद पढ़ने का अधिकारी हो, परन्तु ब्राह्मणों ने औरों का वेद पढ़ने में आलसी देखकर वेद में से स्तुति आदि शास्त्र जो घड़े रूप थे उनसे जल पिलाना प्रारम्भ किया और वेद के प्रति श्रद्धा भक्ति कृतज्ञता दिखाते रहे वेद कूप में बन्द तो नहीं किया परन्तु उस पर औरों का चढ़ना रोक दिया अर्थात् वेदों को पढ़ने न दिया। मुहम्मद, ईसा, मूसा आदि ने इसी वेद से ज्ञान लेकर अपनी २ दूकानें खड़ी कर लीं अपना नाम और अपने स्वार्थ की बातें संग में मिलाकर निर्मल ज्ञान को मलीन कर दिया। मजहबी दूकानदार एक दूसरे के मत को बुरा

कहने और लड़ने लगे, तब ईश्वर की दया से दयानन्द स्वामी का जन्म हुआ उन्होंने वेद को प्रकाशित किया और सम्प्रदायी भागवत आदि ग्रन्थ जिन्होंने वेदों को ढाँप रक्खा था उन्हें दूर किया और मज़हब रूपी घड़ों का खण्डन कर दिया और बताया कि जिसे बुद्धि हो जो पुरुषार्थी हो वह वेदों के पढ़ने का अधिकारी है और जो लोग पढ़ने में असमर्थ हैं वे दूसरोंसे सुनें। इस समय ईश्वर की दया औरस्वामी दयानन्द के पुरुषार्थ ज्ञान जल से भरे वेद रूप कूप सबके लिये खुला है संसार भर के लोग अपनी आध्यात्मिक प्यास इससे बुझा सकते हैं।

गंगा स्नान

गंगा स्नान का पर्व समीप था, लोग गंगा स्नान की तैयारी में लगे थे, स्त्रियाँ खाने को शक्करपारे मठरी और लड्डू बना रहीं थीं, सब लोग स्नान के लिये व्यग्र हो रहे थे, यह देख श्री पार्वतीजी शंकर जी से बोलीं कि—महाराज! सब प्रजा तो गङ्गा स्नान का पुण्य लेने जा रही है आप क्यों नहीं इस पुण्य पर्व पर गंगा स्नान को चलते, शंकर जी ने कहा कि पार्वती! यह लोग तो संसारी बुद्धि वाले हैं परन्तु तुम बुद्धिमती होकर भी ऐसी बातें करती हो। जो ज्ञानी हैं वे आत्म रूपी नदी में स्नान करते हैं इसी घट में चौंसठ तीर्थ हैं। फिर कहाँ जायें शास्त्र कहते हैं कि—आत्मा नदी रूप है, जिसमें संयम (अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्य, अपरिग्रह, यह पाँच यम और शौच सन्तोष, तप, वेद और उपनिषदों का पाठ, ईश्वर में आत्म-समर्पण इन सब का पालन करना संयम है। रूप पवित्र घाट है सत्य रूप जल है, शील रूप किनारे हैं, दया रूप लहरें उठती हैं हे पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिर! उस अध्यात्मिक विद्या रूप गंगा में स्नान कर क्योंकि अन्तःकरण जल से शुद्ध नहीं होता।

यह सुन पार्वती बोलीं, महाराज ! यह सब लोग क्या पागल हैं इनमें बड़े२ पण्डित और साधु महन्त सब जा रहे हैं, आप तो इसी तरह मन समझा देते हैं, और चलना फिरना नहीं चाहते। शंकर ने जब पार्वती की साधारण स्त्रियों सी बात सुनी तब मुस्कराकर कहने लगे—देवि यह सब लोग गंगा स्नान का बहाना करते हैं, पुण्य की प्रतारणता मात्र है, ये सब लोग वहाँ अपने भोग विलास और विविध कामनाओं की प्रेरणा से जा रहे हैं, और कोई रिश्तेदारों से मिलने और सगाई विवाहों की बात पक्की करने जा रहा है, कोई माल बेचने जाता है, कोई स्त्रियों को कुदृष्टि से घूरने को जा रहे हैं। रजोगुण तमोगुण के दास होकर ये लोग चले जा रहे हैं सो हे पार्वती ! तुम इन अज्ञानियों का अनुकरण व्यर्थ क्यों करती हो। इस प्रकार महादेव जी के समझाने पर भी पार्वती जी नहीं मानीं और बोलीं कि महाराज ये लोग सब ही गंगा नहाने जा रहे हैं आपके बताये काम तो घर पर भी रह कर कर सकते हैं ये धूल फाँकते जाड़े शीत में गाड़ियों के पहिये ठेलते हुए लोग भावना से ही जा रहे हैं। शंकर ने पार्वती का हठ देखकर कहा चलो तुमको परीक्षा करादें। पार्वती जी को साथ लेकर शंकर जी गंगा यात्रियों के मार्ग में जा बैठे। कोढ़ी का रूप बना लिया और पार्वती जी सुन्दर युवती बनकर सेवा में बैठ गईं। अब जो यात्री सामने से निकलते पार्वती जी उनसे रोकर प्रार्थना करतीं कि पुण्यात्मा लोगो ! मेरा पति चलने में असमर्थ है और गंगा स्नान करना चाहता है कृपा करके हम लोगों को गंगा तक पहुँचा दो। पार्वती की इस पुकार पर कोई ध्यान न देता था हाँ कोई २ धूर्त ऐसा करते थे कि दो चार हँसी की बातें पार्वती को सुना

जाते थे, कोई २ यह भी कहता था कि इस कोढ़ी के पास क्यों बैठी हो चलो हमारे साथ मेला देखना, मेला सब इसी तरह निकल गया परन्तु पर्वती की पुकार पर किसी ने करुणा के दो आँसू नहीं बहाये, पर्व दिन से एक दिन पहले पार्वती देखती क्या हैं कि एक भाग्यवान् धनी पालकी में सवार माला जपता हुआ चला आ रहा है, ज्यों ही उसके कान में पार्वती के शब्द पड़े पालकी रोक कर उतरा कोढ़ी रूपधारी महादेव की सेवा में तत्पर पार्वती को देखकर मन ही मन उनकी प्रशंसा करने लगा। अहो! माता धन्य है तुमको तुम जैसी सतियों के पुण्य प्रताप से ही स्त्री जाति सराहनीय है, आप की पतिचर्या को देखकर मेरी आँखें भी पवित्र हुई हैं। आप यहाँ मार्ग में क्यों पड़ी रोती हैं जो सेवा है मुझे बताइये पार्वती ने उससे सब हाल कहकर कहा कि यदि आप कोई प्रबन्ध इनके स्नान का कर सकें तो करें, यह सुन उस भक्त ने अपने सेवकों से कहा कि इस देवी को इसके पति सहित पालकी में चढ़ा गंगा के तीर पहुँचाओ और हमारा दुशाला इन्हें ओढ़ने को दे दो तथा इनके भोजन का प्रबन्ध अच्छी प्रकार हमारे डेरे से करा दो, और मैं पाँव २ आता हूँ तुम लोग चलो, सेठ की आज्ञा पा शंकर और पार्वती को ले पालकी वाले चले गये सेठ भी प्रसन्न मन से भगवान का गुण गान करता हुआ पाँव २ चल दिया। मार्ग में शंकर ने पार्वती से कहा देवि! देखा तुमने इन सहस्रों नर नारियों में पुण्यार्थी कौन हैं स्नान का फल किसका है, पार्वती जी ने कहा हाँ महाराज! केवल यह भक्त ही स्नान के फल का अधिकारी है।

इति दृष्टान्त-सागर तृतीय भाग।